₹ 25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

फरवरी 2019

★ ईश्वरीय ग्रंथ : पवित्र कुरआन
–अब्दुल्लाह अडियार

★ कुरआन ईश्वर का पैग़ाम आपके नाम
–संपादन प्रभाग

★ लड़खड़ाता लोकतंत्र और बेबस जनता
–डॉ॰ सैयद अब्दुल वारी

★ ग़रीबी, भुखमरी दूर करने के उपाय
–मुहैल आबिदीन

IQRA

INTERNATIONAL SCHOOL & JUNIOR COLLEGE

English Medium CBSE Pattern
Pre Nursery To XII

A Government Recognized
English Medium School - Approval
From Pre-Primary To XII

ADMISSIONS OPEN FOR Pre Nursery To XI

- ✓ Air Conditioned Ambience
- ✓ Separate Computer labs for Boys & Girls
- ✓ Maximum 24-30 Students per class
- ✓ Audio Visual Mode of Teaching, CCE Pattern
- ✓ Basket Ball Ground, Badminton Court, Martial Arts, Archery, Horse Riding
- ✓ English as a Compulsory Language of Communication
- ✓ Inter School Quiz, Science Exhibition
- ✓ English, Science & Maths Olympiads, Educational Excursions
- ✓ Yearly Health Check up Camp, Sports & Annual Day Celebrations
- ✓ Scholarship for the Deserving.
- ✓ Achievements; Numerous Students got GOLD MEDALS in International Science, Maths & English Olympiads.
- ✓ Our school Stood 1st in inter school Quiz & Elocution Competition


Computer Lab



Academic Excellance


Science Exhibition


Winner of International martial arts Championship


Archery


Football Team


Annual Concert


Girls Self Defence



Competition

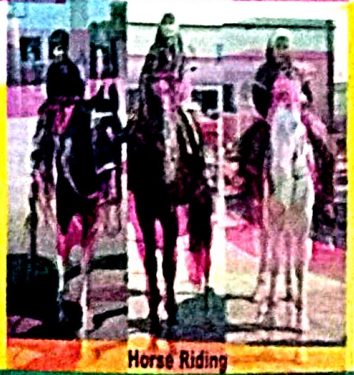
Horse Riding

APPLY FOR POSTS
V. PRINCIPAL
TEACHERS (ALL SUBJECTS)
PRO, OFFICE / ACCOUNTS STAFF

Jafar Nagar Ring Road, Gorewada Nagpur- 13

Office time: 8 am - 3 pm, e-mail: iisngp@rediffmail.com

Ph. 8446010252, 7020695367

Website: www.iqrainternationalschoolngp.org

BRANCHES : MUMBAI, HYDERABAD, BENGALURU, MANGALORE, RANCHI, CHENNAI, PUSAD

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 28 अंक 8 फ़रवरी 2019

ये किताब की आयतें हैं और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, वह सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग मान नहीं रहे हैं। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

प्रेम-भाव से हट न जाना

रे मानव ! सद्भाव-सुधा को जन-जन बीच पिलाता चल ।
सांसों के ये हीरे-मोती मिट्टी में न मिलाता चल ।।

कर अपना उपचार स्वयं ही,
बन जा तू शीतल चन्दन,
सदा सत्य-शिव-सुन्दर का ही
जीवन में कर अभिनन्दन,

स्नेहिल सुमन सदैव सहज तू जन-जन बीच खिलाता चल ।
रे मानव ! सद्भाव-सुधा को जन-जन बीच पिलाता चल ।

तू ही अपना कर सकता है
अपने से उद्धार स्वयं
प्यार सभी से कर सकता, यदि
कर अपने से प्यार स्वयं,

सबको सबसे प्यार सर्वदा देता और दिलाता चल ।
रे मानव ! सद्भाव-सुधा को जन-जन बीच पिलाता चल ।

करके माया-सागर लंघन
मिल सकती है शांति तुझे,
सदा उल्लसित किया करेगी
आत्म तत्व की कांति तुझे,

अपने ओछे अहंकार की गहरी नीव हिलाता चल ।
रे मानव ! सद्भाव-सुधा को जन-जन बीच पिलाता चल ।

प्रेम-भाष से हट न जाना
इसका रख तू ध्यान सदा,
प्रेम-बिना बकवास-व्यर्थ हैं
ज्ञान और विज्ञान सदा,

नित्यमेव 'मधुरेश' हृदय के मूर्च्छित भाव जिलाता चल ।
रे मानव ! सद्भाव-सुधा को जन-जन बीच पिलाता चल ।

● **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'**



कहां क्या है ?

प्रेम-भाव से हट न जाना	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	3
कुरआन ज्योति		5
सुकर्म करने का प्रोत्साहन (हदीस मंजरी)		6
ऐसी अभिव्यक्ति का औचित्य (संपादकीय)		7
भारतीय मुसलमानों की निर्धनता : कारण और निवारण (आपके पत्र)		11
सरवरे आलम	–कौसर आज़मी	11
शांति का प्रणेता इस्लाम (आस्था)	–संपादन प्रभाग	13
सफलता के तीन सूत्र	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	17
अभिव्यक्ति	–ओम प्रकाश बजाज	18
ग़रीबी, भुखमरी दूर करने के उपाय	–सुहैल आबिदीन	19
इस्लाम में कारोबार का महत्व	–रियाज़ फ़िरदौस	21
बेरोज़गारी का दंश	–देवेन्द्र जोशी	23
ईश्वरीय ग्रंथ : पवित्र कुरआन (विशेष आयोजन)	–अब्दुल्लाह अडियार	26-27
कुरआन ईश्वर का पैग़ाम आपके नाम	–संपादन प्रभाग	28
लो ब्लड शुगर में सावधानी (स्वास्थ्य-चर्चा)	–संपादन प्रभाग	31
हमेशा से (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज	35
साइकिल की सवारी (व्यंग्य कथा)	–सुदर्शन	37
समाज सुधार : समय की सबसे अहम ज़रूरत	–संपादन प्रभाग	41
किसान : डबल आमद या डबल आफ़त ? (पुस्तक-समीक्षा)		43
लड़खड़ाता लोकतंत्र और बेबस जनता	–डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी	45
स्वास्थ्य सुविधाओं का सवाल	–निरंकार सिंह	47
आंखों से आंसू आना भी लाभप्रद (बालवीथी)	–डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव	49

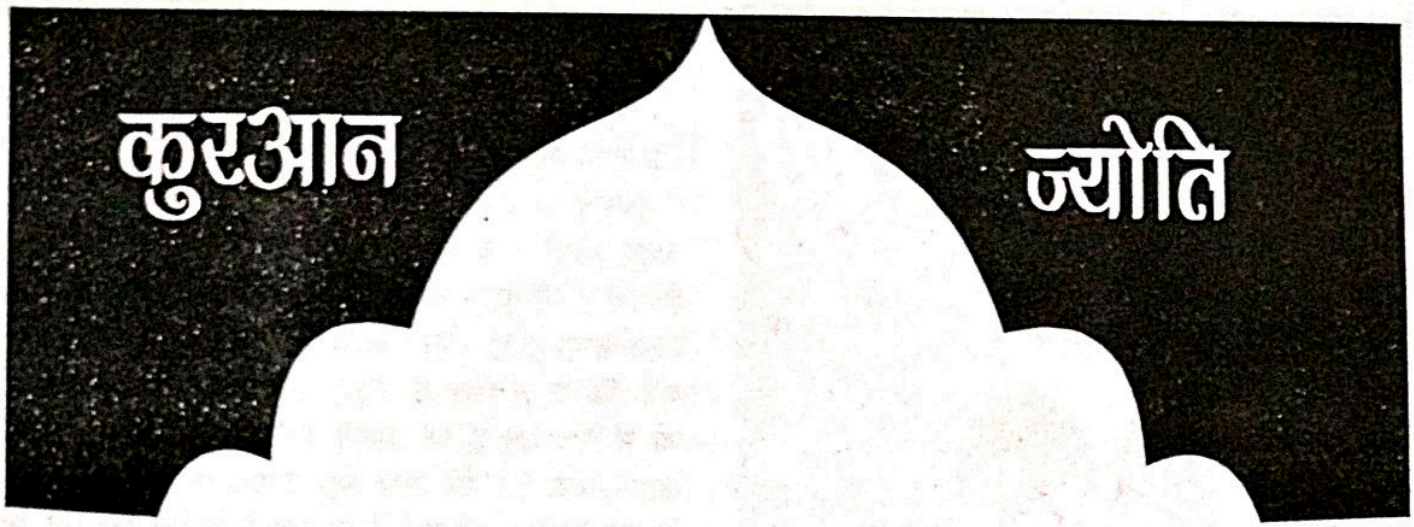

(84) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि "लोगो ! अगर तुम सही मानो में अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उस पर भरोसा करो अगर मुसलमान हो।"[81] (85) उन्होंने उत्तर दिया[82], "हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब ! हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ित्ना[83] न बना (86) और अपनी रहमत से हमको अधर्मियों से छुटकारा दिला।"

(87) और हमने मूसा और उसके भाई को इशारा किया कि "मिस्र में कुछ मकान अपनी क़ौम के लिए प्राप्त कर लो और अपने उन मकानों को क़िब्ला ठहरा लो और नमाज़ क़ायम करो[84] और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो।"[85]

–क़ुरआन, 10:84-87

---

81. स्पष्ट है कि ये शब्द किसी काफ़िर (इन्कारी) को संबोधित करके नहीं कहे जा सकते थे। हज़रत मूसा (अलैहि॰) का यह कथन साफ़ बता रहा है कि बनी इसराईल की पूरी क़ौम उस समय मुसलमान थी और हज़रत मूसा (अलैहि॰) उनको यह उपदेश दे रहे थे कि अगर तुम वास्तव में मुसलमान हो, जैसा कि तुम्हारा दावा है, तो फ़िरऔन की शक्ति से भय न खाओ, बल्कि अल्लाह की शक्ति पर भरोसा करो।

82. यह उत्तर उन नवजवानों का था जो मूसा (अलैहि॰) का साथ देने पर तैयार हुए थे। यहां 'क़ालू' (उन्होंने उत्तर दिया) से मुराद क़ौम नहीं, बल्कि ज़ुर्रियत (कुछ नवजवान) हैं जैसा कि प्रसंग बता रहा है।

83. उन सच्चे ईमान वाले नवजवानों की यह दुआ कि 'हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ित्ना न बना' बड़ा व्यापक अर्थ रखती है। पथभ्रष्टता के सामान्य रूप से छा जाने की स्थिति में जब कुछ लोग सत्य की स्थापना के लिए उठते हैं तो उन्हें विभिन्न प्रकार के ज़ालिमों का सामना करना पड़ता है और उन सत्य का आह्वान करने वालों की हर विफलता, हर मुसीबत, हर ग़लती, हर कमज़ोरी और हर कमी उन विभिन्न गिरोहों के लिए विविध रूप में फ़ित्ना बन जाती है। (और वे उसे उनके असत्य पर होने की दलील ठहराने लगते हैं।) अत: यह बड़ी ही व्यापक दुआ थी जो मूसा (अलैहि॰) के इन साथियों ने मांगी थी कि ऐ अल्लाह ! हम पर ऐसी कृपा कर कि हम ज़ालिमों के लिए 'फ़ित्ना' (आज़माइश) बनकर न रह जाएं, अर्थात हमें ग़लतियों से, कमज़ोरियों से, कमियों से बचा और हमारी कोशिश को दुनिया में परवान चढ़ा, ताकि हमारा अस्तित्व तेरे बन्दों के लिए भलाई का कारण बने, न कि ज़ालिमों के लिए दुष्टता का साधन।

84. इस आयत के अर्थ में टीकाकारों के बीच मतभेद है। उसके शब्दों पर और उस वातावरण पर, जिसमें ये शब्द कहे गये थे, विचार करने से मैं यह समझा हूं कि शायद मिस्र में सत्ता-पक्ष ने हिंसा करके और स्वयं बनी इसराईल की अपनी ईमानी कमज़ोरी की वजह से इसराईली और मिस्री मुसलमानों के यहां जमाअत से नमाज़ की व्यवस्था

(शेष पृष्ठ 12 पर)

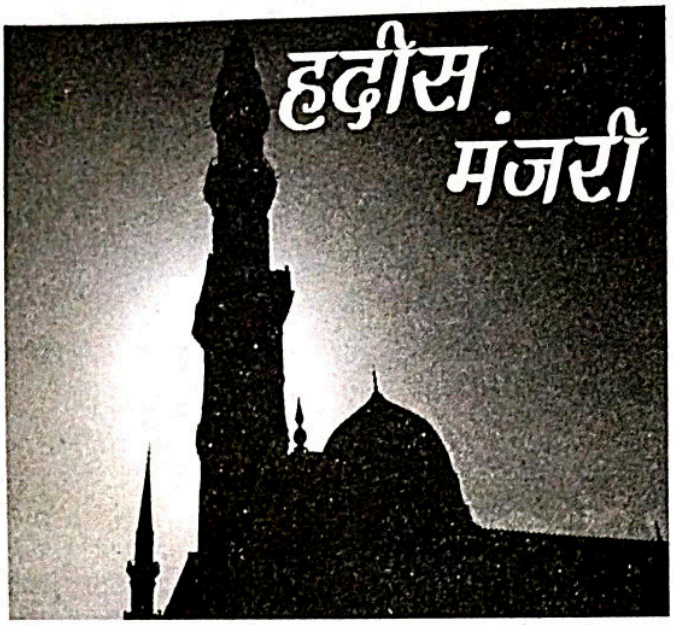

सुकर्म करने का प्रोत्साहन

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : ''अल्लाह ने उस व्यक्ति के लिए किसी उज्र की गुंजाइश नहीं छोड़ी, जिसकी आयु लंबी की यहां तक कि वह साठ वर्ष को पहुंच गया ।'' –बुख़ारी

विद्वानों ने कहा है कि इसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने उसके लिए कोई उज्र नहीं छोड़ा जिसको इतनी मुद्दत तक मोहलत दी । जब कोई व्यक्ति उज्र के सिलसिले में चरम सीमा को पहुंच जाए, तो अरबी भाषा में कहा जाता है : 'अज़्ररजुलु' ।

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि आप पर सूरा ''इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु'' के उतरने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी, जिसमें आपने यह न कहा हो : ''सुबहान-क रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्मग़्फ़िरली'' (पाक और महान है तू ऐ हमारे रब, तेरी ही प्रशंसा है ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे)। –बुख़ारी, मुस्लिम

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा (रज़ि॰) से एक रिवायत यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपने रुकूअ और सजदों में बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : ''सुबहान-क अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दि-क अल्ला-हुम्मग़्फ़िरली'' (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे ।) आप यह क़ुरआन के आदेश के अनुसरण में कहते । क़ुरआन में अल्लाह तआला ने कहा है : ''अत: तसबीह करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो ।''

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) मौत से पहले बहुत ज़्यादा यह पढ़ा करते थे : ''सुबहान-क अल्लाहुम्मा व बिहम्दि-क, अस्तग़्फ़िरुका व अतूबु इलैक'' (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, मैं तुझसे क्षमा-याचना करता हूं और तेरी सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), ये कैसे शब्द हैं जो मैं देख रही हूं कि आपने अब पढ़ने शुरू किये हैं ? आपने कहा : ''मेरे लिए मेरी उम्मत के विषय में एक निशानी निश्चित की गयी है कि जब मैं उसको देखूं, तो इन शब्दों का उच्चारण करूं । और वह निशानी है : ''इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु'' (जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो ।) सूरा के अंत तक ।''

और मुस्लिम ही की एक रिवायत में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' (पाक और महान है अल्लाह और उसी की प्रशंसा है, मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं और उसी की सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, मैं देखती हूं कि आप बहुत ज़्यादा ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' कहते रहते हैं । आपने कहा : ''मुझे मेरे रब ने यह ख़बर दी है कि मैं निकट भविष्य में अपनी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) में एक निशानी देखूंगा और जब मैं वह निशानी देखूं, तो बहुत ज़्यादा यह पढ़ूं : ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' अतएव वह निशानी मैंने देख ली, वह यह है : ''जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो मक्का पर । 'और तुम देखो कि लोग अल्लाह के दीन में दल के दल दाख़िल हो रहे हैं, तो तसबीह (गरिमागान) करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो । निश्चय ही वह ज़्यादा से ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला है ।' ('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

ऐसी अभिव्यक्ति का औचित्य

हमारा देश लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष है । व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका इसकी व्यवस्थाएं हैं । व्यवस्था क़ायम रहे, इसलिए इनकी आचार-संहिताएं हैं चाहे वे कुछ की मौखिक ही क्यों न हों । मगर यह सवाल भी सामने रहे कि इन्हें मानता कौन है ? भाजपा के केन्द्रीय सत्ता में आते ही उसके नेताओं ने हिन्दू राष्ट्र का जो राग छेड़ा था, वह दिन-प्रतिदिन तेज़ होकर अलाप की शक्ल ले चुका है । अब न्यायपालिका भी इससे अछूती नहीं रही, हालांकि देश की उच्च अदालतों के आदरणीय जजों के लिए बनी आचार संहिता में राजनीतिक बयानों से बचने की नसीहत की गयी है । फिर भी ऐसे बयान आते रहते हैं, जो आपत्तिजनक होते हैं । पिछले दिनों मेघालय हाईकोर्ट के जस्टिस सुदीप रंजन सेन ने कुछ ऐसा ही बयान दिया है, जिस पर विभिन्न प्रतिक्रियाएं आ रही हैं । उनके बयान को अवांछित माना जा रहा है । जस्टिस सेन ने पिछले दिनों एक मामले की सुनवाई के दौरान संदर्भ से हटकर अपनी एक टिप्पणी में देश को हिन्दू राष्ट्र बनाए जाने की वकालत की है । इस टिप्पणी को जज जैसे पद की गरिमा के प्रतिकूल बताया जा रहा है, जो उचित ही है, क्योंकि भारतीय संविधान इसकी अनुमति नहीं देता । जस्टिस सेन ने अपने एक आदेश में लिखा, 'आज़ादी के बाद भारत और पाकिस्तान का बंटवारा धर्म के आधार पर हुआ था । पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामिक देश घोषित किया और इसी तरह भारत को भी हिंदू राष्ट्र घोषित किया जाना चाहिए था, लेकिन यह एक धर्मनिरपेक्ष देश बना रहा ।' जस्टिस महोदय ने भारत सरकार से ऐसे विधि-विधान बनाने की अपील की है, जिसमें पाकिस्तान, म्यांमार, बंगलादेश जैसे पड़ोसी देशों में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिम समुदाय और समूह को भारत में आकर बसने की इजाज़त हो । जस्टिस सेन ने कहा कि भारत को हिंदू राष्ट्र होना चाहिए और उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से यह सुनिश्चित करने की अपील की कि देश कहीं इस्लामिक न हो जाए। जस्टिस सेन ने कहा, 'मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि कोई भारत यदि इस्लामी देश हो गया तो भारत और दुनिया में क़यामत आ जाएगी । मुझे इसका पूरा भरोसा है कि मोदीजी की सरकार मामले की गंभीरता को समझेगी और ज़रूरी क़दम उठाएगी और हमारी मुख्यमंत्री ममताजी राष्ट्रहित में हर तरह से उसका समर्थन करेंगी ।' न्यायमूर्ति सेन ने सरकार से अनुरोध किया कि वह भारत में कहीं से भी आकर बसे हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी, ईसाई, खासी, जयंतिया और गारो समुदाय के लोगों को अपना नागरिक घोषित करे ।

जस्टिस सेन ने अपनी अपील में यह भी कहा कि भविष्य में इन समुदाय के जो भी लोग भारत आएं, उन्हें भी भारतीय नागरिक माना जाए । उन्होंने यह भी कहा कि वह भारत में बसे शांतिप्रिय मुसलमानों के ख़िलाफ़ नहीं हैं । न्यायमूर्ति सेन के मुताबिक़, 'मैं अपने उन मुसलमान भाइयों और बहनों के ख़िलाफ़ नहीं हूं, जो भारत में कई पीढ़ियों से रह रहे हैं और यहां के क़ानून का पालन करते हैं । उन्हें यहां शांति से रहने दिया जाना चाहिए ।' हालांकि उन्होंने सरकार से इसे सुनिश्चित करने के लिए सभी भारतीय नागरिकों की ख़ातिर एकसमान क़ानून बनाने का अनुरोध किया, ताकि उन पर देश के क़ानून और संविधान का पालन करने की पाबंदी हो । जस्टिस सेन ने कहा, 'भारत के क़ानून और संविधान का विरोध करने वाले किसी शख़्स को भारत का नागरिक नहीं माना जा सकता । हमें नहीं भूलना चाहिए कि पहले हम भारतीय हैं और फिर अच्छे मनुष्य । जिस समुदाय से हम ताल्लुक़ रखते हैं, वह उसके बाद आता है ।' विरोधी प्रतिक्रियाओं के आने के

बाद जस्टिस सेन ने सफ़ाई दी है कि भारत का संविधान धर्म निरपेक्षता की बात करता है और देश का बंटवारा धर्म, जाति, नस्ल, समुदाय या भाषा के आधार पर नहीं होना चाहिए । उन्होंने लिखित स्पष्टीकरण में कहा है कि 'धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान के मूल स्तंभों में है और मेरे आदेश को किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ा या उसके संदर्भ में नहीं समझा जाना चाहिए ।' विचारणीय बात यह है कि इस प्रकार की टिप्पणी क्या न्यायपालिका की गरिमा के अनुकूल है ? संविधान मर्मज्ञ प्रशांत भूषण का कहना है कि इस तरह के बयानों से न्यायपालिका पर लोगों का भरोसा कम होगा । ऑल इंडिया मजलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि भारत विभिन्न संप्रदायों के लोगों से मिलकर बना एक देश है जो कभी इस्लामी राष्ट्र नहीं बनेगा । इस मुद्दे पर संविधान विशेषज्ञ एवं राजनीतिक समीक्षक अब्दुल ग़फ़ूर अब्दुल मजीद नूरानी (ए॰जी॰ नूरानी) का कहना है कि जस्टिस सेन का आदेश भारत के संविधान का उल्लंघन है । नूरानी ने कहा कि जस्टिस सेन ने 10 दिसम्बर को दिए अपने आदेश में भारत के हिंदू राष्ट्र होने का समर्थन किया था । इसके बाद उन्होंने इस पर अपनी सफ़ाई भी दी है, लेकिन उनका आदेश दो तरह से भारतीय संविधान का उल्लंघन है–पहला यह कि संविधान की प्रस्तावना में ही यह घोषणा की गयी है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है । जस्टिस सेन के सामने हमेशा ही यह रास्ता खुला है कि वो अपने पद से इस्तीफ़ा दें और उसके बाद भारत के हिंदू राष्ट्र होने का समर्थन करें । नूरानी ने कहा कि एक महत्वपूर्ण पद पर आसीन होकर (एक बेंच का हिस्सा होते हुए) जस्टिस सेन इस तरह की बात नहीं कर सकते, क्योंकि अगर वे न्यायपालिका में किसी भी पद पर काम करना स्वीकार करते हैं तो वे पहले यह शपथ लेते हैं कि वे संविधान का पालन हृदय से करेंगे । नूरानी ने दूसरा तर्क यह दिया कि उनका शपथ लेकर अपने पद पर काम करना उन्हें इस बात के लिए बाध्य करता है कि लोगों में भेदभाव न करें और सभी से समान व्यवहार करें । जज की परिभाषा के आधार पर देखें, तो अगर एक जज हिंदू राष्ट्र के हिमायती हैं, तो वे पक्षपात कर रहे हैं । वो इस तथ्य से क़तई अनजान नहीं हो सकते कि यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर भाजपा और अन्य पार्टियों में मतभेद हैं । एक तरफ़ जहां भाजपा हिंदुत्व की समर्थक है अन्य पार्टियां इसके विरुद्ध खड़ी हैं । नूरानी के अनुसार, जस्टिस सेन के विरुद्ध संसद में महाभियोग प्रस्ताव लाया जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि विशेष कर इस बात को ध्यान में रखते हुए कि जस्टिस सेन ने न तो इसके लिए सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल किया, न ही छिपे शब्दों में ऐसा कुछ कहा, बल्कि स्पष्ट रूप से अपने शब्दों में हिंदू राष्ट्र का समर्थन किया है । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) का मानना है कि यह टिप्पणी संविधान की अवधारणा के विपरीत है । दलित नेता जिग्नेश मेवाणी ने कहा कि इससे साफ़ संदेश मिल रहा है कि सिर्फ़ एक तबक़े के लोगों के लिए ही न्याय है । सच है कि जब भी हिन्दू राष्ट्र की बात कही गयी, विरोध हुआ । जब गोवा के उपमुख्यमंत्री रहे फ्रांसिस डिसूजा ने हिन्दू राष्ट्र की वकालत की, तो गंभीर विरोध हुआ, यहां तक कि उन्होंने माफ़ी मांग ली । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने 20 दिसम्बर 2014 को कोलकाता में विश्व हिंदू परिषद के एक सम्मेलन में कहा कि जवानों की जवानी जाने से पहले देश को हिंदू राष्ट्र बना दिया जाएगा । उन्होंने पाकिस्तान को भी भारत की भूमि बताया । संघ प्रमुख ने कहा कि लोगों के देखते-देखते हिंदू राष्ट्र बनाने का सपना पूरा हो जाएगा, अब इसमें ज़्यादा देर नहीं है । भगवत जी के इस बयान की भी जमकर आलोचना हुई । केवल संघ परिवारी ही मौन रहे ! यह बात सौ फ़ीसदी सच है कि भारत के भावी स्वरूप और भविष्य का निर्धारण देश की जनता को करना है । यह हथियारों के बल पर या धौंस-धांधली के बल पर संभव नहीं । होगा भी तो क्षणिक-सामयिक ही होगा ।

संविधान परिवर्तन आसान नहीं । प्रभावी जनशक्ति से ही यह संभव है । भाजपा के पास प्रभावी जनशक्ति नहीं है और आगे भी इसके आसार नहीं दीखते । आज भी राज्यसभा में उसे बहुमत प्राप्त नहीं है और न ही निकट भविष्य में रहेगा । अत: अपने फ़ैसलों के लिए वह अध्यादेशों की ओर ही अभी देखेगी । अध्यादेश

भी अल्पकालिक होते हैं । संवैधानिक दृष्टि से सरकार को ही भावी स्वरूप निर्धारित करने का अधिकार है– संवैधानिक निष्ठा की शपथ के माध्यम से शासन संभालने वाले, जिन्हें लोकसभा के प्रति जवाबदेह माना गया है । उसी संसद को जिसमें लोकसभा और राज्यसभा दोनों आती हैं, संविधान में परिवर्तन और परिवर्धन का भी अधिकार है । अब यह बाधा भी सर्वोच्च न्यायालय ने दूर कर दी है । पहले किसी खंडपीठ का यह निर्णय था कि संसद को मूल अधिकारों और संविधान के बुनियादी स्वरूप में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है । मूल अधिकारों में से जब संपत्ति का अधिकार समाप्त करने संबंधी परिवर्तन संसद ने सरकार की इच्छा से किया और बहुमत से वह पारित भी हो गया, राष्ट्रपति ने उसे स्वीकृति भी प्रदान कर दी, तब सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसे संविधानेतर नहीं माना । जब यह मान लिया गया है कि संविधान के किसी अंग को संसद द्वारा संशोधित किया जा सकता है, बाध्यता यही होगी कि यह संशोधन किसी अन्य प्रसंग में विरोधाभासी न हो या उसके विपरीत अर्थ न निकाले जाएं जिससे संविधान में एकरूपता के बजाय दोहरापन दिखाई दे । जहां तक हिंदू राष्ट्र का प्रश्न है, इसमें दोनों शब्दों को पुनर्परिभाषित करना पड़ेगा । राष्ट्र शब्द भी शासन या सत्ता का परिचायक नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी के नेशन या क़ौम का परिचायक है, इस क़ौम की पहचान जाति या धर्म नहीं है । अंग्रेज़ी शब्दकोशों के अनुसार, राष्ट्र का अर्थ है जहां एक भाषा, धर्म, संस्कृति, जीवन-पद्धति और दर्शन वाले लोग रहते हों । यूरोप 28 देशों में विभाजित है लेकिन उसे राष्ट्र माना जाता है, क्योंकि उसके अंतर्गत ये अपेक्षित समानताएं हैं । लेकिन यह बात भारत के बारे में नहीं कही जा सकती, जहां विभिन्न संस्कृतियां, जीवन दर्शन, मान्यताएं, धर्म, आस्थाएं विद्यमान हैं, जहां अलग-अलग समुदायों के लोग विभिन्नताओं के फलस्वरूप रहते हों । शासकीय दृष्टि से तो कभी म्यांमार (बर्मा) और लंका भी इस देश के अंग थे । आज भी ब्रिटेन में जिन्हें सामान्य रूप से इंडियन कहा जाता है, उनमें पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका और म्यांमार के लोग भी आते हैं । लेकिन क्या इनकी एकता संभव है ? हिंदुत्व अगर संयोजक तत्व होता तो पड़ोसी नेपाल इसका अंग होता, जिसे विश्व हिंदू परिषद के लोग भी हिंदू राष्ट्र बताते हैं । लेकिन वहां भी अब इस स्थिति में परिवर्तन आया है । भारत में मिलने के लिए न वह पहले तैयार था और न आज है । जब इस देश का विभाजन हुआ तो वह भी धर्मों पर आधारित नहीं था । ब्रिटिश संसद ने जिस विभाजन को मंज़ूरी दी थी उसका आधार यह था कि जहां मुस्लिम लीग जीती है उसे पाकिस्तान और जहां कांग्रेस जीती है उसे इंडिया या भारत मान कर अलग किया जाए । अत: यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र का अर्थ किसी धर्म या विचारधारा का देश नहीं, बल्कि वहां रहने वालों का देश, चाहे वे जिस धर्म या विचारधारा को मानते हों । अब 'हिन्दू' शब्द पर भी ग़ौर करना आवश्यक है । यह शब्द हिन्दू धार्मिक पुस्तकों में नहीं मिलता । संघ और विहिप के नेता कहते हैं कि जिसे हिंदू कोड बिल में हिंदू माना गया है वे सब हिंदू हैं । यह बात किसी की समझ में नहीं आ सकती । कोड में तो सिख भी आते हैं, बौद्ध और जैन भी आते हैं । बौद्धों को देश से बाहर करने के लिए जो अभियान कभी चला था, इतिहास में वह भी दर्ज है और दुनिया उसे जानती है । बौद्ध देश या बौद्ध समुदाय क्या हिंदू राष्ट्र बनने के लिए तैयार हैं ? बौद्धों की संख्या दुनिया में तीसरे नंबर पर है और जिन्हें हिन्दू बताते हैं उनकी चौथे नंबर पर । सिखों की भी अपनी अलग पहचान है । सच्ची बात तो यह है कि देश को हिन्दू राष्ट्र बनाया ही नहीं जा सकता । इसकी परिकल्पना में हिन्दू कहलाने वाले लोगों के लिए ही स्थान नहीं, तो अन्य धर्म के मानने वालों की बात बहुत दूर की है । देश के पूर्वोत्तर में कई राज्य ईसाई बहुल हैं, और कश्मीर का वह हिस्सा जो भारत के पास है वह मुस्लिम बहुल है । आर्य-अनार्य-द्रविड़ के साथ शैव-वैष्णव आदि मत-मतान्तर हिन्दू कहलाने वाले लोगों के बीच है । हिंदुत्व के नाम पर आज भी इनमें वास्तविक एका का अभाव ही है । अत: हिंदी राष्ट्र की बात असंगत और अव्यावहारिक लगती है । हां, नारा ज़रूर लगाया जा सकता है ।

हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''उस पर अल्लाह की रहमत हो जो बेचने, ख़रीदने और दावा करने में दयालुता से काम लेता है ।''

(बुख़ारी)

A Well Wisher

PATNA

भारतीय मुसलमानों की निर्धनता : कारण और निवारण

भारत का मुसलमान मज़लूमी, ग़रीबी, बेबसी और भुखमरी का दूसरा नाम है । मस्जिदों के सामने बुर्क़ापोश औरतों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर सीने में चर्र-सा होता है ।' पहले इक्का दुक्का और बुढ़ी भिखारीने नज़र आ जाया करती थीं । अब जवान औरतें भी खड़ी नज़र आती हैं । किसी की हाथ में बेटी की शादी का रुक्का होता है, तो किसी के हाथ में दवाख़ाने का प्रिस्क्रीप्शन । इसके अलावा ट्रैफ़िक सिग्नल्स पर, दुकानों पर मुसलमान औरतों को भीख मांगते देखने की नज़रों को अब आदत-सी हो चुकी है ।

नबी पाक (सल्ल॰) का हुक्म है चाहे जैसे हालात हो ख़ैरात को मत रोको ।' मगर मस्जिद से निकलने वाले बहुत कम लोग होते हैं, जो इन औरतों की झोली में कुछ डालते हैं । जो डालते हैं वे सिक्के डालते हैं । इन सिक्के डालने वालों को यह एहसास तक नहीं होता के सिक्कों का दौर चला गया है । सिक्कों से अब कुछ नहीं होता । ख़ैरात देने में भी इज़ाफ़ा करने का दौर आ चुका है । ये ग़रीब अपनी दास्ताने ग़म गोया इस तरह कहते हैं–

शऊर है तो मेरी ज़िल्लतों को सजदा कर तेरे वक़ार की बुनियाद बन गया हूं मैं ।

इस शेअर में शायर ने बहुत ही कठोर शब्दों का इस्तेमाल किया है । यहां सजदे का तात्पर्य स्वीकृति है । भीख़ मांगने वाले कहते हैं कि आप अमीरों की 'लापरवाही ने ही हमारी यह हालत बना दी । हमारा यह कहना बिल्कुल नहीं है कि हर अमीर मुस्लिम अपनी दौलत इन भिखारियों पर लुटा कर खुद भिखारी बन जाए ।

हमारा कहना तो यह है कि जब सरकार इन्साफ़ नहीं देती । स्कूल कॉलेज इतने महेंगे कर दिए गये हैं कि ग़रीब मुसलमान अपने बच्चों को वहां भेज नहीं सकते । मुसलमानों को अक्सर आरक्षण नहीं दिया जाता है । उल्टे सरकार ने गोवंश हत्या क़ानून लाकर सस्ते प्रोटीन प्राप्त करने के रास्ते भी बंद कर दिये हैं । ऐसे में समुदाय के अमीरों की ही तो यह नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है कि समाजहित के कुछ ऐसे काम करें कि समुदाय के ग़रीबों को कम-से-कम काम चलाऊ रोज़गार तो मिले । जैसे छोटे-छोटे कारख़ाने लगाना, आई॰टी॰आई॰ जैसी संस्थाएं खोलना वग़ैरह ।

सरवरे आलम

जब इन्सां था दीन से जाहिल
दुनिया थी अल्लाह से ग़ाफ़िल
उस दम बनकर दीन के हामिल
आये इक इन्साने मुकर्रम
कौन ? मुहम्मद सरवरे आलम[1]
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम[2]

कुफ़्रो बदी से लड़ने वाले
ज़ुल्मो सितम को सहने वाले
बात मगर हक़ कहने वाले
करने वाले रोशन आलम
कौन ? मुहम्मद सरवरे आलम
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम

मालिक का फ़रमान सुनाकर
इन्सां को इन्सान बनाकर
हाथों में क़ुरआन थमा कर
आये दीन को करने क़ायम
कौन ? मुहम्मद सरवरे आलम
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम ।

● **कौसर आज़मी**

1. जगत-नायक
2. उन पर अल्लाह की सलामती और रहमत हो ।

लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराने का काम सरकार का है यह सही है । मगर अगर सरकार न करे तो क्या हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे ?' फिर ज़कात की व्यवस्था अल्लाह पाक ने किस लिए दी है ? क्या हम ज़कात की व्यवस्था को सही ढंग से चला रहे हैं ?' नहीं! हर शहर की ज़कात इकट्ठी की जाए और कुरआन के हुक्म के अनुसार उसकी 8 मदों (विभागों) में न्यायपरक ढंग से उसका वितरण किया जाए, तो बेरोज़गारी दूर हो सकती है ।

जैसे मान लो कि किसी शहर में 2 करोड़ ज़कात इकट्ठी हो तो ग़रीब बेरोज़गार नवजवानों को उसमें के 50 लाख भी बतौरे कर्ज दिये जाएं, तो 50 ऑटोरिक्शे या 10 मालवाहक टैम्पो आ सकते हैं । इतने युवकों को रोज़गार मिल सकता है । उन पर निर्भर लोग भीख मांगने से बच सकते हैं और बिना सूदी क़र्ज़ मिलने से ये युवक ऑटो/टैम्पो चलाकर क़र्ज़ ईमानदारी से वापस कर सकते हैं, जिसे अन्य बेरोज़गारों को दिया जा सकता है । या फिर इन्हें क़र्ज़ नहीं पूरे तौर पर दे दिया जाए जैसा कि ज़कात का तक़ाज़ा है, तो इस तरह क़ौम का काम बन सकता है, ग़रीबी दूर हो सकती है ।

हमने ऑटो का एक उदाहरण दिया । कई छोटे-मोटे कामों के लिए क़र्ज़ दिए जा सकते हैं । या पूरी तरह रक़म दे दी जा सकती है । जैसे औरतों को सिलाई मशीने मर्दों को पानपट्टी, ठेले, गाड़ी, भंगार के कारोबार (जो की हमारा मुक़द्दर बन चुका है)। करने वालों की मदद की जा सकती है ।

ज़कात के मामले में हम इतने लापरवाह हो गये हैं कि जो दरवाज़े पर आ जाता है उसे दे देते हैं । यह देखते भी नहीं कि वह मुस्तहिक़ है भी के नहीं ? ज़कात एक इज्तिमाई इबादत है । हमने उसे व्यक्तिगत बना दिया है । इसलिए वह अपना असर खो चुकी है ।

अब समय आ चुका है कि मुसलमान अपने घर और अपने बच्चे इससे आगे उठकर पूरा मुस्लिम समुदाय भी सोचे । मस्जिदों के सामने भीख मांगने वालों की क़तारें तभी कम हो सकती हैं । हमें संवेदनशील होना होगा । वर्ना हमारी दास्तां भी न रहेगी दास्तानों में । अल्लाह पाक हमें सही समझ अता फ़रमाए आमीन ।

एम॰ आई॰ शेख़

लातूर, महाराष्ट्र

वैचारिक क्रान्ति

'कान्ति' का दिसम्बर, 2018 का अंक मिला । आनंद एवं आभार । इस्लाम एवं कुरआन विषयक सामग्री के साथ सर्वधर्म समभाव का संदेश वास्तव में 'कान्ति' नहीं वैचारिक क्रान्ति है । 'भ्रष्टाचार उन्मूलन', इतिहास से खिलवाड़, इस्लाम में अनुशासन का महत्व आदि लेख मननीय है । आज के असहिष्णुता की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों के मद्देनज़र, 'कान्ति' जैसी पत्रिकाएं ही मानवता के पथ को आलंकित करती रहती हैं । मेरी शुभकामनाएं ।

डॉ॰ चन्द्रकान्त मेहता

पूर्व उपकुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

समाप्त हो चुकी थी, और यह उनके एका के बिखरने और उनकी धार्मिक आत्मा पर मौत छा जाने का एक बहुत बड़ा कारण थी । इसलिए हज़रत मूसा (अलैहि॰) को आदेश दिया गया कि इस व्यवस्था को नये सिरे से स्थापित करें और मिस्र में कुछ मकान इस उद्देश्य के लिए प्राप्त कर लें या बना लें कि वहां सामूहिक रूप से नमाज़ अदा कर ली जाया करे । क्योंकि एक बिगड़ी हुई और बिखरी हुई मुसलमान क़ौम में धार्मिक आत्मा को फिर से जीवित करने और उसकी बिखरी शक्ति को नये सिरे से बहाल करने के लिए इस्लामी ढंग से जो कोशिश भी की जाएगी उसका पहला क़दम अनिवार्य रूप से यही होगा कि उसमें जमाअत के साथ नमाज़ की व्यवस्था स्थापित की जाए । इन मकानों को क़िब्ला ठहराने का अर्थ मेरे नज़दीक यह है कि इन मकानों को सारी क़ौम के लिए केन्द्र और रक्षा-स्थल ठहराया जाए, और उसके बाद ही 'नमाज़ स्थापित करो' कहने का अर्थ यह है कि अलग-अलग अपनी-अपनी जगह नमाज़ पढ़ लेने के बजाय लोग उन निर्धारित स्थानों पर जमा होकर नमाज़ पढ़ा करें, क्योंकि कुरआन की पारिभाषिक शब्दावली में 'नमाज़ स्थापित करना' जिस चीज़ का नाम है उसके अर्थ में अनिवार्य रूप से जमाअत से नमाज़ भी शामिल है ।

85. अर्थात ईमान वालों पर निराशा सत्ता-पक्ष का आतंक और खिन्नता की जो मनोदशा इस समय छाई हुई है उसे दूर करो, उन्हें आशावान बनाओ, उनकी हिम्मत बंधाओ और उनका मनोबल ऊंचा करो, 'शुभ-सूचना' देने के शब्द में ये सभी अर्थ समाहित हैं ।

शांति का प्रणेता इस्लाम

■ डॉ॰ रज़ीउल इस्लाम नदवी

इस्लाम को आतंकवाद का समानार्थक बता दिया जाता है और मुसलमानों को आतंकवादी कह दिया जाता है, जबकि यह सब मात्र दुष्प्रचार है । वास्तविकता यह नहीं है । अक्सर देखा जाता है कि दुनिया के किसी कोने में आतंकवाद की कोई घटना घटित होती है, फ़ौरन उसका आरोप मुसलमानों के सिर डाल दिया जाता है । जांच-पड़ताल का रुख़ भी एकतरफ़ा तौर पर मुसलमानों के ख़िलाफ़ तय कर दिया जाता है और अंततः खींच-तान कर कहीं न कहीं से उसकी डोर मुसलमानों से मिला दी जाती हैं । फिर उसका स्रोत इस्लाम की शिक्षाओं और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पवित्र जीवन की घटनाओं में ढूंढ़ा जाता है और आरोपित किया जाता है कि मुसलमान अपनी आतंकवादी सरगर्मियों के लिए इन शिक्षाओं से प्रेरणा पाते हैं ।

वास्तविकता यह है कि इस्लाम ने इंसानी जान के मान-सम्मान पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है, उसने एक इंसान के नाहक क़त्ल को पूरी इंसानियत का क़त्ल ठहरा दिया है, "जिसने किसी इंसान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला उसने मानो सारे ही इंसानों को क़त्ल कर दिया और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इंसानों को जीवन-दान दिया ।" (क़ुरआन, 5:32) लेकिन साथ ही उसने सामूहिक फ़ित्ना-फ़साद के निवारण के लिए जंग को इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार ठहरा दिया है, इसलिए कि उसकी निगाह में फ़ित्ना-फ़साद क़त्ल से ज़्यादा संगीन अपराध है । (क़ुरआन, 2:191) जिस ज़माने में अल्लाह तआला ने आप (सल्ल॰) को नबी बनाया, उस ज़माने में जंग के वहशियाना तरीक़े प्रचलित थे । किसी तरह की नैतिक सीमाओं की पाबंदी नहीं की जाती थी । दुश्मन के ग़ैर-मुक़ातिलीन (जंग में हिस्सा न लेने वाले लोगों) पर भी ज़ुल्म व सितम ढाया जाता । क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार और मारे गये लोगों का अपमान किया जाता था । दुश्मन पर अधिकार ज़माने के लिए हर तरह की कार्यवाही बे-रोक

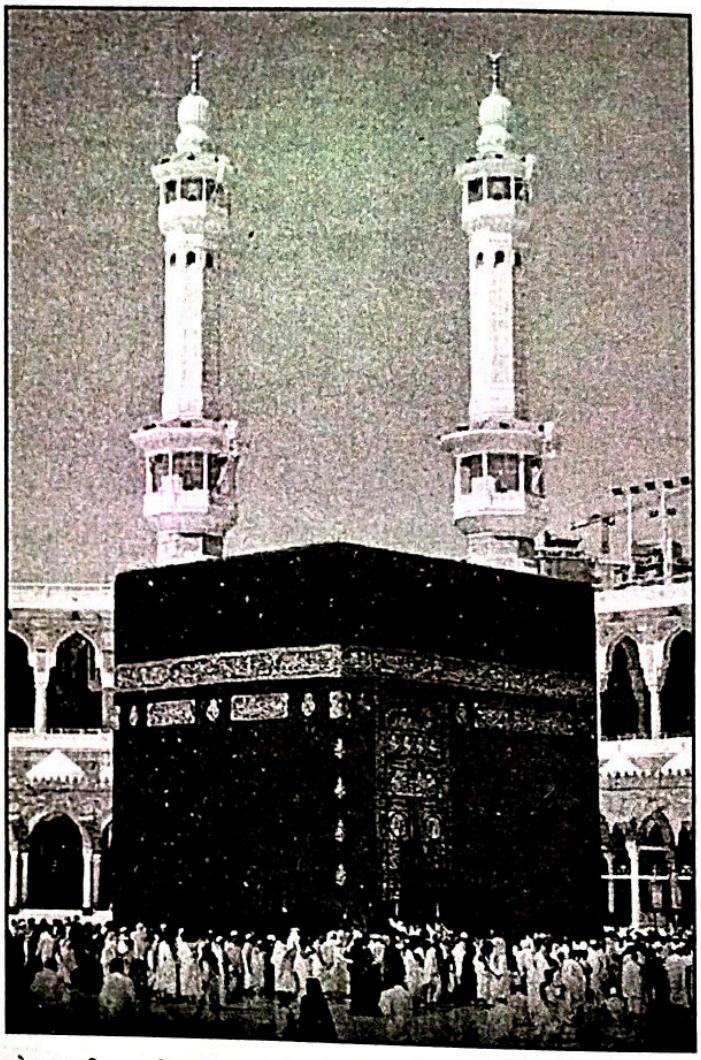

टोक की जाती थी, जहां तक कि उनके किये गये समझौते को भी तोड़ दिया जाता था और ग़फ़लत में उन पर हमला कर दिया जाता था ।

रोम व ईरान जो उस ज़माने में सभ्य क़ौमें समझी जाती थीं, वे भी इसी जंग के तरीक़े पर अमल करती थीं । इस्लाम ने वहशत व बरबरियत पर आधारित इन युद्ध-नियमों में सुधार की । उसने समझौतों के पृष्ठपोषण का आदेश दिया, दुश्मन पर ग़फ़लत में हमला करने से मना किया । ग़ैर-मुक़ातिलीन जैसे औरतों, बच्चों, बूढ़ों, घायलों, बीमारों और धार्मिक लोगों से विरोध न करने की चेतावनी दी । हथियार डाल देने वालों और क़ैदियों को क़त्ल करने से

रोका, युद्ध न करने वालों का वध करने, जानवरों को मारने, फलदार पेड़ों को काटने और खेतों को वरबाद करने से मना किया । मुस्लिम फ़ौजों ने हमेशा इन शिक्षाओं और हिदायतों को अपने पेशेनज़र रखा और सख़्ती से उन पर अमल किया।

सीरते नबवी की कुछ घटनाएं इस्लाम की इन सार्वजनिक शिक्षाओं से टकराती हैं, इसलिए इस्लाम-विरोधियों ने इन पर आपत्ति किये हैं । वे कहते हैं कि पैग़म्बरे इस्लाम ने कुछ अवसरों पर खुद इन शिक्षाओं की अवहेलना की हैं । यहां उन घटनाओं की समीक्षा की जा रही है–

कअ्ब बिन अशरफ़ और अबू राफेअ के क़त्ल की घटना जंगे बद्र (रमज़ान 2 हिजरी) और जंगे उहद (शव्वाल 3 हिजरी) की मध्य अवधि में पेश आयी । इन दोनों का संबंध यहूद से था । इनकी इस्लाम से दुश्मनी जब हद से ज़्यादा बढ़ गयी, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इन्हें गुप्त रूप से क़त्ल करवा दिया । सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी में इनके क़त्ल की घटना विस्तृत रूप से दर्ज है । कअ्ब बिन अशरफ़ को क़बीला औस से संबंध रखने वाले कुछ नवजवानों ने और अबू राफ़ेअ को क़बीला ख़ज़रज के नवजवानों ने क़त्ल किया । कअ्ब को क़त्ल करने का काम हज़रत मुहम्मद बिन मुसैलमा (रजि॰) ने अंजाम दिया । कअ्ब बिन अशरफ़ यहूद के मालदारों में से था । रिवायतों में है कि उसने यहूदी उलमाओं की दैनिक मज़दूरी निर्धारित कर रखी थी । वह ज़रूरतमंदों को सूद पर क़र्ज़ दिया करता था । हज़रत मुहम्मद बिन मुसैलमा (रजि॰) उसके पास गये और उससे कुछ क़र्ज़ मांगा । इन्होंने उसकी हमदर्दी हासिल करने के लिए उससे कहा, "हमने मुहम्मद (सल्ल॰) को पनाह देकर सारे अरब को अपना दुश्मन वना लिया है, हमसे बार-बार सदक़ा मांगा जाता है, अव तुम्हीं से कुछ क़र्ज़ लेना है ।"

अंततः तय हुआ कि हथियार गिरवी रखकर क़र्ज़ दिया जा सकता है, इसके लिए रात का समय निर्धारित हुआ । हज़रत मुहम्मद बिन मुसैलमा (रजि॰) अपने कुछ साथियों के साथ निर्धारित समय पर पहुंचे और कअ्व बिन अशरफ़ को आवाज़ दी । वह अपने अट्टालिका से नीचे उतरा, इधर-उधर की वातें होने लगीं । अचानक उसे ग़ाफ़िल पाकर हज़रत मुहम्मद बिन मुसैलमा (रजि॰) ने उसके सिर के वाल पकड़ लिए और इनके साथियों ने उस पर वार करके उसका काम तमाम कर दिया । यह घटना रवीउल अव्वल 3 हिजरी में पेश आयी ।

अवू राफ़ेअ को अब्दुल्लाह विन अतीक़ (रजि॰) ने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर क़त्ल किया । वह ख़ैवर के क़रीव हिजाज की ओर एक क़िले में रहता था । यह क़िला एक चारदीवारी से घिरा हुआ था, जिसके केन्द्रीय दरवाज़े में सूरज डूवते समय ताला लगा दिया जाता था । हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने साथियों को चारदीवारी से वाहर रहने को कहा और खुद वड़ी होशियारी से दरवाज़ा वंद होने से ठीक पहले अन्दर पहुंच गये । वहां उन्होंने कुछ देर इंतिज़ार किया । जव अवू राफ़ेअ की मजलिस ख़त्म हो गयी और लोग सोने के लिए अपने-अपने घरों को चले गए, तो हज़रत अव्दुल्लाह विन अतीक़ (रजि॰) अवू राफ़ेअ की अट्टालिका पर गये, वहां अंधेरा था । इन्होंने अवू राफ़ेअ को पुकारा और उसका जवाव मिलने पर लगातार कई वार करके उसका ख़ात्मा कर दिया । रिवायत में कअ्व विन अशरफ़ और अवू राफ़ेअ के क़त्ल का विवरण मिलता है कि किस तरह उन्हें क़त्ल करने वालों ने उनकी ग़फ़लत से फ़ायदा उठाया और उन्हें धोखे और वेख़वरी में क़त्ल किया ।

इन घटनाओं पर इस्लाम-विरोधियों की आपत्ति यह है कि आप (सल्ल॰) ने अपने दुश्मनों को धोखे से और गुप्त रूप से क़त्ल कराया, यह वही तरीक़ा है जो अज्ञान काल में प्रचलित था और जिसे पारिभाषिक शव्दावली में "फ़ितक" कहा जाता था । इस्लाम में भी उसी तरीक़े को अपनाया गया । कअ्व विन अशरफ़ और अवू राफ़ेअ का किरदार व चरित्र और घटनाओं का विवरण सामने हो, तो यह जानना आसान होगा कि उनको इस तरीक़े से क़त्ल करवाने की क्यों ज़रूरत पड़ी ?

कअ्व का वाप अशरफ़ क़वीला तय की शाख़ नवहान से संवंध रखता था । अज्ञान काल में उससे एक ख़ून हो गया था, जिसके कारण वह मदीना आ गया था और उसने यहूद वनी नज़ीर से गुप्त रूप से संबंध स्थापित कर लिए थे और उनके वीच इतना भरोसा और इज़्ज़त प्राप्त कर ली थी कि एक यहूदी सरदार अवुल हक़ीक़ की वेटी अक़ीला से शादी कर ली थी, जिससे कअ्व पैदा हुआ । कअ्व वहुत वड़ा शायर और वहुत धनवान था । उसको इस्लाम से सख़्त दुश्मनी थी ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हिजरत के वाद मदीना

वालों के साथ जो समझौता किया था, उसमें यहूद बनी नज़ीर भी शरीक थे । इस वजह से कअ्ब बिन अशरफ़ भी उस समझौते का पाबन्द था । लेकिन बद्र की जंग के बाद उसने मुसलमानों और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की निंदा की और मक्का जाकर कुरैश को भड़काया ।

इब्ने हिशाम ने बयान किया है कि जब उसे बद्र में कुरैश के सरदारों को मारे जाने की ख़बर मिली तो उसे बहुत ज़्यादा दुख पहुंचा, इसका इज़हार उसने इन शब्दों में किया, "अल्लाह की क़सम, अगर मुहम्मद (सल्ल०) ने उन लोगों को क़त्ल कर दिया है तो ज़मीन का पेट उसकी पीठ से बेहतर है" (सीरतुल नबी, प्रकाशन मिस्र 1936, 2/431)। फिर वह मक्का गया जहां बद्र के मारे गये लोगों के दर्दनाक मर्सिए (शोक काव्य) सुनाता था, जिनमें मुसलमानों से बदला लेने की प्रेरणा होती थी ।

सुनन अबू दाऊद की एक रिवायत के अनुसार, "वह शायर था, रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की निंदा करता था और कुरैश के लोगों को आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ भड़काता था ।" इब्ने हिज्र (रह०) ने एक रिवायत नक़ल की है, जिसमें है कि उसने मक्का जाकर कुरैश के मुशरिकों को हरम में इकट्ठा किया और ख़ाना-ए-काबा के परदों को थामकर मुसलमानों के विरुद्ध जंग करने की शपथ ली ।" फ़तहुल बारी, प्रकाशन बेरूत, 7/337) मदीना वापस आया, तो यहां रसूलुल्लाह (सल्ल०) की निंदा के अलावा मुस्लिम औरतों के बारे में गंदे और निंदनीय शेर कहा । हाफ़िज इब्ने हिज्र ने लिखा है, "उसने मुस्लिम औरतों के बारे में निंदनीय शेर कहा और मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचायी ।" (फ़तहुल बारी, 7/337)

इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध दुश्मनी में वह इसी हद तक न रहा, बल्कि उसने एक बार स्वयं रसूलुल्लाह को एक दावत में बुलाकर धोखे से क़त्ल करने का मंसूबा बनाया । उसने यहूद की एक जमाअत को तैयार किया और अपनी पूरी योजना को समझा दिया कि वह आप (सल्ल०) को एक दावते वलीमा में बुलाएगा, आप जाएंगे तो ज़िंदा वापस न जाने दिया जाए । आप (सल्ल०) को इस योजना की ख़बर मिल गयी और आप सुरक्षित रहे । इस घटना को इब्ने कसीर ने अपनी सीरत, इब्ने हिज्र ने शरह फ़तहुल बारी और याक़ूबी ने अपने इतिहास में बयान किया है ।

अनगिनत बार आप (सल्ल०) को मार डालने की ख़ुफ़िया उपाय किये थे । सीरत की किताबों में इन घटनाओं का ज़िक्र मिलता है । एक बार उन्होंने आप (सल्ल०) को कहला भेजा कि आप (सल्ल०) अपने तीन साथियों के साथ आएं, हम भी अपने तीन उलमा को भेजते हैं, अगर वे आप पर ईमान ले आएंगे तो हम भी आपके अनुयायी बन जाएंगे । इन यहूदी उलमाओं ने अपने साथ ख़ंजर छिपा लिया । योजना थी कि जब ये लोग इकट्ठा होंगे तो धोखे से ये आप (सल्ल०) को और आपके साथियों को मार देंगे । ख़ुद एक यहूदी औरत ने इस साज़िश को ज़ाहिर कर दिया और आप (सल्ल०) वहां नहीं गये ।

(फ़तहुल बारी, 7/331)

बनू नज़ीर आप (सल्ल०) से ग़द्दारी और वचन भंगिता पर उतारू थे । एक तरफ़ कुरैश के अनेकेश्वरवादी बद्र की जंग में मुसलमानों के हाथों पराजय का मुंह देखने के बाद उन्हें मुसलमानों के विरुद्ध वरगला रहे थे । दूसरी तरफ़ कपटाचारी उन्हें अपनी भरपूर सहायता की झूठी आशा दिला रहे थे । इन परिस्थितियों में उन्हें मदीना में रहने देना स्वयं को ख़तरे में डालने के बराबर था, इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन्हें अल्टीमेटम दे दिया कि ग़द्दारी की बिना पर उन्होंने मदीना में रहने का हक़ खो दिया है । अब अगर उन्होंने दस दिन के अन्दर मदीना ख़ाली नहीं कर दिया, तो उनसे जंग की जाएगी । उन्होंने इस अल्टीमेटम के संबंध में कोई परवाह न की । वे मज़बूत क़िलों के मालिक थे और उन्होंने उन क़िलों में आश्रय ले लिया । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पन्द्रह दिनों तक उनका घेराव जारी रखा । अंततः वे इस घेराव से परेशान हो गये । दूसरे यहूदी क़बीला बनू क़ुरैज़ा ने न तो उनका साथ दिया और न विरोधी ही उनकी मदद के लिए सामने आये । अंततः उन्होंने ख़ुद ही यह मांग रखी कि उनका ख़ून माफ़ कर दिया जाए और उन्हें आज्ञा दी जाए कि जो कुछ माल व सामान ऊंटों पर लादा जा सकता हो, उसे लेकर और शेष सामान यहीं छोड़कर वे सीरिया चले जाएं । आप (सल्ल०) ने उनकी जान बख़्श दी और उनकी मांग स्वीकार कर ली । इस विवरण से स्पष्ट है कि समझौते को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने नहीं, बल्कि बनू नज़ीर ने तोड़ा था ।

इसके बावजूद आप (सल्ल०) ने उनका घेराव कर लेने और उन पर अधिकार प्राप्त कर लेने के बावजूद उनसे बदला नहीं लिया, बल्कि ख़ुद उनकी शर्तों को मान लिया और उन्हें अपने माल व सामान के साथ अपने पसंदीदा स्थान पर जाने दिया ।

बच्चों का अदब

अमानत का बोझ	माइल ख़ैराबादी	20.00
एक इंसान दो किरदार	माइल ख़ैराबादी	12.00
ज़बान का ज़ख़्म	माइल ख़ैराबादी	15.00
तौहीद वाला शहज़ादा	माइल ख़ैराबादी	12.00
नादान	माइल ख़ैराबादी	28.00
फ़ैसले	माइल ख़ैराबादी	20.00
बिस्मिल्लाह की बरकत	माइल ख़ैराबादी	18.00
बुशरा के ख़त	माइल ख़ैराबादी	16.00
बड़ों का बचपन	माइल ख़ैराबादी	26.00
बड़ों की मायें	माइल ख़ैराबादी	14.00
सबक़ आमोज़ क़ुरआनी क़िस्से	माइल ख़ैराबादी	30.00
अन्देशों के गिरफ़्तार	माइल ख़ैराबादी	15.00
जन्नती बच्चा	माइल ख़ैराबादी	20.00
नीयत का फल	माइल ख़ैराबादी	35.00
प्यारे ख़लीफा	माइल ख़ैराबादी	50.00
आसान कहानियाँ	अफ़ज़ल हुसैन	10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ 1-4	अफ़ज़ल हुसैन	52.00
साहसी चींटी	डॉ० शम्सुल इस्लाम फारूकी	30.00
कीड़ों का म्यूजियम	डॉ० शम्सुल इस्लाम फारूकी	34.00
नेक औरतें 1,2	मतीन तारक़ बागपती	36.00
अन्धा इन्साफ़	मतीन तारिक़ बाग़पती	09.00
प्यासी आत्माएँ	इरफ़ान ख़लीली	30.00
इक़बाल की कविताएँ	सनाउल्लाह सुमन	18.00
प्यार के चिराग़	अबरार मोहसिन	28.00
क़ुरआन की बातें 1,2	सय्यद नज़र जैदी	46.00

MMI PUBLISHERS
• D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave Jamia Nagar New Delhi-110025
• Phone:26981652,26984347 Mob: 7290092401
• E-mail:info@mmipublishers.net,mmipublishers@gmail.com
• Website:www.mmipublishers.net

सफलता के तीन सूत्र

■ नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

हज़रत मूसा (अलैहि॰) ने एक मिस्रवासी को एक घूंसा मार दिया जिसकी वजह से उसकी मौत हो गयी । मूसा (अलैहि॰) इस अन्देशे और डर की वजह से कि कहीं इस अपराध के कारण उन्हें पकड़ न लिया जाए, मिस्र से निकल खड़े हुए और मदयन जा पहुंचे । बस्ती में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि बस्ती के लोग एक कुएं पर अपने-अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं ।

उन्होंने यह भी देखा कि दो लड़कियां अपने जानवरों की रस्सियां पकड़े एक तरफ़ खड़ी हुई हैं, जबकि उनके जानवर प्यास के कारण पानी पीने के लिए कुएं की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं । हज़रत मूसा (अलैहि॰) ने उन लड़कियों से पूछा कि वे अपने जानवरों को पानी क्यों नहीं पिला रही हैं ? वे बोलीं कि हम उस वक़्त तक पानी नहीं पिला सकते जब तक कि ये चरवाहे लोग अपने जानवरों को पानी न पिला लें । उन लड़कियों ने यह भी बताया कि उनके पिता बहुत बूढ़े हैं, इसलिए उन्हें ही जानवरों को पानी पिलाने के लिए आना पड़ता है ।

मूसा (अलैहि॰) पूरा माजरा समझ गये और उन्होंने उन लड़कियों के जानवरों को ले जाकर पानी पिला दिया । लड़कियां अपने जानवरों को लेकर घर पहुंची और अपने पिता को यह घटना सुनायी । उन्होंने मूसा (अलैहि॰) को अपने घर बुलाया लिया और उनसे उनका परिचय मालूम किया । उन लड़कियों में से एक लड़की ने अपने पिता से कहा कि इस नवजवान को मज़दूरी पर रख लीजिए । उस लड़की ने यह भी कहा कि मज़दूरी पर रखने के लिए बेहतरीन आदमी वह होता है जो ताक़तवर और अमानतदार हो (और इनमें ये दोनों विशेषताएं हैं)। अत: उनके पिता ने न सिर्फ़ मूसा (अलैहि॰) को मज़दूरी पर रख लिया बल्कि अपनी एक बेटी का विवाह भी उनके साथ कर दिया ।

यह घटना कोई कहानी नहीं है, बल्कि एक सच्ची घटना है, जो इस ज़मीन पर ही घटित हुई है । इस तरह की और इससे मिलती-जुलती घटनाएं आज भी घटित होती रहती हैं, बस ज़रूरत है तो आंखें खुली रखने की और आंखें खोलकर देखने की ।

क़ुरआन मजीद में यह घटना सिर्फ़ एक ऐतिहासिक घटना के तौर पर बयान नहीं की गयी है, बल्कि इसमें बड़ी हिकमतों और लाभप्रद जानकारियां छिपी हैं तथा इन्सान की कामयाबी के लिए कुछ बहुत अहम विशेषताएं और गुण ख़ुदा ने यहां बयान किये हैं । और वही इस घटना के बयान करने का मक़सद भी है ।

मूसा (अलैहि॰) मदयन में एक अजनबी की हैसियत से बेसरो-सामानी की हालत में पहुंचते हैं । उन्हें ख़ुद नहीं मालूम कि इस बस्ती के लोग उनके साथ क्या मामला करेंगे और उनकी समस्या का समाधान यहां होगा भी या नहीं । हां, वह अपने पालनहार रब से मदद और रहनुमाई की प्रार्थना ज़रूर करते हैं । लेकिन असहाय होने की इस हालत में भी उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास है । इसी ज़िम्मेदारी

25 yrs. Service (Regd.)
AL KAUSAR HOLY HERBAL
HOSPITAL & RESERCH CENTRE
(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)
Founder: Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED
Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)
Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India
Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)
Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days
(Rooms available)
Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

के एहसास के तहत वे उन निर्बल और असहाय लड़कियों की ख़ुद से आगे बढ़कर सहायता करते हैं । ख़ास बात यह है कि यह सहायता बिल्कुल नि:स्वार्थ है । उनकी यही किरदार उनके लिए आगे की राह खोलने का कारण बन जाता है । अगर मूसा (अलैहि॰) उन लड़कियों की बेलौस और नि:स्वार्थ सहायता न करते या सहायता के बदले में कुछ बदला मांगते तो क्या उनको वह इनाम मिल सकता था जो मिला ।

इस घटना में विशेष रूप से नवजवानों के लिए एक सुनहरी शिक्षा यह है कि वे लोगों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझें और बेलौसी और नि:स्वार्थ भाव के साथ बिना किसी भेदभाव के सारे इन्सानों की मदद करें जो आपकी मदद के हक़दार हैं । ऐसे लोग आपको समाज में हर तरफ़ मिल जाएंगे । सफ़र में भी और घर में भी । बाज़ार में भी और अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, स्कूल-कॉलेज और आफ़िसों में भी । यह किरदार और आचरण निस्संदेह आपकी राहें लोक-परलोक दोनों में कुशादा करेगा । कामयाबी और सफलता इसी आचरण में निहित है ।

हज़ारों साल पहले घटित हुई इस घटना में अल्लाह ने एक लड़की की ज़बान से दो ऐसी सुनहरी ख़ूबियां बयान करा दीं, जो रहती दुनिया तक सफलता और कामयाबी की ज़मानत होंगी । उनमें पहली ख़ूबी है ताक़त और दूसरी है अमानत । ताक़त का मतलब है काम करने की ताक़त, सलाहियत और योग्यता । अमानत का मतलब है ईमानदारी, सच्चाई, भरोसा और वफ़ादारी । यानी आदमी अपने काम में महारत (दक्षता) भी रखता हो और वह काम ईमानदारी और सच्चाई के साथ अंजाम देता हो । अगर हमारे नवजवान ऊपर बयान की गयी तीनों ख़ूबियों को अपने अन्दर पैदा कर लें तो 'इंशा-अल्लाह' (अल्लाह ने चाहा तो) दुनिया की राहें भी उन पर खुलेंगी और आख़िरत (परलोक) की कामयाबी भी उनके हिस्से में आएगी ।

क़ुरआन मजीद में वे सारे नियम और वे सारे गुण विभिन्न प्रकार से बयान कर दिये गये हैं जिन्हें अपना कर इन्सान इस दुनिया में सफल जीवन बिता सकता है और आख़िरत (परलोक) में अल्लाह की ओर से बड़े इनाम का हक़दार हो सकता है । बस ज़रूरत है कि हम क़ुरआन मजीद को आंखें खोलकर पढ़ें, सिर और मन-मस्तिष्क को आंखें और क़ुरआन के उसूलों और गुणों को अपना कर उनकी बरकतें अपनी आंखों से देखें ।

सफलता के तीन क़ुरआनी सूत्र

(1) ज़रूरतमन्दों, दीन-दुखियों की ख़ुद से आगे बढ़कर नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना ।

(2) अपने काम में महारत (दक्षता), योग्यता, सलाहियत और ताक़त अपने अन्दर पैदा करना ।

(4) अमानतदारी, सच्चाई, भरोसा और दियानतदारी को अपनी कार्यशैली बनाना ।

अगर ये गुण अपने अन्दर पैदा कर लिए जाएं तो पूरे यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि आपको सफलता के पीछे नहीं दौड़ना पड़ेगा बल्कि सफलता ख़ुद आपके पीछे भाग कर आएगी ।

सबक़ पढ़ फिर सदाक़त का, अदालत का, शुजाअत का।
लिया जाएगा तुझ से काम दुनिया की इमामत का ।।

अभिव्यक्ति

लेखक कवि व्यंग्यकार
क़लम ही है जिनका हथियार
काग़ज़ पर करते हैं जो
अपनी भावनाओं का इज़हार
अपना आक्रोश अपनी पीड़ा
अपनी खीज अपनी कुंठा
जनमानस का असंतोष
व्यवस्था की कमियां दोष
लालफ़ीताशाही भ्रष्टाचार
घपले, घोटाले, भर्राशाही
काग़ज़ के पन्नों पर
अपनी-अपनी विधा में
ले आते हैं बाहर !
पर यदा-कदा ही सही
ऐसा अवसर भी आता है
कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु
जताना पड़ ही जाता है
उन्हें व्यवस्था से विरोध !

ओमप्रकाश बजाज
इंदौर, म॰प्र॰

ग़रीबी, भुखमरी दूर करने के उपाय

■ सुहैल आबिदीन

पूरी दुनिया में अनेक देश ऐसे हैं जिन्हें महंगाई, बेरोज़गारी, भूख-प्यास और खाद्य संकटों का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में जो रिपोर्टें आयीं हैं, वह बहुत ही चौकाने वाली हैं। खाद्य संकट से पैदा होने वाले हालात को देखते हुए विश्व बैंक के सम्मेलन में इस संकट के सूरतेहाल से निबटने के लिए बहसें हुईं और इस सिलसिले में निज़ामे अमल भी तैयार किया गया, जिसके तहत विश्व बैंक ने पूरी दुनिया से अपील की है कि वह विश्व खाद्य कार्य-योजना के सिलसिले में कम से कम पचास करोड़ डॉलर की तत्काल सहायता करे।

विश्व बैंक के अनुसार दुनिया भर में खाद्य सामग्रियों की बढ़ती हुई क़ीमतों से लगभग दस करोड़ ग़रीब लोग और अधिक ग़रीबी की गहराइयों में ढकेले जा रहे हैं। पिछले कई सालों में खाद्य सामग्रियों की क़ीमतों में तीन गुना वृद्धि हुई है। खाद्य सामग्रियों के इस वैश्विक संकट से निबटने के लिए प्रभावी क़दम उठाने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए दुनिया भर के अमीर शासकों से अपील की गयी है कि वे वैश्विक कार्य योजना के लिए पांच सौ मिलियन डॉलर की सहायता राशि का प्रबंध करें, बल्कि मूलभूत आहार और फ़सलों की पैदावार बढ़ाने के लिए फंड भी उपलब्ध कराएं।

वैश्विक स्तर पर यह शंका ज़ाहिर की जा रही है कि दुनिया में खाद्य संकट आगामी कुछ सालों में बहुत ज़्यादा बढ़ने की उम्मीद है। चिंता की बात यह है कि उस वक़्त दुनिया में कैसी अफ़रातफ़री फैली हुई होगी, अत: वक़्त से पहले इस तरफ़ ध्यान देने की बहुत ज़रूरत है, वरना वह दिन दूर नहीं जब विकासशील देश भी इस आग में झुलसने लगेंगे। पूरी दुनिया में न जाने इस महंगाई ने कितने ही लोगों के घरों से खुशियां और होंठों से मुस्कुराहटें छीन ली हैं। यह कोई व्यक्तिगत घटना नहीं, बल्कि यह वैश्विक मामला है।

यद्यपि चर्चा का विषय भारत है, लेकिन यह देश चूंकि



एक से ज़्यादा धर्मों और ज़ात-बिरादरियों की नुमाइंदगी करता है, इसलिए वैश्विक जांच-पड़ताल की रोशनी में यह सच्चाई भी सामने आयी है कि भारत देश में हर छठा व्यक्ति निर्धन नज़र आता है, जिसमें हर धर्म व समुदाय के लोग नज़र आएंगे। मुसलमानों और विभिन्न ज़ात और क़बीले के लोग आज भी सबसे ज़्यादा ग़रीब नज़र आते हैं। रिपोर्ट में ग़रीबी में कमी के ज़िक्रों में मुसलमान और विभिन्न ज़ात व क़बीलों को भी लिया गया है और कहा गया है कि पिछले दस सालों में सबसे ग़रीब इन दो वर्गों के मुक़ाबले ग़रीबी कम हुई है।

हमारे देश भारत में ग़रीबी हटाओ का नारा कांग्रेस के ज़माने में दिवंगत भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दिया था और उस नारे को चुनावी स्तर पर इस्तेमाल करने के बाद उन्होंने सामाजिक रूप से इसे अमली जामा पहनाने की कोशिश भी की, लेकिन ये कोशिशें नेक नियती पर आधारित होने के बावजूद इस तरह अस्थायी थीं कि दशकों बाद भी उनका कहीं कोई ऐसा प्रभाव नज़र नहीं आया, जिसे आइन्दा के लिए नमूना बनाया जा सके। इसकी बुनियादी वजह कुछ और नहीं, आबादी पर किसी तरह नियंत्रण नहीं हो पाया था।

हालात को मद्देनज़र रखते हुए नसबंदी की मुहिम

(अभियान) शुरू की गयी थी, जो अक़ीदों से टकराते हुए एक बड़े हलक़े में जहां विवादित बनकर रह गयी थी, वहीं इस मुहिम ने अपने लिए शिक्षित लोगों के अंदर बेपनाह कशिश पैदा कर दी । इस मुहिम का शुरुआती चरण उन लोगों के लिए वास्तव में परेशानियों से भरा हुआ था, जो इसे फ़ितरत के साथ खिलवाड़ समझते थे । अत: इस मुहिम की मुख़ालिफ़त (विरोध) ने हिंसा की राह भी हमवार कर दी और कांग्रेस को इस राजनीतिक शोषण की क़ीमत भी चुकानी पड़ी ।

एक रिपोर्ट के अनुसार चार राज्यों अर्थात बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन के मानदंड के लिहाज़ से जो जायज़ा लिया गया, उस पर हुकूमत को ध्यान देने की ज़रूरत है । स्वास्थ्य विभाग में बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में लोगों को खाद्य सामग्रियों की सार्वजनिक उपलब्धता का दायरा सीमित दिखाया गया है और उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में बच्चों की मृत्यु दर 2.4 प्रतिशत भी चिंता का कारण है । बात हुई थी कि "सबका साथ सबका विकास" और भ्रष्टाचार मुक्त भारत के नव-निर्माण की, लेकिन आज लव जिहाद, भीड़ द्वारा हिंसा, आतंकवाद और भुखमरी से परिपूर्ण भारत नज़र आ रहा है ।

ग़रीबी, भुखमरी, निर्धनता ये मिलते-जुलते नाम हैं, लेकिन यह समस्या एक दिन की नहीं और न ही कोई एक व्यक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार है, बल्कि सरकारी और ग़ैर-सरकारी सतह पर किसी न किसी रूप में कम या ज़्यादा हर कोई ज़िम्मेदार है । आमतौर पर खाने की बरबादी, सरकारी सतह पर सामानों की बरबादी, लोगों में एक-दूसरे के प्रति हमदर्दी की भावना कम होना और नफ़रत की भावना में शिद्दत पाया जाना और सहायता न करने में वृद्धि पाया जाना, ये सारी बातें ग़रीबी, भुखमरी और निर्धनता को बढ़ावा देने के बराबर हैं । पहले अपने दुश्मनों को प्रताड़ित करके भूखे-प्यासे रहने पर विवश किया जाता था, लेकिन आज हालत यह है कि लोग महंगाई के मार से मारे जा रहे हैं ।

क़ौमी सतह पर शासकों, मिल्लत के बुद्धिजीवियों और सरकारी अफ़सरों को यह समझना चाहिए कि जनता से ही मुल्क व मिल्लत है और इससे जुड़े ताने-बाने । अगर ग़रीबी, भुखमरी, भय और भ्रष्टाचार से यह ताना-बाना, विखर जाए, तो हम इससे किस तरह बच सकते हैं । महंगी पार्टी, दावतों और प्रोग्रामों से बचा जाए और उन्हीं पैसों से निर्धन और ग़रीब लोगों के पेट भरने का काम किया जाए, ताकि ग़रीबी और भुखमरी में कमी लायी जा सके । बड़े-बड़े होटलों में कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, उन कार्यक्रमों में खाने-पीने की चीज़ें काफ़ी मात्रा में बरबाद हो जाती हैं, जिन पर इन ग़रीब और निर्धन लोगों का हक़ होता है ।

हमें ख़ुद के गिरेबान में झांकना चाहिए और यह सवाल ख़ुद से ही करना चाहिए कि क्या हम ग़रीबी, भुखमरी और निर्धनता जैसे शब्दों से मुक्ति पाना चाहते हैं ? अगर चाहते हैं तो इस सिलसिले में अभी से संगठित रूप से काम शुरू करना होगा । निर्धनता एक व्यक्ति या फ़िरक़े का नाम नहीं है, यह एक क़ौमी और इन्सानी मसला है, जिसके लिए बिना किसी भेदभाव के धर्म व समुदाय को साथ लेकर इस सिलसिले में काम करना पड़ेगा । दावे और ज़ोर बयानी से इस तरह के मसले हल नहीं हुआ करते । हमारे देश में अनाज की कोई कमी नहीं, फिर भी लोग भुखमरी के शिकार होते हैं ।

इस महंगाई ने निर्धन और ग़रीब लोगों की कमर तोड़ दी है । ग़रीबों के लिए जीना मुहाल हो गया है । भूख-प्यास, फ़ाक़ाकशी और भूख से बिलखते बच्चे इस अकथनीय हालात को देखते हुए यह कहना ज़रूरी है कि खाद्य सामग्रियों की क़ीमतों में जो तेज़ी से वृद्धि हो रही है, उसे नियंत्रित करने में हुकूमत असफल साबित हो चुकी है, जिसके नतीजे में अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है । विकास के जितने भी क़सीदे पढ़ लें, लेकिन सच्चाई यही है कि ग़रीब वर्ग ग़रीब से भी ग़रीब होता जा रहा है ।

यह सही है कि 1990 ईसवी से लेकर अब तक के बीच अति निर्धन वर्ग की संख्या में काफ़ी कमी आयी है, लेकिन इस सिलसिले में अब भी बहुत कुछ किये जाने की ज़रूरत है । ग़रीबी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले लोगों को यह एहसास दिलाना होगा कि ग़रीब घराने में पैदा होने वाले बच्चे ज़रूरी नहीं कि वे पूरी ज़िन्दगी ग़रीबी और निर्धनता में ही गुज़ार दें और विरासत में बच्चों के लिए निर्धनता और ग़रीबी छोड़ जाएं, अत: ग़रीबी दूर करने के सारे वादे व इरादे झूठे ही रह जाएंगे । बेहतर होगा कि भारत में खाद्य वस्तुओं को निर्धनता नापने का पैमाना बनाया जाए और ज़िन्दगी बसर करने के लिए जितने पोषाहार व खाद्यान्न की ज़रूरत है, वह सबको मिलनी चाहिए ।

इस्लाम में कारोबार का महत्व

■ रियाज़ फ़िरदौस

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है–''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब पुकारा जाए नमाज़ के लिए जुमुआ के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की ओर दौड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम जानो । फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो । और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, शायद कि तुम्हें सफलता प्राप्त हो जाए ।'' (क़ुरआन, 62:9-10)

क़ुरआन की यह सूरह जुमुआ की आयत है और पहली वाली आयत नमाज़ जुमा की तरफ़ इशारा कर रही है कि जुमा की नमाज़ के बाद ज़मीन में फैल जाना और जीविका की तलाश की भागदौड़ में लग जाना ज़रूरी है । बल्कि यह इरशाद इजाज़त के अर्थ में है, चूंकि जुमा की अज़ान सुनकर सब कारोबार छोड़ देने का आदेश दिया गया था, इसलिए फ़रमाया गया कि नमाज़ ख़त्म हो जाने के बाद तुम्हें इजाज़त है कि बिखर जाओ और अपना कारोबार हक़ और हलाल तरीक़े से करो । बल्कि आम दिनों में भी इसकी दलील है कि तुम फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो । हलाल जीविका और अन्य मामलों के लिए कोशिश करो ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–''जो व्यापारी व्यापार के अंदर अमानत और सच्चाई को अपनाए, तो क़ियामत के दिन अम्बिया, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ होगा ।'' (सुनन तिरमिज़ी)

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–''आदमी अपने कंधे पर रस्सी डालकर ईंधन की लकड़ियां उठाए हुए बाज़ार में बेचने के लिए लाकर रखे और उसी से धन कमाकर अपने आप पर ख़र्च करे, यह उससे कहीं बेहतर है कि वह लोगों के सामने भीख मांगता फिरे, फिर वे उसे दें या न दें ।''

(मुसनद इमाम अहमद इब्ने हंबल)

हज़रत राफ़े बिन ख़दीज (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! कौन-सी कमाई सबसे ज़्यादा पाकीज़ा है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''आदमी के हाथ की कमाई और हर हलाल तिजारत ।'' (मुसनद अहमद)

आज के इस दौर में हमारे नवजवानों का एक बड़ा वर्ग मल्टी नेशनल कंपनियों के चंगुल में फंसा है, जो उन्हें मेहनत-मज़दूरी से दूर करके जल्द ही सफलता की मंज़िल तय कराना चाहती हैं, जो हमारे धर्म इस्लाम के आर्थिक संदेशों के विपरीत है । मल्टी नेशनल कंपनियों का आगमन तो भारत में बीसवीं शताब्दी के आख़िरी दशक में हुआ है, लेकिन इससे पहले दुनिया के अन्य देशों विशेष रूप से यूरोपीय देशों में ये अनुभवों के चरणों से गुज़र चुकी हैं । ख़ुद एम०वे० (AMWAY) और अन्य प्रसिद्ध कंपनियों के प्रोग्रामों में भी इसकी सराहत (स्पष्टीकरण) की जाती रही है ।

परिचय कराने वाले इस अंदाज़ से बयानबाज़ी करते हैं कि जैसे ये कंपनियां इन विकासशील देशों को विकास के ऊंचाई पर पहुंचाकर अब हमारे देश को भी लाभ पहुंचाने आयी हैं, हालांकि बात इसके विपरीत है । वास्तविकता यह है कि इनको उन देशों से बहिष्कृत कर दिया गया है, वहां के आर्थिक विशेषज्ञों ने इन्हें रद्द कर दिया है और चूंकि इसके मूल सिस्टम में धोखा और व्यापारिक चालबाज़ी है, इसलिए दुनिया भर के अधिकतर देशों में इन पर पाबंदी लगा

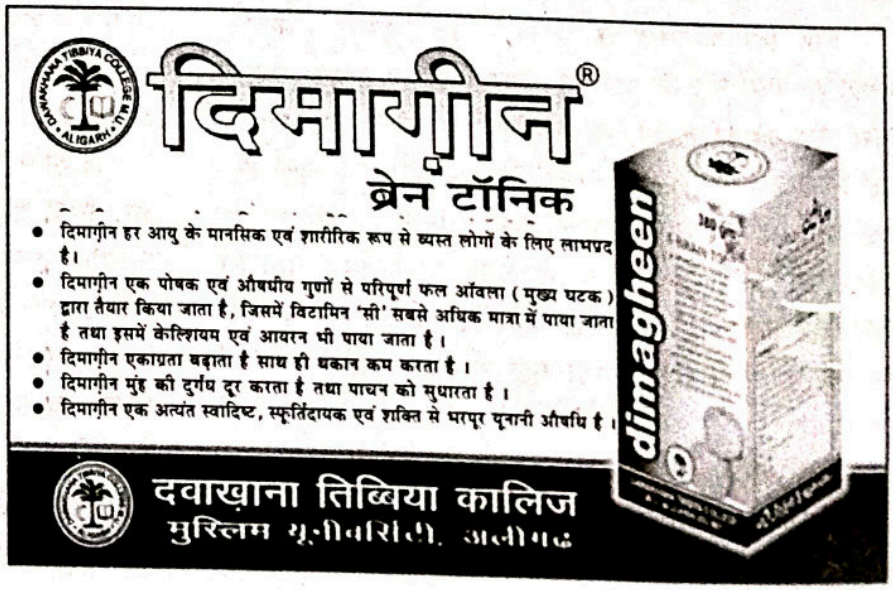

दी गयी है और हुकूमत ने इनके नुक़सान से बचने की नसीहत की है । इनके नारे ज़रूर दिलकश हैं, लेकिन हक़ीक़त में छल-कपट से परिपूर्ण हैं ।

अमेरिका में इस तर्ज़ की एक कंपनी स्काई बिज काम (skybiz.com) है । इस कंपनी की शाखाएं अनेक देशों में फैली हुई हैं, मगर ख़ुद अमेरिकी हुकूमत ने उपर्युक्त कंपनी पर जनता के साथ धोखा करने और चालबाज़ी का आरोप लगाया है । इसी के पेशेनज़र ''ओकला होमा स्टेट'' की अदालत ने कंपनी की सरगर्मियां रोक देने और कंपनी के कर्मचारियों और एजेंट हज़रात की पूंजी और मज़दूरी उन्हें वापस किये जाने के पेशेनज़र इस कंपनी के सामानों को जमा कर देने का फ़ैसला किया है । जापान और चीन में 1998 ईसवी में एम॰वे॰ और इस तरह की कंपनियों पर पाबंदी लग चुकी है ।

यह बात भी उल्लेखनीय है कि ये कंपनियां मेंबर बनाने के लिए पूरी सहायता फ़राहम करती हैं, लेकिन निर्मित वस्तुओं के विक्रय में इनकी कोई भूमिका नहीं होती, बल्कि खुली मार्केट में लाकर बेचना नियम-सिद्धांत के ख़िलाफ़ बताती हैं । ज़ाहिर है कि जहां खुली मार्केट में वस्तुएं आएंगी, तो सारा भांडा फूट जाएगा । लोग जब दूसरी कंपनियों की निर्मित वस्तुओं से तुलना करेंगे तो उनकी वास्तविकता खुलकर सामने आ जाएगी । शरई लिहाज़ से एक और पहलू भी ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि इस कंपनी में शरीक होने वालों का उद्देश्य कंपनी का सामान ख़रीदना नहीं होता, बल्कि कमीशन और लाभ कमाना ही मद्देनज़र रहता है, गोया अभिप्राय कमीशन है, सामान नहीं । सामान को द्वितीय हैसियत प्राप्त होती है ।

एक बार अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ग़ल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे । आपने अपना मुबारक हाथ उस ढेर में डाला, तो उंगलियों पर कुछ नमी महसूस हुई । आप (सल्ल॰) ने ग़ल्ले वाले से पूछा यह क्या है ? दुकानदार ने कहा, या रसूलुल्लाह (सल्ल॰)! इस ढेर पर बारिश हो गयी थी । आपने फ़रमाया, फिर तुमने भीगे हुए ग़ल्ले को ऊपर क्यों नहीं रख दिया कि लोग इसे देख लेते । जो व्यक्ति धोखा दे, उसका मुझ से कोई संबंध नहीं ।''

(मुस्लिम)

नबी करीम (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–''ख़रीदने और बेचने वाले अगर सच्चाई से काम लें और मामले को स्पष्ट करें, तो उनके क्रय-विक्रय में बरकत दी जाती है और अगर दोनों कोई बात छिपा लें और झूठ बोलें तो उनके कारोबार से बरकत उठा ली जाती है ।'' (बुख़ारी) एक अन्य जगह पर आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–''ख़ुदा उस व्यक्ति पर रहम फ़रमाए, जो क्रय-विक्रय और तक़ाज़ा करने में नरमी और ख़ुश अख़्लाक़ से काम लेता है ।''

(बुख़ारी)

इस वक़्त दुनिया में पचास से ज़्यादा मुस्लिम देश हैं । करोड़ों मुसलमान दुनिया भर में फैले हुए हैं और लाखों मस्जिदें हैं, जहां नमाज़ अदा की जाती है और क़ुरआन मजीद पढ़ा जाता है । हर साल लाखों मुसलमान हज व उमरा करते हैं और बड़े-बड़े धार्मिक सम्मेलन होते हैं । मुसलमान हर तरह से इस्लाम पर अमल कर रहे हैं, फिर भी हम हर एतिबार से हर क़ौमों से पीछे हैं, चाहे वह दीनी हो या दुनियावी । इसका मुख्य कारण यह है कि जब हम क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं तो उसमें पहली क़ौमें जो गुज़र चुकी हैं, उनके हालात बयान किये गये हैं कि वे क्यों तबाह व बरबाद हो गयीं ? इस याद दिहानी का उद्देश्य यह है कि आइन्दा भी अगर किसी क़ौम ने ऐसा किया तो उसका भी वही हाल होगा, जो पहली क़ौमों का हो चुका है । पहली क़ौमें कम तौलने, बुरे अख़्लाक़, निर्धन लोगों पर अत्याचार, इल्म और दौलत को आम इन्सानों की भलाई व कल्याण के लिए ख़र्च न करना, सामाजिक बुराइयों और अल्लाह के रसूलों की नाफ़रमानी की वजह से तबाह व बरबाद हुईं ।

मुसलमानों ने जब अपने नबी (सल्ल॰) के संदेशों को दिलोजान से स्वीकार किया, दुनिया उनकी गुलाम हुई, लेकिन जब वे उन सत्य संदेशों से दूर होने लगे, तो मुसलमानों के अंदर आपसी मतभेद पैदा होने लगे, उनमें आपस में हुकूमत के लिए लड़ाइयां होने लगीं और मुसलमानों में फ़िरक़े बनने शुरू हो गये, जिससे अल्लाह ने सख़्त मना किया था ।

इस्लाम ने गुलामी को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया था, मगर बदक़िस्मती से मुस्लिम हुकूमतों में गुलामों का कारोबार होता रहा । इस्लाम में दीन अपनाने की पूर्ण आज़ादी थी, लेकिन धर्म के नाम पर लोगों पर बहुत सख़्ती की गयी । क़ुरआन को बिना समझे पढ़ने की रस्म अदा होने लगी । क़ुरआनी शिक्षाओं का उद्देश्य केवल धार्मिक काम ही नहीं, बल्कि यह साइंस और दूसरी शिक्षाओं को प्राप्त करने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देता है, जिसे बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया गया है, इससे हमको बचना चाहिए ।

बेरोज़गारी का दंश

■ देवेंद्र जोशी

'नौकरी लगेगी नहीं तो जीने से क्या फ़ायदा' यह कहते हुए चार नवजवान चलती हुई ट्रेन के सामने कूद गये । इनमें से तीन की मौत हो गयी और एक गंभीर रूप से घायल हो गया । राजस्थान के अलवर ज़िले की इस घटना ने एक बार फिर देश में बेरोज़गारी की भयावहता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है । यह कोई पहला अवसर नहीं है जब बेरोज़गारी को लेकर शिक्षित युवाओं को आत्महत्या के लिए मजबूर होना पड़ रहा है ।

पिछले साल आई॰टी॰ कंपनियों में छंटनी के दौरान एक सॉफ़्टवेयर इंजीनियर ने पुणे में चार मंज़िला इमारत से कूद कर आत्महत्या कर ली थी । आंध्र प्रदेश के कृष्णा ज़िले के रहने वाले इस 25 वर्षीय नवजवान गोपीकृष्णन ने अपने सुसाइड नोट में लिखा था कि आई॰टी॰ कंपनियों में नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं है । इसका मतलब साफ़ है कि जो शिक्षित युवाओं की फ़ौज आ रही है, उन्हें नौकरी नहीं मिल रही है और जो पहले से नौकरी में हैं उनके सिर पर छंटनी की तलवार लटक रही है । ऐसे में देश के शिक्षित बेरोज़गार युवा घुट-घुटकर दुविधा और असमंज की ज़िन्दगी जी रहे हैं ।

बांबे स्टॉक एक्सचेंज (बी॰एस॰ई॰) और सेंटर फॉर मानिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सी॰एम॰आई॰ई॰) की ओर से मार्च, 2018 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक़ देश में बेरोज़गारी का औसत बढ़कर 6.23 फ़ीसद हो गया है । गांवों में यह 5.95 और शहरों में 6.76 फ़ीसद दर्ज हुआ है । नोटबंदी और जी॰एस॰टी॰ लागू होने के बाद से तो देश में बेरोज़गारी में अप्रत्याशित रूप से बढ़ोत्तरी हुई है । इससे युवाओं में हताशा बढ़ी है । अलवर की घटना इसी हताशा का एक उदाहरण मात्र है ।

भारत में हर साल लाखों लोग रोज़गार पाने की क़तार में जुड़ रहे हैं । लेकिन रोज़गार का औसत लगातार घटता जा रहा है । अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई॰एल॰ओ॰) की रिपोर्ट भी अनुकूल नहीं है । उसके मुताबिक़ भारत में बेरोज़गारों की संख्या इस वर्ष के अंत तक बढ़कर एक करोड़ छियासी लाख का अनुमान है, जबकि 2017 में यह आंकड़ा एक करोड़ तिरासी लाख का था ।

आई॰एल॰ओ॰ ने विश्व रोज़गार और सामाजिक आउटलुक रुझान-2018 नामक रिपोर्ट में भारत की बेरोज़गार पर चिंता जताते हुए कहा है कि 2018 तक भारत में बेरोज़गारों की संख्या में तीस लाख की बढ़ोत्तरी होगी । ये तमाम आंकड़े देश में बेरोज़गारी की विकरालता की क़हानी बयान कर रहे हैं ।

केंद्रीय श्रम और रोज़गार राज्यमंत्री ने संसद में रोज़गार के आंकड़ों को लेकर पूछे गये एक सवाल के जवाब में कहा था कि भारत सरकार ने 2016 से देश में रोज़गार के वास्तविक आंकड़ों को जानने के लिए कोई देशव्यापी सर्वे नहीं कराया है । सच्चाई से मुंह मोड़ने के लिए भले ही सर्वे करने या आंकड़े जारी करने से सरकार बचने का जतन करती रहे, लेकिन बेरोज़गारी की भयावहता का जो मंज़र है, वह रोज़गार क्षेत्र में छाई मंदी और नौकरियों में छंटनी के रूप में साफ़ देखा जा सकता है ।

सी॰एम॰आई॰ई॰ ने 2017 के शुरुआती चार महीनों को लेकर एक सर्वे कराया था । इसमें चौंकाने वाले तथ्य सामने आए । मालूम पड़ा कि जनवरी से अप्रैल, 2017 के बीच क़रीब पंद्रह लाख लोगों ने नौकरी गंवाई और बेरोज़गारी का स्तर बढ़ा । संयुक्त राष्ट्र श्रम संगठन ने भी 2018 में भारत में बेरोज़गारी का स्तर बढ़ने की आशंका जताई है । उसकी रिपोर्ट के अनुसार 2015 में सिर्फ़ एक लाख 35 हज़ार लोगों को ही नौकरी मिली । हर दिन साढ़े पांच सौ नौकरियां ख़त्म हो रही हैं ।

आई॰एल॰ओ॰ के आंकड़ों के मुताबिक़ भारत दुनिया का सबसे ज़्यादा बेरोज़गार देश बन गया है । यहां 11 फ़ीसद आबादी अर्थात क़रीब बारह करोड़ लोग बेरोज़गार हैं । श्रम ब्यूरो की रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले चार सालों में

Estd. 1983

حضرت علیؓ اکیڈمی، مظفر پور (بہار)

Hazrat Ali Academy



دینی وعصری تعلیم کا ایک مثالی ادارہ

Prep to Std.X Islampur,Muz. 7250086228	Prep to Std.VII Chandwara,Muz. 9934775080	Prep to Std.X Sadatpur,Muz. 9939448937

خصوصیات

CBSE & BSEB Curriculum
A Centre of Quality Education
Well Equipped Science & Computer Lab.
Co-curricular Activities
Annual excursion facility
Bus Facility
Observation with CCTV Cameras

۱۔ قرآن ودینیات اور اسلامی تاریخ نصاب میں شامل۔
۲۔ انگریزی، حساب وسائنس میں اعلیٰ استعداد پیدا کرنا۔
۳۔ باصلاحیت، قابل اور مشفق تجربہ کار اساتذہ کی ٹیم۔
۴۔ بچیوں کے لئے محفوظ باپردہ اسلامی ماحول۔
۵۔ ہفتہ وار اجتماعات کے ذریعہ طلباء واساتذہ کی تربیت۔
۶۔ دونوں میٹرک بورڈ میں بچے بچیوں کی صد فیصد کامیابی۔

Managed by:

Hazrat Ali Educational & Social Welfare Trust (Regd.)
Islampur, Muzaffarpur (Bihar)
E-mail:- hazrataliacademy@gmail.com
Website:-www.hazrataliacademy.in

रोज़गार बढ़ाने के नाम पर विदेशी निवेश की सीमा तो बढ़ा दी गयी, लेकिन उस रफ़्तार से रोज़गार का सृजन नहीं हुआ। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और स्टार्टअप जैसी योजनाएं ज़ोर-शोर से शुरू की गयीं, इनके प्रचार-प्रसार पर करोड़ों रुपये ख़र्च भी किये गये, लेकिन बेरोज़गारी दूर करने में ये योजनाएं कारगर साबित नहीं हो सकीं ।

युवाओं का देश कहलाने वाले भारत में युवा रोज़गार की हक़ीक़त यह है कि उत्तर प्रदेश सचिवालय में चपरासी के मात्र तीन सौ अड़सठ पदों के लिए तेईस लाख लोगों ने आवेदन किया था, और आश्चर्य की बात यह कि इनमें बड़ी संख्या में उच्च शिक्षित युवा भी शामिल थे । देश में नौकरी की तलाश में शिक्षित युवाओं की फ़ौज खड़ी है । हमारी शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी ख़ामी यह है कि वह डिग्रीधारी निरक्षरों की संख्या बढ़ाने का काम कर रही है ।

यदि वाक़ई शिक्षा गुणवत्तापूर्ण और रोज़गार-मूलक होती तो चपरासी के पद के लिए इतने आवेदन नहीं आते । आज के युवा डिग्रीधारी निरक्षर की श्रेणी में इसलिए आ गये हैं कि उनमें अपनी ज्ञान परंपरा से कट जाने के कारण पारंपरिक रोज़गार से जुड़ने का साहस ख़त्म हो गया है । इसीलिए हर कोई नौकरी की तरफ़ भाग रहा है । यही वजह है कि आज चालीस फ़ीसद से अधिक खेती-किसानी से जुड़े लोग वैकल्पिक रोज़गार मिलने की स्थिति में खेती छोड़ने को तैयार हो जाते हैं ।

बेरोज़गारी को देश की मौजूदा शिक्षा व्यवस्था के स्तर से अलग करके नहीं देखा जा सकता । देश के सत्तावन फ़ीसद छात्रों के पास रोज़गार प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करने वाला कौशल ही नहीं है । नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन का भी मानना है कि भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य पर किसी भी सरकार ने समुचित ध्यान नहीं दिया । आर्थिक विकास का आधार मानवीय क्षमता का विकास है । यदि मानवीय क्षमता में वृद्धि नहीं होगी और कौशल विकास युक्त श्रम शक्ति उपलब्ध नहीं होगी तो आर्थिक विकास स्थायी रूप नहीं ले सकता ।

रोज़गार के नये अवसर उपलब्ध कराना और लोगों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना किसी भी सरकार का प्रमुख दायित्व है । सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि शिक्षा और रोज़गार को आपस में जोड़ा जाए । छात्रों के भीतर नये-नये कौशल की क्षमता पैदा की जाए । इसके लिए शिक्षा नीति में बदलाव ज़रूरी है ।

अपनी ज़िन्दगी के सुनहरे 20-22 वर्ष और लाखों रुपये शिक्षा में गंवाने के बाद देश के युवा जब हाथ में डिग्री लिए नौकरी के बाज़ार में पहुंचते हैं तो उन्हें पता चलता है कि उनकी डिग्री किसी काम की नहीं है । ऐसे में मन मसोस कर रोज़ी-रोटी के जुगाड़ में जो काम मिलता है, उसे ही वे अपनी क़िस्मत मान लेते हैं ।

इसी का नतीजा है कि इंजीनियर, एम०बी०ए०, एम०सी०ए० जैसे डिग्रीधारी भी आज बेरोज़गार हैं, या फिर किसी दूसरे ऐसे काम में लगे हैं जिनका उनकी हासिल शिक्षा और डिग्री से कोई सरोकार नहीं है । अकादमिक शिक्षा की तरह ही बाज़ार मांग के मुताबिक़ उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा भी उतनी ही ज़रूरी है । हाल में आए एक आंकड़े के मुताबिक़ देश के पिनच्यानवे फ़ीसद इंजीनियर डेवलपमेंट के क्षेत्र में काम करने योग्य नहीं है ।

सच तो यह है कि आज तक कोई ऐसा पैमाना नहीं बन पाया है जो यह बता सके कि किस विषय को पढ़कर कोई विद्यार्थी रोज़गार की कसौटी पर खरा उतर सकता है । बच्चों की रुचि की बात सब करते हैं, लेकिन जब विषय या संकाय चयन का मौक़ा आता है तो अपनी उसी सीमित विकल्पों वाली मनमर्ज़ी की परिपाटी को उस पर थोप दिया जाता है ।

यही वजह है कि जहां आई०आई०टी० से निकले इंजीनियर नाकारा साबित हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कौशल विकास के अभाव में देश के लोगों को बिजली मिस्त्री, प्लंबर, मैकेनिक, खाती, दर्जी आदि का काम करने वाले योग्य प्रशिक्षित लोगों के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है । तकनीकी शिक्षा पर ज़्यादा ज़ोर दिए जाने का ही नतीजा है कि आज भाषा और समाज विज्ञान के शिक्षकों की कमी महसूस की जाने लगी है । (सा० : 'जनसत्ता')

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

ईश्वरीय ग्रंथ : पवित्र क़ुरआन

■ अब्दुल्लाह अडियार

आमतौर से धार्मिक पुस्तकें दावा तो यह करती हैं कि वे इन्सानों को ख़ुदा से मिलाती हैं, लेकिन व्यवहारत: जो चीज़ हमारे सामने आती है, वह यह कि वे इन्सानों को शासकों, पूंजीवादियों और पुजारियों आदि के आगे झुका देती हैं और जनता के हाथों को ज़ंजीरों से जकड़ने और उनको बिल्कुल बेबस बना देने का काम भी यही किताबें करती हैं ।

शासकों को ईश्वर का अवतार, प्रतिनिधि और ईश्वर की छाया आदि उपाधियां दी गयीं । कुछ किताबों में आज़ादी की बात केवल कह दी गयी है, लेकिन व्यवहारत: इन्सान को इन्सानी गुलामी से मुक्ति दिलाने में वे असफल रही हैं । दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि ईशग्रंथ पवित्र क़ुरआन मजीद पुकार-पुकार कर कहता है कि इन्सान को इन्सान की बंदगी नहीं करनी चाहिए । इन्सान को इन्सान का अनुसरण नहीं करना चाहिए । इन्सान को इन्सान की पूजा नहीं करनी चाहिए । इन्सान को दूसरे इन्सानों के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहिए । क़ुरआन ने इन शिक्षाओं को इतने विस्तार से बयान किया है कि उसके मानने वाले की रगों में ये विचार ख़ून बनकर दौड़ने लगे ।



इस तरह क़ुरआन ने उपासना और बंदगी के योग्य केवल अल्लाह को बताया । उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज्ञापालन केवल अल्लाह का होना चाहिए और मदद भी सिर्फ़ उसी से मांगी जानी चाहिए ।

इस शिक्षा को ग्रहण करने से क्या होता है और व्यवहारत: क्या हुआ ? इन्सान पर से इन्सान की ख़ुदाई मिटा दी गयी । इन्सान का इन्सान पर ज़ुल्म, अत्याचार और हर प्रकार की ज़्यादती बन्द हो गयी । मानव-चिंतन और विकास पर रोक लगाने वाली रुकावटों को ख़त्म कर दिया गया ।

इन्सान को सच्ची आज़ादी मिली । हर एक ख़ुदी की आंख खुली । इन्सानी जीवन से अंधेरे ख़त्म हुए और प्रकाश की धारा प्रवाहित हो गयी ।

मानव चिंतन की फुलवारी में मधुर पवन के झोंके आये और इन्सान ख़ुशी और हर्ष से झूमने लगा । इन्सान पर से इन्सानी ख़ुदाई को पूर्णत: समाप्त करने की अद्वितीय सफलता जिस किताब के हिस्से में आयी, उस किताब का नाम है क़ुरआन मजीद !

इससे बढ़कर मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र मानव जाति ने कभी नहीं देखा । मेग्नाकार्टा से कहीं ज़्यादा, बहुत महान मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र अगर कोई है तो यह ग्रंथ क़ुरआन मजीद है ।

इस किताब ने ग़ुलामों के हाथों में पड़ी हुई ज़ंजीरों को तोड़ा । सारे इन्सानों को एक ही पंक्ति में समान अधिकारों के साथ ला खड़ा किया । इन्सानी आज़ादी का यह विधान, रोशनी का यह मीनारा सारे इन्सानों को संबोधित करके कहता है–

'इन्सानो ! हमने तुमको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारे क़बीले और वंश बना दिये ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो ।' (क़ुरआन, 49:13)

इस शिक्षा ने लोगों को बताया कि मानव-जाति एक कुटुम्ब है । एक-दूसरे को पहचानने के लिए ही क़बीले, वंश और परिवार बने हैं ।

■ जन्म के आधार पर ऊंच-नीच ।

■ जाति के आधार पर ऊंच-नीच । और

■ परिवार के आधार पर ऊंच-नीच ।

ये सभी भेदभाव जड़ से उखाड़ कर फेंक दिये गये । सारे इन्सान स्वतंत्र पैदा हुए हैं, वे सब समान अधिकारों और

क़ुरआन की अनुपम शिक्षाएं

समान जीवन के अधिकारी हैं ।

यहां सह प्रश्न पैदा होता है कि इन्सानों को दूसरों की हुकूमत से रिहाई दिलाकर और उन्हें समान अधिकार प्रदान करके क्या क़ुरआन ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया ? क्या उन्हें सरकश बना दिया ? क्या उन्हें ज़िम्मेदारियों से मुक्त कर दिया ? नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं ।

क़ुरआन ने अल्लाह का तक़वा (ईशभय) इख़्तियार करने की ताकीद की । केवल एक ख़ुदा से डरो दूसरों से न डरो, इसका आदेश दिया । इन शिक्षाओं के द्वारा ईशभय दिल में बिठाकर केवल ईश्वरीय क़ानूनों के आगे नतमस्तक होने का बुलन्द हौसला क़ुरआन ने इन्सान को दिया ।

अत्याचारी शासकों, अन्याय पर आधारित क़ानूनों, शोषण करने वालों, युद्ध, बीमारी, मौत, निर्धनता और दरिद्रता, धन और प्रतिष्ठा की क्षति, इन तमाम आशंकाओं से न डरने न घबराने और न डगमगाने शिक्षा एवं प्रशिक्षण देकर क़ुरआन ने इन्सान को बहादुर प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण बना दिया । इन्सान को इन महान गुणों से मालामाल करने वाली एक ही किताब है, और वह है, क़ुरआन मजीद ।

रेगिस्तान की गोद में पलने वाले अरब अपने क़बीलों के गृह-युद्ध में उलझे हुए थे । समकालीन सभ्यता और संस्कृति की उन्हें हवा तक न लगी थी । इस महान पुस्तक ने ऐसे लोगों को सभ्यता और सुशीलता से सुसज्जित कर दिया और उन्हें दुनिया पर शासन करने की क्षमता विवेक और उपायों से अवगत कराके उन्हें हर प्रकार से बहादुर बना दिया ।

यह बड़ा कारनामा वास्तव में क़ुरआन की क्रांतिकारी शिक्षाओं का परिणाम है । मैं इस सत्य की घोषणा बिना किसी असमंजस्य के हिमालय की चोटियों पर खड़े होकर करने के लिए तैयार हूं ।

इस दिव्य ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसने हर क़दम पर इस बात की ताकीद की है कि आदमी हर हालत में न्याय पर जमा रहे और कभी भी न्याय का दामन हाथ से न छूटने दे । हक़ और न्याय का दामन छोड़ने वालों को इसने आख़िरत (परलोक) के दर्दनाक अज़ाब से डराया है । आपके अपने रिश्तेदार का मामला हो तब भी उनके लिए हक़ और इन्साफ़ का दामन न छोड़ो । इस बात की ताकीद क़ुरआन करता है । इसी न्याय और इन्साफ़ की शिक्षा का असर है कि इस्लामी हुकूमत के अद्वितीय हक़ और इन्साफ़ के नमूने इतिहास में सुरक्षित हैं ।

इन्सान की आज़ादी, इन्सानी बराबरी और न्याय इन तीन उत्कृष्ट मौलित सिद्धांतों पर क़ुरआन मजीद मानव समाज का निर्माण करता है ।

क़ुरआन का एक और विशेष गुण देखिए–बहुत-सी धार्मिक पुस्तकें इन्सान के सांसारिक जीवन को पाप का जीवन कहती हैं । उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाने की, उसको त्याग देने की और उसको छोड़ देने की शिक्षा देती हैं ।

इसके विपरीत क़ुरआन यह कहता है कि इन्सान ख़ुदा की एक उत्कृष्ट रचना है । वह जीवन में मानव कर्तव्यों के महत्व को उजागर करता है, इन कर्तव्यों को पूरा करने की ताकीद करता है ।

वह कहता है कि इन कर्तव्यों को पूरा करने के परिणामस्वरूप तुम्हें एक पूर्ण जीवन मिलेगा और जीवन में सौंदर्य एवं आकर्षण पैदा होगा । हम कह सकते हैं कि मानव जीवन को आदर और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखने वाली किताब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद है ।

यह किताब ज़िन्दगी के झमेलों से भागने की शिक्षा नहीं देती, बल्कि यह किताब तो कहती है कि ज़िन्दगी के इसी संघर्ष से पूर्ण जीवन इन्सान को प्राप्त होता है ।

■ ऐसी विशेषताओं से परिपूर्ण यह किताब वास्तव में ईश्वरीय किताब है ।

■ ऐसी नेमतों से मालामाल करने वाली यह किताब अवश्य ही पवित्र किताब है ।

■ ऐसी बुलन्दियों तक पहुंचाने वाली यह किताब निस्संदेह महान किताब है ।

क़ुरआन ईश्वर का पैग़ाम आपके नाम

● संपादन प्रभाग

इस्लाम के मूल ग्रंथ 'क़ुरआन' का सरल व संक्षिप्त परिचय यह है कि यह ग्रंथ ईश्वर की ओर से उसके सारे बन्दों के लिए एक पैग़ाम, एक संदेश है । ऐसा पैग़ाम जो हर काल और युग के लिए, हर जाति, क़ौम, रंग, नस्ल, वर्ग, क्षेत्र और राष्ट्रीयता के इन्सानों के लिए समान व स्थायी रूप से महत्वपूर्ण व लाभकारक है । यह संदेश, संदेशवाहक (पैग़म्बर) हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर ईशवाणी के रूप में सन 610 ई॰ से सन 632 ई॰ तक 22 वर्षों की मुद्दत में इतिहास के पूरे प्रकाश में अवतरित हुआ और उसी मूल-लिपि में पूरी शुद्धता व विश्वसनीयता के साथ आज हर जगह उपलब्ध है ।

● ईश्वर का बन्दों के नाम यह पैग़ाम उनके सांसारिक जीवन और मौत के बाद पारलौकिक जीवन की सफलता तथा दुखों व समस्याओं से मुक्ति से संबंधित है । इसी के अनुकूल क़ुरआन में उसने इन्सानों को मार्गदर्शन, शिक्षाएं, नियम, आदेश व निर्देश दिए हैं ।

● क़ुरआन में ईश्वर की वास्तविकता और बन्दों से उसके यथोचित संबंध तथा इस संबंध के तक़ाज़े आदि विस्तार से बयान करके उन्हें पैग़ाम दिया गया है कि इन्सानों को पूजा-उपासना केवल उसी की करनी चाहिए और इसमें किसी को भी उसका शरीक-साझी नहीं बनाना चाहिए ।

● क़ुरआन का पैग़ाम है कि मनुष्य को अपनी वास्तविकता और सारे प्राणियों से श्रेष्ठ अपनी हैसियत को समझना चाहिए । अपने पैदा किये जाने का ईश्वरीय उद्देश्य जानना चाहिए । अपने तथा अन्य मनुष्यों, अन्य जीवधारियों और इस विशाल सृष्टि के बीच संबंध का सही बोध करना चाहिए । और इन सबके तक़ाज़े पूरे करने चाहिएं । ताकि यह संसार सुख, शांति और अम्न व इन्साफ़ का एक विशाल स्थल बन सके और यह सब कुछ ईशाज्ञापालन द्वारा ही संभव है ।

● इस नश्वर जीवन के बाद परलोक के शाश्वत जीवन में सफलता और मुक्ति (निजात) तथा स्वर्ग-प्राप्ति की मनोकामना पूरी हो, इसके लिए क़ुरआन में यह पैग़ाम दिया गया है कि ईश्वर ने तुम्हारे जीवन के हर क्षेत्र, हर गतिविधि, हर क्रिया-कलाप से संबंधित जो पथ-प्रदर्शन अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के माध्यम से किया है और जो क़ुरआन तथा पैग़म्बर (सल्ल॰) के जीवन-आदर्श में बहुत विस्तार से उल्लिखित है, उसका अनुपालन करो । क़ुरआन का पैग़ाम इस दृष्टिकोण से बड़ा अद्भुत, आकर्षक और प्रभावकारी है कि पाठक की सोई हुई शिथिल अंतरात्मा, मन-मस्तिष्क और चेतना व विवेक को झंझोड़ कर जागृत व सक्रिय कर देता है और उसे यह विश्वास हो उठता है कि यह सचमुच ईशवाणी ही है । किसी मनुष्य का कलाम ऐसा हो ही नहीं सकता ।

● क़ुरआन में आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षाएं भी हैं और भौतिक व सांसारिक शिक्षाएं भी । बेहतर से बेहतर दाम्पत्य जीवन, पारिवारिक जीवन तथा सामाजिक जीवन से संबंधित नियम भी है, और अच्छी से अच्छी आर्थिक, व्यावसायिक व राजनीतिक व्यवस्था के प्रारूपण के आदेश व निर्देश भी । यहां तक कि दूसरी क़ौमों से शांति-संधि, युद्ध व सुलह से संबंधित मार्गदर्शन, नियम और क़ानून भी हैं ।

● आधी मानवजाति–'नारी'–को कुछ अधिकार मिले (उसमें से भी प्राय: नारी की गरिमा-गौरव, शील, मर्यादा एवं उसके बहुमूल्य नारीत्व को ख़तरों में डालकर या आघात पहुंचाकर या तबाह-बरबाद करके), उस उपलब्धि का इतिहास सौ-डेढ़ सौ वर्ष से ज़्यादा पुराना नहीं है । लेकिन क़ुरआन के द्वारा 1400 वर्ष पहले ही मानवता को जो पैग़ाम ईश्वर ने दिया था उसके अंतर्गत नारी को अनेक अधिकार भी मिले और नारी-अपमान, बालिका-वध, नारी-प्रताड़ना, पुरुष-नारी- असमानता तथा नारी के शारीरिक तथा यौन-शोषण (Sexual exploitaion) का उन्मूलन भी हो गया । क़ुरआन के अध्ययन से, इतनी बड़ी क्रांति की यथार्थता और वास्तविकता का ज्ञान होता है, और पता चलता है कि इस संबंध में क़ुरआनी शिक्षाएं तथा नियम व क़ानून क्या और कैसे हैं एवं कितने प्रभावी व क्रांतिकारी हैं ।

● क़ुरआन ने इन्सानों को ईश्वर का यह पैग़ाम पहुंचाया

कि शराब, जुआ, सट्टा आदि तुम्हारे शारीरिक, नैतिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक और घातक हैं इसलिए ईश्वर ने इन सबको तुम्हारे लिए वर्जित व अवैध (Prohibitted, हराम), ठहराया है । जिन व्यक्तियों ने यह पैग़ाम स्वीकार कर लिया, जिस क़ौम ने और जिस समाज ने इस पैग़ाम पर अमल किया वह तबाही से तथा अनेक शारीरिक, नैतिक, चारित्रिक एवं सामाजिक रोगों व बीमारियों से सुरक्षित हो गया ।

● क़ुरआन का पैग़ाम है कि यह धर्ती और जो कुछ इसकी सतह पर या इसके भीतर है, ये आकाश व ब्रह्माण्ड और जो कुछ इनके बीच है, सब हम मनुष्यों के लिए बनाया गया है और हम मनुष्य, ईश्वर के लिए बनाए गये हैं । इसी पैग़ाम से ही हमें बहैसियत इन्सान अपनी महत्ता, महानता, श्रेष्ठता तथा उत्कृष्टता का बोध होता है ।

● क़ुरआन में ईश्वर का यह पैग़ाम भी है कि ऐ मेरे बन्दो, तुम सब एक ही 'प्रथम पिता' (आदम) की संतान हो अत: इन्सान की हैसियत में सब बराबर हो । तुम्हारे रंग, चेहरे, शरीर (डील-डौल), भाषा, जातियां-प्रजातियां, क़बीले आदि अलग-अलग इसलिए हैं कि एक-दूसरे की पहचान की जा सके । ये अन्तर व विभेद प्राकृतिक हैं । इनके आधार पर न कोई श्रेष्ठ, उच्च व सम्माननीय है न कोई तुच्छ, नीच व अपमाननीय । श्रेष्ठ और तुच्छ का मानदंड रंग, वर्ण, राष्ट्रीयता, धन-संपन्नता आदि नहीं, बल्कि नेकी, सदाचरण, सत्यनिष्ठा और ईशपरायणता है और ये सद्गुण ऐसे किसी भी व्यक्ति में हो सकते हैं जो अपने और ईश्वर तथा ईश्वर के अन्य बन्दों के बीच वह और वैसा संबंध निभाए जिसे ईश्वर ने निर्धारित किया है । यह पैग़ाम दरअस्ल वैश्वीय भाईचारे का आधार भी है । ऐसी बुनियाद, जिससे ज़्यादा मज़बूत बुनियाद हो नहीं सकती ।

● क़ुरआन के माध्यम से ईश्वर ने सारे इन्सानों को यह पैग़ाम दिया है कि मेरे बन्दो तुम सबके, एक-दूसरे पर ये और ये अधिकार तथा सबके एक-दूसरे के प्रति ये-ये कर्तव्य हैं । ये अधिकार दो और ये कर्तव्य पूरे करो । मां-बाप व संतान, पति व पत्नी, पड़ोसी, रिश्तेदार, अनाथ, निर्धन व दरिद्र, बीमार, मोहताज व ज़रूरतमंद, विधवा व असहाय, मालिक व नौकर, स्वामी व सेवक, शासक व शासित इत्यादि...सबके अधिकार देने या सबके प्रति अपने कर्तव्य अदा करने के बारे में उस वक़्त तुम से पूछा जाएगा, तुम्हारी पकड़ होगी जब तुम (महाप्रलय यानी क़यामत के बाद) परलोक जीवन में ईश्वरीय अदालत में खड़े किये जाओगे और तुम्हारे कर्मों के अनुसार या तो तुम को स्वर्ग प्रदान किया जाएगा या नरक की यातनाएं भोगनी होंगी ।

● मौजूदा दुनिया, जो अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तरों पर, मानवाधिकार-संस्थाओं व संगठनों से भरी होने के बावजूद मानव-अधिकार हनन की असंख्य और भीषण घटनाओं से भी भरी हुई है और इसका कोई समाधान संभव नज़र नहीं आता, उसके समक्ष यह विकल्प खुला हुआ है कि उसमें रहने-बसने वाले लोग अपने नाम ईश्वर के पैग़ाम को गंभीरता व निष्ठा से सुनें, उस पर विचार करें, उसे स्वीकार करें और उसके तक़ाज़े पूरे करने के लिए और उस पर अमल करने का आत्म-बल पैदा करें, संकल्प करें । क्रान्तिकारी फ़ैसला लें ।

● क़ुरआन, उसके संदेश तथा इस संदेश की कल्याण-कारिता पर, और इसका पाठ व अध्ययन करने पर किसी भी जाति-विशेष, क़ौम और समुदाय का एकाधिकार नहीं है । यह हवा, पानी, सूरज व चांद की रोशनी की तरह सबकी संपत्ति है । इसका पैग़ाम सबके नाम है, अत: आपके नाम भी !

क़ुरआन का संक्षिप्त परिचय

● क़ुरआन-ईशग्रंथ-शृंखला की अंतिम कड़ी-ईशवाणी के रूप में इस्लाम के अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर फ़रिश्ता (देवदूत) हज़रत जिबरील के माध्यम से अवतरित हुआ । क़ुरआन के अवतरण की मुद्दत 7,959 दिन है । (सौर्य वर्ष 21 साल, 9 महीने, 15 दिन...17.8.610-31.5.632 ई०)

● क़ुरआन की लिपि व भाषा अरबी है । अरबी प्राचीन होने के बावजूद आज भी एक जीवंत भाषा है । पूरे विश्व में क़ुरआन असंख्य इन्सानों द्वारा अरबी में ही पढ़ा, कंठस्थ (Memorise) किया जाता और समझा जाता है तथा इसकी तमाम शिक्षाओं पर अमल का क्रम हमेशा जारी है ।

● क़ुरआन के अर्थ का अनुवाद हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू और भारत की 14 राज्यीय भाषाओं समेत दुनिया की सैकड़ों भाषाओं में उपलब्ध है तथा इस पर टीका और भाष्य (तफ़्सीर) भी ।

● कुरआन में कुल 114 अध्याय (सूरह) हैं । कुछ बहुत छोटे, कुछ काफ़ी लंबे । मानव-लिखित पुस्तकों की तरह इसके अध्याय किसी विशेष विषय या उपविषय पर नहीं हैं, बल्कि अधिकतर अध्यायों में से हर एक में अलग-अलग विषयों पर चर्चा हुई है, क्योंकि इसका थोड़ा-थोड़ा अंश विभिन्न अवसरों पर, अलग-अलग आवश्यकता व परिस्थिति के अनुसार अवतरित होता था ।

● कुरआन का बयान 'लेखनशैली' में नहीं, बल्कि 'भाषणशैली' में है । अत: अक्सर ऐसा हुआ है कि संबोधक और संबोधित कौन है, प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट नहीं होता । इसका ज्ञान अवतरण की पृष्ठभूमि और संदर्भ से होता है या 'कुरआन-विज्ञान' के अन्य माध्यमों से । एक ही बात, कई बार दोहराई भी गयी है ताकि इन्सान का विवेक ईश्वरीय शिक्षा ग्रहण करने के लिए हर समय, हर परिस्थिति में जागृत रहे ।

● कुरआन का पहला अध्याय (सूरह) बन्दों को ईश्वर द्वारा सिखाई गयी (बन्दों की ज़बान में) एक याचना, प्रार्थना (दुआ) है, कि हे ईश्वर हमें वह सीधा मार्ग दिखा जिस पर चलने वाले लोग तेरे कृपा-पात्र हुए और पथ-भ्रष्ट न हुए, न तेरे प्रकोप के भागी हुए । इस प्रार्थना के जवाब में ईश्वर ने अपनी कृपा व अनुकम्पा से कुरआन के रूप में वह पैग़ाम अपने बन्दों को दिया जो अगले 113 अध्यायों में सविस्तार समाहित है ।

● कुरआन में ईश्वर ने फ़रमाया है कि उसने मानवजाति के आरंभ से ही हर क़ौम में पथ-प्रदर्शक (हादी) अर्थात रसूल, पैग़म्बर, नबी, Prophets भेजे हैं । इस्लामी विद्वानों के अनुसार उनकी संख्या लगभग सवा लाख है । सब पर ईमान लाना, इस्लाम में अनिवार्य है । अलबत्ता उनमें से सिर्फ़ लगभग 25-26 रसूलों के नाम कुरआन में उल्लिखित हैं । इनके अलावा बाक़ी रसूलों का ब्यौरा, उनका जीवन-आदर्श, उनकी शिक्षाएं आदि कालचक्र में खोकर रह गयीं । कुरआन कहता है कि सबका मूल-आह्वान और अस्ल मिशन एक ही था...एकेश्वरवाद पर आधारित सत्य-धर्म । यह 'सत्य-धर्म' सदा एक ही रहा है ।

● कुरआन का जो अंश अवतरित होता, ईश्वर के विशेष प्रयोजन से हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को याद हो जाता (कुरआन, 75:16)। आप उसे अपने साथियों को सुनाकर लिखवा भी देते । बहुत से साथी उन अंशों को कंठस्थ (Memorise) भी कर लेते । अवतरण पूरा हो जाने के बाद आप (सल्ल॰) की निगरानी में ही संपूर्ण कुरआन (ईशादेशानुसार) क्रमबद्ध और संकलित कर लिया गया । अल्लाह ने फ़रमाया था, "हम इसे अवतरित कर रहे हैं और हम ही इसकी हिफ़ाज़त भी करेंगे" (कुरआन, 15:9), अर्थात पहले के ईश-ग्रंथों में मानवीय हस्तक्षेप या लापरवाही से जो परिवर्तन, कमीबेशी आदि हुई, उससे हिफ़ाज़त । फिर सुरक्षित, संरक्षित, शुद्ध व संपूर्ण कुरआन की प्रतियां तैयार कराके, अगले दशकों में इस्लामी राज्य के सात प्रमुख स्थानों पर भिजवा दी गयीं । उनमें से एक-एक प्रति आज भी ताशक़न्द व इस्तंबोल के संग्रहालयों में सुरक्षित है । आज विश्व भर में मौजूद अरबों प्रतियां शब्द-शब्द उसी मूल-प्रतिलिपि की नक़ल हैं ।

● ब्रह्माण्ड के सृजन व संचालन और स्वयं मनुष्य के (शारीरिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक) अस्तित्व की रचना में जो तत्वदर्शिता, पूर्णता (Perfection), संतुलन, नियमबद्धता, सूक्ष्मदर्शिता, अनुशासन तथा अद्भुत्तता पायी जाती है उसे कुरआन में ईश्वर ने भूगोल (Geography), भूगर्भशास्त्र (Geology), जीव-विज्ञान (Biology), खगोल-विद्या (Astronomy), समुद्र-विज्ञान (Oceanology), जल-विज्ञान (Hydrology), ब्रह्माण्डकी (Cosmology), भ्रूण-विज्ञान (Embryology), और मानव-शरीर-विज्ञान (Antonomy) आदि को संक्षिप्त व सांकेतिक शैली में तर्क व प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करके 'एकेश्वरवाद' का आह्वान किया गया है कि ऐसे सर्वसक्षम, सर्वसमर्थ, सर्वतत्वदर्शी, सर्वशक्ति-संपन्न स्रष्टा, संयोजक, पालक-पोषक ईश्वर के बन्दों को चाहिए कि उसके स्वामित्व, सत्ता और प्रभुत्व में किसी को शरीक न करें, उसके पूज्य-उपास्य होने में, और अपना शीश नवाने, स्वयं को समर्पित कर देने में किसी दूसरे को उसका साझीदार न बनाएं । मात्र उसी के दास, मात्र उसी के आज्ञापालक बनकर जीवन बिताएं ।

● कुरआन में, पृथ्वी पर मानवजाति के आरंभ से लेकर, इसके अवतरण-काल तक की विभिन्न क़ौमों, व्यक्तियों, समृद्ध व उन्नतशील जातियों एवं शक्तिशाली सम्राटों आदि के उत्थान व पतन और विनाश का इतिहास (History) बार-बार बयान करके लोगों को सचेत किया गया है कि ईश्वर के प्रति उद्दंडता व सरकशी, शिर्क, ईश्वर व बन्दों के अधिकार-हनन, अन्याय, अत्याचार तथा अनैतिकता आदि का बहुत ही बुरा अंजाम सामने आना है ।

लो ब्लड शुगर में सावधानी

■ संपादन प्रभाग

लो ब्लड शुगर आमतौर पर उन लोगों में ज़्यादा देखा जाता है, जो अपना ब्लड शुगर स्तर सामान्य ब्लड शुगर स्तर के आसपास रखते हैं । इसलिए हमेशा यह अच्छा रहेगा कि फास्टिंग ब्लड शुगर स्तर और भोजन के बाद का ब्लड शुगर स्तर 20 से 30 मिलि ग्राम प्रतिशत ज़्यादा रखा जाए । उदाहरण के लिए इंसुलिन से इलाज करवा रहे या डायबिटीज की गोलियां ले रहे व्यक्ति को अपना फास्टिंग ब्लड शुगर स्तर 120 से 140 मिलि ग्राम प्रतिशत के बीच में और भोजन करने के बाद का ब्लड शुगर स्तर 140 मिलि ग्राम प्रतिशत से ज़्यादा रखना चाहिए ।

● ख़ून में शक्कर की कमी हो जाना अर्थात हाइपोग्लाइसीमिया डायबिटीज की सबसे आम समस्या है । ख़ून में शर्करा का स्तर निम्नलिखित कारणों से गिर सकता है–

(क) डायबिटीज का इलाज करते हुए इंसुलिन या डायबिटीज की गोलियां ज़रूरत से ज़्यादा ले लेना ।

(ख) ज़रूरत से कम भोजन करना ।

(ग) पर्याप्त भोजन न करते हुए बहुत अधिक व्यायाम करना ।

लो ब्लड शुगर के लक्षण

● रक्त में ग्लुकोज़ का स्तर यदि एक सीमा से ज़्यादा गिर जाता है तो इससे भूख लगना, कंप-कंपी, कमज़ोरी, पसीना आना, घबराहट, चिड़चिड़ापन, मतिभ्रम और मुंह के आसपास तथा उंगलियों में चिंटियां-सी चलने का एहसास आदि लक्षण हो सकते हैं ।

● सामान्य रूप से रक्त में शक्कर का स्तर 70 से 110 मिलि ग्राम प्रतिशत होता है । किन्तु जब यह 50 मिली ग्राम से नीचे चला जाता है तो ऊपर बताए गये लक्षण प्रकट होते हैं । वैसे हर व्यक्ति का सामान्य ब्लड शुगर स्तर अलग-अलग होता है । कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें तब तक कोई लक्षण नहीं सताता जब तक कि उसके रक्त में ग्लुकोज़ का स्तर

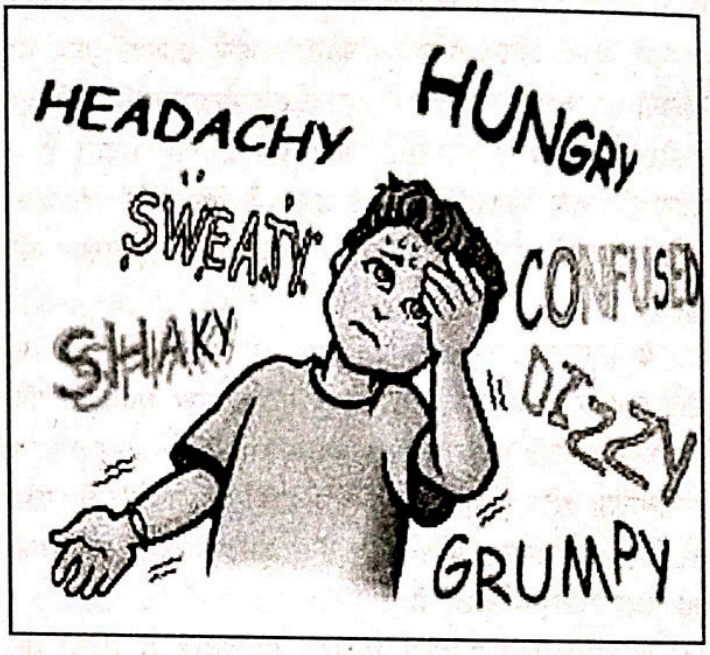

40 या 30 मिली ग्राम प्रतिशत से भी नीचे न गिर जाए ।

● लो ब्लड शुगर के लक्षण उन लोगों में भी उभर सकते हैं, जिनका ब्लड शुगर स्तर बहुत ऊंचा (200 से 300) मिली ग्राम प्रतिशत) होता है और जिनका ब्लड शुगर स्तर बहुत तेज़ी से नीचे गिरता है । हालांकि वह बहुत ज़्यादा नीचे नहीं गिरता ।

● उदाहरण के लिए जिस व्यक्ति का ब्लड शुगर स्तर 400 मिली ग्राम प्रतिशत रहता है, उसके शरीर में हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण उसका ब्लड शुगर स्तर 150 मिली ग्राम प्रतिशत तक गिर जाने पर परेशान कर सकता है । यह गिरावट बहुत तेज़ी से होनी चाहिए ।

शारीरिक प्रतिक्रिया

● जब कभी ब्लड शुगर का स्तर सामान्य से नीचे गिरता है तो प्रतिक्रिया के रूप में ग्लुकागन नामक हार्मोन पेनक्रियाज़ से और एड्रिनालिन नामक हार्मोन एड्रिनाल ग्लेंड से निकलते हैं । ये दोनों हार्मोन जिगर और मांसपेशियों में से ग्लुकोन को जारी करने में सहायता करते हैं ।

● ये शरीर का रक्षा तंत्र है जो शरीर में ब्लड शुगर का स्तर बनाए रखने में तुरंत सहायता करता है और इस कारण

प्रभावित व्यक्ति को पसीना आने, चक्कर आने, सिरदर्द, जी मिचलाने और दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने जैसे लक्षण महसूस होते हैं । ये सभी लक्षण एड्रिनालिन नामक हार्मोन के निकलने से होते हैं ।

● फिर भी यदि ब्लड शुगर के स्तर में गिरावट जारी रहती है तो प्रभावित व्यक्ति को घबराहट सिर दर्द नींद की झपकी आने और बेहोशी (कोमा) जैसे लक्षणों का भी सामना करना पड़ सकता है । जब हाइपोग्लाइसीमिया बहुत गंभीर हो जाता है तो रोगी को दौरे भी पड़ सकते हैं । बहुत ही कम मामलों में ऐसा होता है कि शरीर के एक ओर के अंगों में कमज़ोरी जैसे पक्षाघात के से लक्षण भी महसूस हों ।

● इसलिए किसी गंभीर स्थिति को पैदा होने न देने के लिए हाइपोग्लाइसीमिया का इलाज तुरंत करना चाहिए । यह याद रखना चाहिए कि जब व्यक्ति इंसुलिन का इंजेक्शन या डायबिटीज की गोली ले लेता है तो रक्त में ग्लुकोज़ के स्तर को गिरने का उसका प्रभाव तब तक जारी रहता है, जब तक वह दवा रक्त में रहती है ।

● इसलिए हाइपोग्लाइसिमिया को बढ़ाने से रोकने के लिए ऊपर बताए गये रोगी को दिन में थोड़ा-बहुत अतिरिक्त नाश्ता (बिस्किट्स आदि) लेते रहना चाहिए । हाइपोग्लाइसीमिया के ज़्यादातर दौरे बहुत हल्के होते हैं और उनका आसानी से पता नहीं चलता ।

● अध्ययनों से यह पता चला है कि डायबिटीज के लक्षण वास्तव में प्रकट होने से पहले रोगी में हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण प्रकट होते हैं । लो ब्लड शुगर के कुछ आरंभिक लक्षण हैं–विवेकहीनता, भावनात्मक परेशानी और शारीरिक कार्यों पर नियंत्रण न रहना । कुछ लोग अनिश्चिय या मतिभ्रम की वजह से यह फ़ैसला नहीं कर पाते कि वे मिठाई खाएं या नहीं । इसलिए यदि आपके परिवार में किसी को लो ब्लड शुगर के लक्षण सताएं तो उसे कुछ मीठा पेय पीने के लिए दीजिए । फिर वह उसे तसल्ली देने के लिए ही क्यों न हो । यदि ऐसा व्यक्ति मीठा पेय लेने से इन्कार कर दे तो परिवार के बाक़ी सदस्य उसे पीने के लिए उस पर दबाव डालें ।

बच्चों में लो शुगर

● इंसुलिन का इंजेक्शन लेने वाले लोगों में हाइपोग्लाइसीमिया होना आम बात है । बच्चों में होने वाले डायबिटीज का इलाज केवल इंसुलिन से ही किया जाना चाहिए ।

● कभी-कभी बच्चों में लो ब्लड शुगर के लक्षणों को पहचानना बहुत मुश्किल हो जाता है । जब एक शांत बच्चा एकाएक बहुत ज़्यादा हरकत में आ जाए और चिड़चिड़ा हो जाए तो लो ब्लड शुगर के लक्षणों की संभावना हो सकती है । अस्वाभाविक या अप्रासंगिक व्यवहार के कारण हो सकता है, बच्चा अपने रक्त की जांच आसानी से नहीं करवाने दे । किन्तु उसे एक गिलास मीठा शरबत या कोई अन्य पेय पिला देने से वह अपने रक्त की जांच करवाने में आपसे सहयोग कर सकता है ।

शराब और लो शुगर

● कुछ लोग हाइपोग्लाइसीमिया के कारण इस प्रकार का व्यवहार कर सकते हैं जिस प्रकार का व्यवहार कोई व्यक्ति शराब के नशे में करता है । उनका दिमाग़ घूमा रहता है । ठिकाने नहीं रहता और उनका व्यवहार अनियमित या सनकी जैसा हो जाता है । शरीर में जाने के बाद शराब शरीर के भंडार में से शक्कर को जारी नहीं होने देती और इस प्रकार ब्लड शुगर का स्तर सामान्य से नीचे गिर जाता है । इसलिए जिन लोगों को डायबिटीज हो, उन्हें शराब से दूर रहना चाहिए, ख़ासकर मोटर गाड़ी चलाते समय ।

सोमोजाई प्रभाव

● जब किसी व्यक्ति का ब्लड शुगर स्तर सामान्य से कम हो जाता है तो उसके शरीर में से कुछ हार्मोन निकलते हैं, जो ब्लड शुगर के स्तर को कुछ समय के लिए ऊंचा रखते हैं ।

ब्लड शुगर में पल्टी मारकर होने वाला यह चढ़ाव सोमोजाई प्रभाव के नाम से जाना जाता है । इस प्रभाव को यह नाम इसके खोजकर्ता डॉक्टर के नाम पर दिया गया है ।

● लो ब्लड शुगर के लक्षणों से परेशान लोग जब थोड़ी देर बाद अपने रक्त की जांच करवाते हैं तो उन्हें यह जानकर आश्चर्य होता है कि उनकी रक्त शर्करा तो बढ़ी हुई थी और तब वे सोच सकते हैं कि उनको सताने वाले लक्षण हाई ब्लड शुगर की वजह से ही थे । यदि वे उस समय इंसुलिन या एंटीडायबीटिक गोलियां लेने की कोशिश करते हैं, तो उन्हें और अधिक हाइपोग्लाइसीमिया झेलने की नौबत आ सकती है ।

● बहुत अधिक हाइपोग्लाइसीमिया हो जाने के बाद पलट कर होने वाला हाई ब्लड शुगर स्तर 12 से 24 घंटे तक रह सकता है । कुछ रोगियों में पलट कर चढ़ने वाले हाई ब्लड शुगर की यह अवधि कुछ ज़्यादा भी हो सकती है, किन्तु यह स्थिति अपने आप ठीक हो जाती है और इसे ठीक करने के लिए अतिरिक्त इंसुलिन या एंटीडायबीटिक गोलियां लेने की ज़रूरत नहीं है ।

● रोगी को सामान्य मात्रा में भोजन करना चाहिए और शरीर पर उसके प्रभाव का ध्यान रखना चाहिए । जिस व्यक्ति में सोमोजाई प्रभाव नज़र आये, उसे अतिरिक्त इंसुलिन देना ख़तरनाक हो सकता है ।

लो ब्लड शुगर की पहचान

● यदि किसी व्यक्ति को मतिभ्रम, सिरदर्द, पसीना आना या दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कना जैसे लो ब्लड शुगर के परंपरागत लक्षण महसूस हों तो उसे अपने मूत्र का स्ट्रिप टेस्ट करके अपने संदेह की पुष्टि कर लेनी चाहिए । हो सकता है जांच में शुगर आये । फिर मूत्र की जांच बहुत विश्वसनीय नहीं हो सकती है ।

● हाइपोग्लाइसीमिया का सही-सही पता लगाने के लिए ब्लड ग्लुकोज़ टेस्ट करवाना ज़रूरी है । हो सकता है जब लक्षण प्रकट हुए हों तब ब्लड ग्लुकोज़ स्तर बहुत कम नहीं रहा हो । (शायद 60 मिलि ग्राम प्रतिशत से ज़्यादा रहा हो) तब भी संभावना है कि रोगी में हाइपोग्लाइसीमिया रहा हो । एक बार व्यक्ति को हाइपोग्लाइसीमिया की शिकायत हो जाने के बाद उसे दिन में 3-4 बार अपने रक्त की जांच करवानी चाहिए और ब्लड शुगर के स्तर का पैटर्न रखना चाहिए ।

● उदाहरण के लिए सुबह के नाश्ते या ब्रेकफास्ट से पहले ब्लड ग्लुकोज़ का स्तर 360 मिली ग्राम प्रतिशत, दोपहर के भोजन से पहले 230 मिली ग्राम प्रतिशत शाम को 75 मिली ग्राम प्रतिशत और रात को सोते समय 330 मिली ग्राम प्रतिशत का अर्थ हो सकता है कि रोगी में शाम के समय हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण हो जाते हैं और उसी के अनुसार उसके इलाज की ज़रूरत होती है ।

● यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हाइपोग्लाइसीमिया के ज़्यादातर दौरे दोपहर के भोजन में देरी, सुबह का नाश्ता न करने, रात का भोजन कम करने, बहुत अधिक व्यायाम करने या बहुत अधिक इंसुलिन लेने से होते हैं । इसके अलावा कुछ मामलों में ऊपर बताया गया कोई भी कारण ज़िम्मेदार नहीं होता । ऐसे में रोगी को शराब के इस्तेमाल जैसे कारणों पर भी विचार करना चाहिए । डायबिटीज का रोगी जब शराब पी लेता है तो उसका शरीर अपने भंडार में से शक्कर इस्तेमाल नहीं कर पाता और रोगी को हाइपोग्लाइसीमिया हो जाता है ।

● हाइपोग्लाइसीमिया होने का एक दूसरा कारण है कि इंसुलिन का इंजेक्शन ऐसी जगह लगा दिया जाता है, जहां चर्बी या मांस कम होता है और इंसुलिन शरीर में बहुत जल्दी समा जाता है । यदि आपको हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण सताने लगें और आप में उसके कोई प्रकट कारण नज़र नहीं आये तो आपको तुरंत कुछ मीठा खा या पी लेना चाहिए ।

इलाज

हाइपोग्लाइसीमिया का सबसे अच्छा इलाज उसे होने देने से रोकना है । डायबिटीज के रोगियों को अपने आहार में कुछ परिवर्तनों से बचना चाहिए और डायबिटीज का रोगी यदि इंसुलिन ले रहा हो तो उसे उपवास नहीं करना चाहिए, डायबिटीज के रोगी को इंसुलिन या डायबिटीज की गोली लेने के तुरंत बाद खाना-खाना चाहिए (डायबिटीज की गोली या इंसुलिन भोजन के बाद लिया जाए तो ज़्यादा बेहतर होगा)।

● यदि किसी को पसीना आना सिरदर्द, भूख लगना, कमज़ोरी, चक्कर आना, दिमाग़ ठीक से काम न करना या ऐसा ही कोई लक्षण, जो उसे समझ न आये, सताने लगे अर्थात लो ब्लड शुगर का लक्षण सताने लगे तो उसे तेज़ी से शरीर में घुल-मिल जाने वाला मीठा पेय या मीठी चीज़ लेनी चाहिए । उसके बाद 10 मिनट तक उस मीठे को शरीर में समाने का इन्तिज़ार करना चाहिए और यदि कोई आशाजनक सुधार न दिखे तो फिर से थोड़ा मीठा खाना या पीना चाहिए ।

● आमतौर पर मीठा पेय के रूप में संतरे का रस शरबत या रूह अफ़ज़ा उपलब्ध होते हैं । यदि ये न मिलें तो एक गिलास पानी में 2-3 चम्मच शक्कर घोल कर पिला देना चाहिए । बाज़ार में बिकने वाला ग्लुकोज़ पावडर डायबिटीज के रोगी को सदा अपने साथ रखना चाहिए, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे तुरंत घोलकर लिया जा सके ।

● लो ब्लड शुगर का इलाज करने के लिए कम

कैलोरी वाले आहार पेयों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, यदि आप यात्रा कर रहे हैं तो आप अपनी जेब में कुछ मिठाई या चाकलेट रखकर चलिए और जैसे ही आपके भोजन में देर होने के कारण हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण महसूस होने लगें, तुरंत उस चाकलेट या मिठाई का इस्तेमाल कीजिए, जो लोग किसी अपरिहार्य स्थिति के कारण दोपहर का भोजन या रात का भोजन नहीं ले पाये उन्हें 2 ग्लुकोज़ बिस्कुट के साथ एक गिलास दूध पी लेना चाहिए ।

● जब एक बार आप लो ब्लड शुगर का इलाज करने के लिए शक्कर का इस्तेमाल करेंगे तो अपने दो नियमित भोजन के बीच में थोड़ा नाश्ता अवश्य करें, क्योंकि हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण फिर प्रकट हो सकते हैं और ख़ून में शक्कर का स्तर सामान्य बनाए रखने के लिए ऐसे व्यक्ति को काम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट की ज़रूरत होती है ।

● लेकिन, लो ब्लड शुगर के लक्षणों का इलाज करने में जितनी देर लगाएंगे, उतना ही ज़्यादा उनका दिमाग़ घूमने की संभावना ज़्यादा हो जाएगी और एक बार ऐसे रोगी का दिमाग़ घूम जाए तो उसका इलाज करना मुश्किल हो जाता है ।

● गंभीर हाइपोग्लाइसीमिया के मामले में, जब रोगी बेहोश हो जाता है या कोमा में चला जाता है तो बिना ज़्यादा समय गंवाए उसे तुरंत किसी अच्छे अस्पताल में ले जाना चाहिए, बेहोश रोगी के मुंह में कोई तरल पदार्थ मत डालिए, क्योंकि तरल पदार्थ बेहोश रोगी की सांस की नली में जा सकता है और उसके फेफड़ों में तकलीफ़ हो सकती है । इंसुलिन का इंजेक्शन लेने वाले डायबीटिक रोगियों को हमेशा अपने साथ 25 प्रतिशत ग्लुकोज़ के कुछ एम्पल इंटरवीनस स्काल्प वेन, कैनुला और 20 सीसी सीरिंज रखना चाहिए, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसके लिए इस्तेमाल किया जा सके ।

ग्लुकागन इंजेक्शन

● इंसुलिन की तरह पेनक्रियाज़ के अल्फ़ा सैल द्वारा पैदा किया जाने वाला हार्मोन ग्लुकेगन है । यह केवल इंजेक्शन के रूप में ही मिलता है । ग्लुकागन आसानी से आपका कोई पारिवारिक मित्र या डॉक्टर वैसे ही इंजेक्शन द्वारा आपको दे सकता है, जैसे इंसुलिन त्वचा के नीचे दिया जाता है । तीव्र हाइपोग्लाइसीमिया का यह बहुत ही प्रभावकारी

लो ब्लड शुगर

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य लो ब्लड शुगर लेवल से रोगी के स्वास्थ्य को हाई ब्लड शुगर लेवल के मुक़ाबले तुरंत ख़तरा ज़्यादा हो सकता है । यह परेशानी आमतौर पर भोजन न करने, शारीरिक मेहनत बहुत ज़्यादा करने, दर्द निवारक दवा लेने तथा डायबिटीज़ के रोगियों द्वारा ज़्यादा इंसुलिन या डायबिटिक गोलियां ले लेने के कारण होता है ।

बहुत ज़्यादा लो ब्लड शुगर के कुछ लक्षण

(हाइपोग्लाइसीमिया)

- बहुत अधिक भूख लगना ।
- शरीर में कंपकंपी छूटना ।
- कमज़ोरी ।
- उंगलियों के अगले सिरों पर झनझनाहट होना
- सिर दर्द
- काम के प्रति उदासीनता
- शरीर निढाल होना
- पसीना ज़्यादा आना
- मूर्छा हो जाना
- दिल जल्दी-जल्दी धड़कना
- नज़र धुंधलाना या डबल दिखना
- असामान्य व्यवहार
- मतिभ्रम (कुछ न सूझना)
- इससे कैसे निबटें ?

इसका पहला इलाज है, ब्लड शुगर का लेवल तुरंत बढ़ाया जाए ।

रोगी तीन-चार चम्मच पिसी शक्कर खाकर या उसका शरबत पीकर ब्लड शुगर का लेवल बढ़ाए ।

रोगी को अपनी जेब में या बैग में 3-4 चम्मच पिसी शक्कर हमेशा रखनी चाहिए ताकि संकट के समय उसका उपयोग किया जा सके । (यदि ब्लड शुगर का स्तर तुरंत ठीक न किया गया तो ब्लड शुगर का स्तर बहुत ज़्यादा गिर जाने से रोगी मूर्छित भी हो सकता है)।

इलाज है, क्योंकि यह जिगर में इकट्ठा शक्कर को जारी कर देता है और शरीर में शक्कर के स्तर को तुरंत संतुलित कर देता है ।

● इसलिए डायबिटीज के रोगी को ग्लुकागन के इंजेक्शन भी अपने इमरजेंसी किट में तैयार रखने चाहिए । हो सकता है आपको ग्लुकागन इंजेक्शन की ज़रूरत वैसे ही न पड़े जैसे आपको आग बुझाने के उपकरण की ज़रूरत नहीं पड़ती । किंतु यह डायबिटीज के रोगी के साथ हमेशा उपलब्ध अवश्य रहना चाहिए ।

● तीव्र हाइपोग्लाइसीमिया का मरीज़ एक बार होश में आ जाए तो उसे मुंह के रास्ते दूसरे पोषक तत्व दिये जा सकते हैं । ग्लुकागन का इस्तेमाल इंसुलिन के इस्तेमाल से कहीं ज़्यादा सरल है, क्योंकि ग्लुकेगन के लिए यूनिट गिनने की आवश्यकता नहीं होती । यूनिट के बारे में चिंता किये बिना ग्लुकागन का पूरा एम्पल रोगी को दिया जा सकता है ।

क्या हाइपोग्लाइसिमिया हानिकारक है ?

● हल्की-फुल्की प्रतिक्रिया से यह पता चलता है कि डायबिटीज पर नियंत्रण अच्छा है और शक्कर का इस्तेमाल करके हाइपोग्लाइसीमिया को दूर किया जा सकता है । यदि आप इंसुलिन लेते हैं तो यूनिट्स की गिनती करते समय आपको सावधानी बरतनी चाहिए । इंसुलिन देने वाले को सीरिंज पर लगे यूनिट के निशान और इंसुलिन के वायल पर लिखे प्रति मिलि लीटर यूनिट्स का भी ध्यान रखना चाहिए । इंसुलिन का इंजेक्शन लेने के तुरंत बाद सुबह का नाश्ता ले लेना चाहिए ।

● बहुत तीव्र और लंबे समय से चला आ रहा हाइपोग्लाइसीमिया आपके दिमाग़ को स्थायी क्षति पहुंचा सकता है । बहुत से बूढ़े लोग जो इंसुलिन इंजेक्शन लेकर ही जीवित रहते हैं, वे अपने पड़ोसियों के साथ खुले हुए हो सकते हैं या होने चाहिए और उन्हें अपने पड़ोसियों को लो ब्लड शुगर के दौरे के बारे में सब कुछ समझा देना चाहिए तथा यह भी बता देना चाहिए कि उनके बेहोश जो जाने पर क्या किया जाए ।

डायबिटीज के बिना लो ब्लड शुगर

● यदि आपको डायबिटीज नहीं भी है तो भी आपको हाइपोग्लाइसीमिया हो सकता है । इस अवस्था को रिएक्टिव हाइपोग्लाइसिमिया कहते हैं और यह डायबिटीज रहित लोगों में इंसुलिन बहुत अधिक मात्रा में निकल जाने और उसके द्वारा ब्लड शुगर को सामान्य से ज़्यादा ख़र्च कर देने के कारण पैदा होता है ।

● इसके लक्षण उन लोगों में ज़्यादा दिखायी देते हैं जिन्हें डायबिटीज तो नहीं है किंतु जिनमें डायबिटीज होने की संभावना अवश्य है, क्योंकि उनके परिवार में किसी न किसी को डायबिटीज रही हो ।

● डायटिंग करने वालों या धार्मिक कारण से उपवास करने वाले कुछ लोगों में भी लो ब्लड शुगर के लक्षण दिखायी दे सकते हैं । कभी-कभी वज़न कम करने के लिए ली गयी गोलियों की वजह से भी लो ब्लड शुगर के लक्षण उभर सकते हैं । इन सबका एकमात्र इलाज अपने आहार को ठीक करना और अपने ब्लड शुगर स्तर की ठीक से जांच करवाना है । बहुत कम मामलों में लो ब्लड शुगर का कारण पेंक्रियाज़ में होने वाला ट्यूमर होता है और इसका कोई प्रत्यक्ष कारण नज़र नहीं आता ।

कविता

हमेशा से

कुछ चीज़ें कुछ बातें अपने यहां
हमेशा से होती चली आयी हैं !
उनमें यदि कोई बदलाव हुआ है
तो बिगाड़ में सुधार में नहीं !
जैसे अफ़सर के चपरासी का
रुतबा अफ़सर से भी बड़ा होता है ।
नेता और नौकरशाह का बेटा
अपने को हर क़ानून से ऊपर
और परे मानता है !
वृद्धाश्रमों में बुज़ुर्गों के साथ
और अनाथालयों में अनाथ
बच्चों के साथ अमानवीय
व्यवहार एक आम बात है !
अपवादों को छोड़कर एक सामान्य
सरकारी कर्मचारी का रवैया
आम लोगों के साथ अपमानजनक
ही होता है...।

ओमप्रकाश बजाज
पोस्ट बाक्स नं॰ 595, जी॰पी॰ओ॰, इंदौर (म॰प्र॰)

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY



گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

دافع

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گٹھیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

साइकिल की सवारी

■ सुदर्शन

भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूं, तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है । सोचता हूं, भगवान ने ये दोनों विद्याएं भी ख़ूब बनायी हैं । एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है । मगर तमाशा देखिये, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएं नहीं लिखी गयी हैं । न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं । पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गयी है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते हैं ।

शायद 1932 की बात है कि बैठे-बैठे ख़याल आया कि चलो साइकिल चलाना सीख लें और इसकी शुरुआत यूं हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा । अब आपसे क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे ख़याल हमारे मन में उठे । सोचा, क्या हम ही ज़माने भर के फिसड्डी रह गये हैं ! 'सारी दुनिया चलाती है, ज़रा-ज़रा से लड़के चलाते हैं, मूर्ख और गंवार चलाते हैं, हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े-लिखे हैं, क्या हमीं नहीं चला सकेंगे ? आख़िर इसमें मुश्किल क्या है ? कूदकर चढ़ गये और ताबड़-तोड़ पांव मारने लगे और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है, तब टन-टन करके घंटी बजा दी, न हटा तो क्रोधपूर्ण आंखों से उसकी तरफ़ देखते हुए निकल गये । बस, यही तो सारा गुर है इस लोहे की सवारी का । कुछ ही दिनों में सीख लेंगे । बस महाराज, हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, परवाह नहीं ।

दूसरे दिन हमने अपने फटे-पुराने कपड़े तलाश किये और उन्हें ले जाकर श्रीमती जी के सामने पटक दिया कि इनकी ज़रा मरम्मत तो कर दो ।

श्रीमती जी ने हमारी तरफ़ अचरज भरी दृष्टि से देखा और कहा, "इन कपड़ों में अब जान ही कहां है कि मरम्मत करूं ! इन्हें तो फेंक दिया था । आप कहां से उठा लाए ? वहीं जाकर डाल आइये ।"

हमने मुस्कुराकर श्रीमती जी की तरफ़ देखा और कहा, "तुम हर समय बहस न किया करो । आख़िर मैं इन्हें ढूंढ़-ढांढ़कर लाया हूं तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया । कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो ।"

मगर श्रीमती जी बोलीं, "पहले बताओ, इनका क्या बनेगा ?"

हम चाहते थे कि घर में किसी को कानों-कान ख़बर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएं और इसके बाद जब इसके पंडित हो जाएं, तब एक दिन जहांगीर के मक़बरे को जाने का निश्चय करें । घर वालों को तांगे में बिठा दें और कहें, "तुम चलो, हम दूसरे तांगे में आते हैं ।" जब वे चले जाएं, तब साइकिल पर सवार होकर उनको रास्ते में मिलें । हमें साइकिल पर सवार देखकर उन लोगों की क्या हालत होगी ! हैरान हो जाएंगे, आंखें मल-मलकर देखेंगे कि कहीं कोई और तो नहीं ! परंतु हम गर्दन टेढ़ी करके दूसरी तरफ़ देखने लग जाएंगे, जैसे हमें कुछ मालूम ही नहीं है, जैसे यह सवारी हमारे लिए साधारण बात है ।

झक मारकर बताना पड़ा कि रोज़-रोज़ तांगे का ख़र्च मारे डालता है । साइक़िल चलाना सीखेंगे ।

श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाते हुए हमारी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर बोलीं, "मुझे तो आशा नहीं कि यह बेल आपसे मत्थे चढ़ सके । ख़ैर यत्न करके देख लीजिए । मगर इन कपड़ों से क्या बनेगा ?"

हमने ज़रा रौब से कहा, "आख़िर बाइसिकिल से एक-दो बार गिरेंगे या नहीं ? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं ? जो मूर्ख हैं, वो नये कपड़ों का नुक़सान कर बैठते हैं । जो बुद्धिमान हैं, वो पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं ।

मालूम होता है हमारी इस युक्ति का कोई जवाब हमारी स्त्री के पास न था, क्योंकि उन्होंने उसी समय मशीन मंगवाकर उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी ।

हमने इधर बाज़ार जाकर जम्बक के दो डिब्बे ख़रीद लिए कि चोट लगते ही उसी समय इलाज किया जा सके ।

इसके बाद जाकर एक खुला मैदान तलाश किया, ताकि दूसरे दिन से साइकिल-सवारी का अभ्यास किया जा सके ।

अब यह सवाल हमारे सामने था कि अपना उस्ताद किसे बनाएं । इसी उधेड़-बुन में बैठे थे कि तिवारी लक्ष्मीनारायण आ गये और बोले, ''क्यों भाई, हो जाए एक बाज़ी शतरंज की ?''

हमने सिर हिलाकर जवाब दिया, ''नहीं साहब ! आज तो जी नहीं चाहता ।''

''क्यों ?''

''यदि जी न चाहे तो क्या करें ?''

यह कहते-कहते हमारा गला भर आया । तिवारी जी का दिल पसीज गया । हमारे पास बैठकर बोले, ''अरे भाई, मामला क्या है ? स्त्री से झगड़ा तो नहीं हो गया ?''

हमने कहा, ''तिवारी भैया, क्या कहें ? सोचा था, लाओ, साइकिल की सवारी सीख लें । मगर अब कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं देता जो हमारी सहायता करें । बताओ, है कोई ऐसा आदमी तुम्हारे ख़याल में ?''

तिवारी जी ने हमारी तरफ़ बेबसी की आंखों से ऐसे देखा, मानो हमको कोई ख़ज़ाना मिल रहा है और वे ख़ाली हाथ रह जाते हैं । बोले, ''मेरी मानो तो यह रोग न पालो । इस आयु में साइकिल पर चढ़ोगे ? और यह भी कोई सवारियों में कोई सवारी है कि डंडे पर उकड़ूं बैठे हैं और पांव चला रहे हैं । अजी, लानत भेजो इस ख़याल पर । आओ एक बाज़ी खेलें ।'' मगर हमने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थी । साफ़ समझ गये कि तिवारी ईर्ष्या की आग में फुंका जाता है । मुंह फुलाकर हमने कहा, ''भाई तिवारी, हम तो ज़रूर सीखेंगे । कोई आदमी बताओ ।''

''आदमी तो है ऐसा एक, मगर वह मुफ़्त में नहीं सिखाएगा । फ़ीस लेगा । दे सकोगे ?''

''कितने दिन में सिखा देगा ?''

''यही दस-बारह दिनों में !''

''और फ़ीस क्या लेगा हम से ?''

''औरों से पचास लेता है । तुम से बीस ले लेगा हमारी ख़ातिर ।''

हमने सोचा दस दिन सिखाएगा और बीस रुपये लेगा । दस दिन बीस रुपये । बीस रुपये-दस दिन अर्थात दो रुपये रोज़ाना अर्थात साठ रुपये महीना और वो भी केवल एक दो घंटे के लिए । ऐसी तीन-चार ट्यूशनें मिल जाएं तो ढाई-तीन सौ रुपये मासिक हो जाएंगे । हमने तिवारी जी से तो इतना ही कहा कि जाओ, जाकर मामला तय कर आओ, मगर जी में खुश हो रहे थे कि साइकिल चलाना सीख गये तो एक ट्रेनिंग स्कूल खोल दें और तीन-चार सौ रुपये मासिक कमाने लगें ।

इधर तिवारी जी मामला तय करने गये, इधर हमने यह शुभ समाचार जाकर श्रीमती जी को सुना दिया कि कुछ दिनों में हम लोग ऐसा स्कूल खोलने वाले हैं जिससे तीन-चार सौ रुपये मासिक आमदनी होगी ।

श्रीमती जी बोलीं, ''तुम्हारी इतनी आयु हो गयी, मगर ओछापन न गया । पहले आप तो सीख लो, फिर स्कूल खोलना । मैं तो समझती हूं कि तुम ही न सीख सकोगे, दूसरों को सीखाना तो दूर की बात है ।''

हमने बिगड़कर कहा, ''यह बड़ी बुरी बात है कि हर काम में टोक देती हो । हमसे बड़े-बड़े सीख रहे हैं तो क्या हम न सीख सकेंगे ? पहले तो शायद सीखते या न सीखते, पर अब तुमने टोका है तो ज़रूर सीखेंगे । तुम भी क्या कहोगी ।''

श्रीमती जी बोलीं, ''मैं तो चाहती हूं कि तुम हवाई जहाज़ चलाओ । यह बाइसिकिल क्या चीज़ है ? मगर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है । एक बार गिरोगे, तो देख लेना वहीं साइकिल फेंक-फांककर चले आओगे ।''

इतने में तिवारी जी ने बाहर से आवाज़ दी । हमने बाहर जाकर देखा तो उस्ताद साहब खड़े थे । हमने शरीफ़ विद्यार्थियों के समान श्रद्धा से हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और चुपचाप खड़े हो गये ।

तिवारी जी बोले, ''यह तो बीस पर मान ही नहीं रहे थे । बड़ी मुश्किल से मनाया है । पेशगी लेंगे । कहते हैं : पीछे कोई नहीं देता ।''

''अरे भाई, हम देंगे । दुनिया लाख बुरी है, मगर फिर भी भले आदमियों से ख़ाली नहीं है । यह बस चलाना सीखा दें, फिर देखें, हम इनकी क्या-क्या सेवा करते हैं ।''

मगर उस्ताद साहब नहीं माने । बोले, ''फ़ीस पहले लेंगे ।''

''और यदि आपने नहीं सिखाया तो ?''

''नहीं सिखाया तो फ़ीस लौटा देंगे ।''

''और यदि नहीं लौटाया तो ?''

इस पर तिवारी जी ने कहा, ''अरे साहब ! क्या यह

तिवारी मर गया है ? शहर में रहना हराम कर दूं, बाज़ार में निकलना बंद कर दूं । फ़ीस लेकर भाग जाना कोई हंसी-खेल है ?''

जब हमें विश्वास हो गया कि इसमें कोई धोखा नहीं है, तब हमने फ़ीस के रुपये लाकर उस्ताद को भेंट कर दिये और कहा, ''उस्ताद, कल सवेरे ही आ जाना । हम तैयार रहेंगे । इस काम के लिए कपड़े भी बनवा लिए हैं । अगर गिर पड़े तो चोट पर लगाने के लिए जम्बक भी ख़रीद लिया है और हां, हमारे पड़ोस में जो मिस्त्री रहता है, उससे साइकिल भी मांग ली है । आप सवेरे ही चले आएं तो हरि का नाम लेकर शुरू कर दें ।''

तिवारी जी और उस्ताद जी ने हमें हर तरह से तसल्ली दी और चले गये । इतने में हमें याद आया कि एक बात कहना भूल गये । नंगे पांव भागे और उन्हें बाज़ार में जाकर पकड़ा । वे हैरान थे । हमने हांफते-हांफते कहा, ''उस्ताद, हम शहर के पास नहीं सीखेंगे, लारेंसबाग़ में जो मैदान है, वहां सीखेंगे । वहां एक तो भूमि नरम है, चोट कम लगती है । दूसरे वहां कोई देखता नहीं है ।''

अब रात को आराम की नींद कहां ? बार-बार चौंकते थे और देखते थे कि कहीं सूरज तो नहीं निकल आया । सोते थे तो साइकिल के सपने आते थे । एक बार देखा कि हम साइकिल से गिरकर ज़ख़्मी हो गये हैं । साइकिल आप से आप हवा में चल रही है और लोग हमारी तरफ़ आंखें फाड़-फाड़ के देख रहे थे ।

अब आंखें खुलीं तो दिन निकल आया था । जल्दी से जाकर वो पुराने कपड़े पहन लिए, जम्बक का डिब्बा साथ में ले लिया और नौकर को भेजकर मिस्त्री से साइकिल मंगवा ली । इसी समय उस्ताद साहब भी आ गये और हम भगवान का नाम लेकर लारेंसबाग़ की ओर चले, लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि एक बिल्ली रास्ता काट गयी और लड़के ने छींक दिया । क्या कहें कि हमें कितना क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और उस शैतान लड़के पर ! मगर क्या करते ? दांत पीसकर रहे गये । एक बार फिर भगवान का पावन नाम लिया और आगे बढ़े । पर बाज़ार में पहुंच कर देखते हैं कि हर आदमी हमारी तरफ़ देख रहा है और हंस रहा है । अब हम हैरान थे कि बात क्या है । सहसा हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पाजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए हैं और लोग इसी पर हंस रहे हैं ।

सर मुड़ाते ही ओले पड़े ।

हमने उस्ताद से माफ़ी मांगी और घर लौट आए अर्थात हमारा पहला दिन मुफ़्त में गुज़रा ।

दूसरे दिन फिर निकले । रास्ते में उस्ताद साहब बोले, ''मैं एक गिलास लस्सी पी लूं । आप ज़रा साइकिल को थामिए ।''

उस्ताद साहब लस्सी पीने लगे तो हमने साइकिल के पुर्ज़ों की ऊपर-नीचे परीक्षा शुरू कर दी । फिर कुछ जी में आया तो उसका हैंडल पकड़ कर चलने लगे । मगर दो ही क़दम गये होंगे कि ऐसा मालूम हुआ जैसे साइकिल हमारे सीने पर चढ़ी आती है ।

इस समय हमारे सामने गंभीर प्रश्न यह था कि क्या करना चाहिए ? युद्ध क्षेत्र में डटे रहें या हट जाएं ? सोच-विचार के बाद यही निश्चय हुआ कि यह लोहे का घोड़ा है । इसके सामने हम क्या चीज़ हैं । बड़े-बड़े वीर योद्धा भी ठहर नहीं सकते । इसलिए हमने साइकिल छोड़ दी और भगोड़े सिपाही बनकर मुड़ गये ।

पर दूसरे ही क्षण साइकिल पूरे ज़ोर से हमारे पांव पर गिर गयी और हमारी रामदुहाई बाज़ार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूंजने लगी । उस्ताद लस्सी छोड़कर दौड़े आये और अन्य दयावान लोग भी जमा हो गये । सबने मिलकर हमारा पांव साइकिल से निकाला ।

भगवान के एक भद्र ने जम्बक का डिब्बा भी उठाकर हमारे हाथ में दे दिया । दूसरे ने हमारी बग़लों में हाथ डालकर हमें उठाया और सहानुभूति से पूछा, ''चोट तो नहीं आयी ? ज़रा दो-चार क़दम चलिए, नहीं तो लहू जम जाएगा ।''

इस तरह दूसरे दिन भी हम और हमारी साइकिल दोनों अपने घर से थोड़ी दूर पर ज़ख़्मी हो गये । हम लंगड़ाते हुए घर लौट आये और साइकिल ठीक होने के लिए मिस्त्री के दुकान पर भेज दी ।

मगर हमारे वीर हृदय का साहस और धीरज तो देखिये । अब भी मैदान में डटे रहे । कई बार गिरे, कई बार शहीद हुए । घुटने तुड़वाये, कपड़े फड़वाये, पर क्या मजाल जो जी छूट जाए । आठ-नौ दिनों में साइकिल चलाना सीख गये थे । लेकिन अभी उस पर चढ़ना नहीं आता था । कोई परोपकारी पुरुष सहारा देकर चढ़ा देता तो फिर लिए जाते

थे । हमारे आनंद की कोई सीमा न थी । सोचा मार लिया मैदान हमने । दो-चार दिन में पूरे मास्टर बन जाएंगे, इसके बाद प्रोफ़ेसर, प्रिंसिपल, इसके बाद ट्रेनिंग कॉलेज, फिर तीन-चार सौ रुपये मासिक । तिवारी जी देखेंगे और ईर्ष्या से जलेंगे ।

उस दिन उस्ताद जी ने हमें साइकिल पर चढ़ा दिया और सड़क पर छोड़ दिया कि ले जाओ, अब तुम सीख गये ।

अब हम साइकिल चलाते थे और दिल ही दिल फूले न समाते थे, मगर हाल यह था कि कोई आदमी सौ गज़ के फ़ासले पर होता तो हम गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर देते-साहब ! बायीं तरफ़ हट जाइये । दूर फ़ासले पर कोई गाड़ी दिख जाती, तो हमारे प्राण सूख जाते । उस समय हमारे मन की जो दशा होती वो परमेश्वर ही जानता है । जब गाड़ी निकल जाती तब कहीं जाकर हमारी जान में जान आती ।

सहसा सामने से तिवारी जी आते हुए दिखे । हमने उन्हें भी दूर से ही अल्टीमेटम दिया कि तिवारी जी, बायीं तरफ़ हो जाओ, वरना साइकिल तुम्हारे ऊपर चढ़ा देंगे ।

तिवारी जी ने अपनी छोटी-छोटी आंखों से हमारी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर कहा, "ज़रा एक बात तो सुनते जाओ ।"

हमने एक बार हैंडल की तरफ़, दूसरी बार तिवारी जी की तरफ़ देखकर कहा, "इस समय बात सुन सकते हैं ? देखते नहीं हो साइकिल पर सवार हैं ।"

तिवारी जी बोले, "तो क्या जो साइकिल चलाते हैं, वो किसी की बात नहीं सुनते हैं ? बड़ी ज़रूरी बात है, ज़रा उतर आओ ।"

हमने लड़खड़ाती हुई साइकिल को संभालते हुए जवाब दिया, "उतर आएंगे तो चढ़ाएगा कौन ? अभी चलाना सीखा है, चढ़ना नहीं सीखा ।"

तिवारी जी चिल्लाते ही रह गये, हम आगे निकल गये ।

इतने में सामने से एक तांगा आता दिखायी दिया । हमने उसे भी दूर से ही डांट दिया, "बायीं तरफ़ भाई । अभी नये चलाने वाले हैं ।"

तांगा बायीं तरफ़ हो गया । हम अपने रास्ते चले जा रहे थे । एकाएक पता नहीं घोड़ा भड़क उठा या तांगे वाले को शरारत सूझी, जो भी हो, तांगा हमारे सामने आ गया । हमारे हाथ-पांव फूल गये । ज़रा-सा हैंडल घुमा देते तो हम दूसरी तरफ़ निकल जाते, मगर बुरा समय आता है तो बुद्धि पहले ही भ्रष्ट हो जाती है । उस समय हमें ख़याल ही न आया कि हैंडल घुमाया भी जा सकता है । फिर क्या था, हम और हमारी साइकिल दोनों ही तांगे के नीचे आ गये और हम बेहोश हो गये ।

जब हम होश में आये तो हम अपने घर में थे और हमारी देह पर कितनी ही पट्टियां बंधी थीं । हमें होश में देखकर श्रीमती जी ने कहा, "क्यों ? अब क्या हाल है ? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो ! उस समय तो किसी की सुनते ही न थे ।"

हमने सोचा, लाओ सारा इलज़ाम तिवारी जी पर लगा दें और आप साफ़ बच जाएं । बोले, "यह सब तिवारी जी की शरारत है ।"

श्रीमती जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "यह तो तुम उसको चकमा दो जो कुछ जानता न हो । उस तांगे पर मैं ही तो बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चलो सैर भी कर आएंगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आएंगे ।"

हमने निरुत्तर होकर आंखें बन्द कर लीं

0291-2658786

HOTEL
Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled
Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

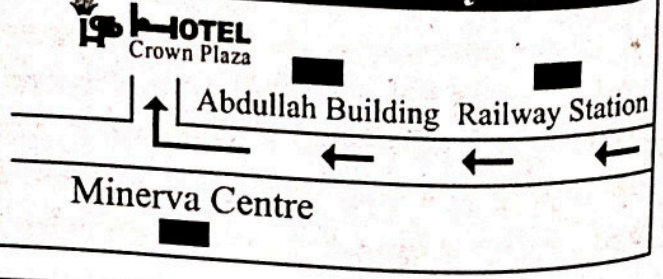

समाज सुधार : समय की सबसे अहम ज़रूरत

● संपादन प्रभाग

आधुनिक भारत इस समय असाधारण नैतिक बिगाड़ की चपेट में है और हमारी नयी नस्लों को अपनी पुरानी मान्यताओं एवं परंपराओं से कटकर पश्चिम से आने वाली हर बुराई को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है । पहले घरों के अन्दर, समाज के अन्दर और स्कूलों और कॉलेजों के अन्दर नवजवान नस्लों को सभ्यता एवं शिष्टाचार का पाठ पढ़ाया जाता था, नैतिक शिक्षा दी जाती थी, अच्छे आचार-विचार सिखाए जाते थे ।

मगर दुर्भाग्य से अब ये सारी बातें पुराने ज़माने की दास्तान बन गयी हैं । अब केवल यह चिंता है कि हमारे बच्चे-बच्चियां अच्छे कपड़े पहनें, अच्छा खाएं-पीएं और उनके रहने के लिए अच्छे से अच्छा मकान उपलब्ध हो । उन्हें ऐसी शिक्षा दिलाई जाए कि वे जल्द से जल्द रुपये कमाने की मशीन बनकर सामने आएं और रुपयों के ढेर लगा सकें, चाहे उनके आचार-व्यवहार जंगली जानवरों जैसे ही क्यों न हों ।

बिगाड़-विकृति के इस तूफ़ान में हमारे समाज और व्यक्ति का सारा ताना-बाना बिगड़ता जा रहा है । हमारे समाज की सारी अख़्लाक़ी चूलें हिल रही हैं । एक स्वस्थ वातावरण से हम तेज़ी के साथ वंचित होते जा रहे हैं । घमंड, अकड़, बड़बोलापन, नग्नता और अश्लीलता का एक नशा है जो हम सब पर चढ़ता जा रहा है ।

सबसे ज़्यादा बिगाड़ और बेकिरदारी उस अश्लीलता, नग्नता और बेहयाई के कारण है जो हर इन्सान को, चाहे मर्द हो या औरत, ग्रसित कर रही है । पश्चिम हर रोज़ नया फ़ैशन ईजाद करता है और हम उस पर टूट पड़ते हैं । मानो हमने तय कर रखा है कि पूर्वी सभ्यता का हर चिन्ह मिटा कर दम लेंगे और हम अपने समाज को भी उसी तबाही की मंज़िल तक ले जाएं जहां पश्चिमी समाज पहुंच चुका है और अपनी सामूहिक ज़िन्दगी और पारिवारिक व्यवस्था की बर्बादी और बिखराव से दोचार हैं ।

इतिहास गवाह है कि जिंसी आवारगी और बदकारी को बढ़ावा देने और औरतों और मर्दों को सिरे से नंगा करके खंड़ा करने वाली अत्यधिक शानो-शौकत वाली रोमी सभ्यता इस्लाम के आगमन के पहले ही टूट-टूटकर बिखड़ चुकी थी । पश्चिम का यह हाल है कि इस समय वह रोमी सभ्यता के पद्चिन्हों पर चल रहा है और अपनी अश्लीलता और नग्नता के कारण जिस नैतिक व अख़्लाक़ी पतन के गढ़े में है, वह उसे एक शिक्षाप्रद कुपरिणाम की ओर ले जा रहे हैं ।

हम भारतीय पश्चिम के ठाठ-बाट से इतने प्रभावित हैं कि उसके पीछे भाग रहे हैं । स्वच्छन्द मेल-जोल और शादी के बिना स्वतंत्र जिंसी संबंध बनाने की न सिर्फ़ मांग की जा रही है बल्कि उसके समर्थन में आवाज़ भी उठने लगी है ।

पश्चिम व साम्यवादी विचारधारा ने शादी और निकाह को दकियानूसी नैतिकता का कबाड़ख़ाना क़रार दिया था । दुर्भाग्य से हमारे अंग्रेज़ी अख़बार औरतों की नंगी तस्वीर बड़े पैमाने पर छाप कर हमारी नयी नस्ल को जिन्सी व सेक्सी आवारगी की ओर ले जा रहे हैं और उन पर कोई रोक-टोक नहीं । मुस्लिम नवजवान भी स्कूलों, कॉलेजों, बाज़ारों और तफ़रीहगाहों में इसी हैवानियत से दोचार हैं ।

हमारे समाज पर यह ग़लत रुझान भी पाया जाता है कि शादी को दुश्वार और अवारगी को आसान बनाया जा रहा है । दहेज की लानत के कारण ग़रीब माता-पिता अपनी बेटियों की शादी नहीं कर पाते । हमारे समाज में ऊंच-नीच, ख़ानदान और बिरादरी को लेकर ग़लत धारणाएं पायी जाती

हैं, जिनसे स्वाभाविक रूप से समस्याओं में वृद्धि होती है । हम भी इस बीमारी में फंस चुके हैं कि अमुक नस्ल व ख़ानदान के लोग ऊंचे हैं और अमुक नस्ल व ख़ानदान के लोग हक़ीर व तुच्छ हैं । इस अत्यधिक घातक सोच ने इस्लामी समानता व भाईचारे की अवधारणा को और हमारी एकता को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया है ।

इस्लाम ने इन्सानियत का जो कल्याणकारी संदेश दुनिया को दिया था, जिसके कारण इस्लाम सारी दुनिया में रहमत और सर्वकल्याण बनकर फैल गया । दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में एक हज़ार वर्ष पहले जब अरब व्यापारी अपनी नावों पर इस्लाम का संदेश लेकर आये तो ऊंच-नीच की विकृत व त्याज्य सोच के शिकार लोगों ने उनका स्वागत किया । अरबों ने स्थानीय लोगों से रिश्तेदारी क़ायम की । उनकी औरतों से शादियां कीं और आज भी इस मिली-जुली नस्ल के लोग वहां बहुसंख्या में मौजूद हैं । आज भी और दुनिया देश के सभी लोगों को इज़्ज़त और सम्मान देने का यही रास्ता है ।

इसके अलावा हमको सूद (ब्याज) की गंदगियों से बचने का पाठ पढ़ाया गया था । अफ़सोस, आज बैंकों की पूरी व्यवस्था सूद पर चलती है और सूदख़ोरी की तरह-तरह की स्कीमें लायी गयी हैं, जिनके ज़रिये आप घर बैठे अपनी रक़म को दो गुना-तीन गुना कर सकते हैं । इस्लाम ने इसे हराम क़रार दिया है । यह इंतिहाई अफ़सोस की बात है कि आज हमने सूद के लिए अपने आर्थिक जीवन के द्वार खोल दिये हैं । उसकी वजह से भी हम लालच, असंतोष और बेबरकती के शिकार हैं । समाज में दया, प्रेम, भाईचारा और इन्सानों की मदद की भावनाएं समाप्त हो रही हैं । लोग भौतिकता के प्रभाव में हैं और सिर्फ़ दुनिया के जीवन को प्राथमिकता देते हैं । जबकि इस्लाम में अल्लाह की राह में लोगों की भलाई व कल्याण में माल ख़र्च करने पर ज़ोर दिया गया है और दौलत का ढेर लगाने से मना किया गया है ।

आज ऐसी सैकड़ों समस्याएं हैं जिन्होंने हमारे समाज को मरीज़ और नाकारा बनाकर रख दिया है । सामूहिक जीवन की बरकतें समाप्त हो गयी हैं । इन्सान वहशी जानवरों में तब्दील हो रहे हैं, जिन्हें बस अपने पेट की चिंता है और वे दूसरों के दुख-दर्द को महसूस नहीं कर पा रहे हैं । दिन-प्रतिदिन ये कीटाणु हमारे सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन को खोखला कर रहे हैं ।

हम हैं कि अपने व्यक्तिगत जीवन में कुछ इबादतें और नेकी के कुछ छोटे-मोटे कामों पर संतुष्ट हैं कि हमारी जन्नत तो बस पक्की हो गयी । हालांकि अल्लाह के यहां हर इन्सान से उसकी व्यक्तिगत ज़िन्दगी के साथ उसकी सामूहिक और सामाजिक ज़िन्दगी के बारे में भी सख़्त सवालात किये जाएंगे और व्यक्तिगत जीवन की नेकियों को सामाजिक और इज्तिमाई ज़िन्दगी में कोताही बरतने वाले को मुंह पर मार दिया जाएगा ।

इसलिए आवश्यकता है कि समाज को तबाही से बचाने के लिए देश के संवेदनशील और जाग्रत लोग सामने आएं और यह मुहिम चलाएं कि कम से कम मुस्लिम महिलाओं में हिजाब की पाबन्दी क़ायम रहे और जो लड़कियां और औरतें दूसरों की देखा-देखी सड़कों, बाज़ारों, कॉलेजों और स्कूलों में बेपरदा फ़िरती हैं, वे हिजाब या चादर का इस्तेमाल करें और नग्नता, तंग पोशाक और भड़काने वाले रंग-ढंग न अपनाएं ।

यह मुहिम घरों से शुरू करनी होगी और ख़ानदान के बुज़ुर्गों को इसमें पूरी दिलचस्पी लेनी होगी । इसके अलावा शादी-विवाह के अन्दर जो लानतें हैं, उसके ख़िलाफ़ भी मुहिम छेड़ने की ज़रूरत है । अत्यधिक वाहियात और ख़र्चीले रस्मो-रिवाज को छोड़कर सादी जीवनशैली की तरफ़ लौटने की भी मुहिम चलानी होगी और नयी नस्ल को अपनी तहज़ीब और नैतिक मान्यताओं से अवगत कराने के लिए जद्दोजेहद करना होगा । समाज में ऊंच-नीच के अन्तर को समाप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को मैदान में आना होगा और आगे बढ़कर ख़ुद इस बुत को तोड़ना होगा ।

तीसरी बात यह है कि समाज को सूद की लानत से पाक करने के लिए लोगों को यह बताना होगा कि इसके नतीजे दुनिया और आख़िरत में क्या होंगे ।

इस समय सबसे बड़ी इबादत यह है कि हम अपने सड़ते-गलते समाज की रगों में सेहतमंद ख़ून दौड़ाएं और पश्चिम की ख़ुदाबेज़ार तहज़ीब के यलग़ार से अपने सगे-संबंधियों को सुरक्षित रखने और इस्लामी तहज़ीब की बरकतों से अपने समाज को अवगत कराने की कोशिश में जुट जाएं ।

किसान : डबल आमद या डबल आफ़त ?

खेती-किसानी के मोर्चे पर केंद्र सरकार ने गुज़रे सालों में क्या कुछ किया है, उस पर आप महज़ एक घंटे में राय बनाना चाहते हैं, तो फिर योगेंद्र यादव द्वारा लिखित पुस्तक 'मोदी राज में किसान : डबल आमद या डबल आफ़त' आप ही के लिए है । आइए जानते हैं इस पुस्तक के बारे में कुछ ख़ास बातें । –संपादक

किसानी के मोर्चे पर केन्द्र सरकार के हासिल-लाहासिल को परखने के तीन रास्ते हो सकते हैं । एक तो सरकार के वादों को परखना कि वे किस हद तक पूरे हैं । दूसरे, सरकार के दावों को तौलना कि उनमें कितना दिखावा और कितनी सच्चाई है और तीसरे, यह देखना कि जीविका के लिए खेती-बाड़ी पर निर्भर आबादी के साथ किसी प्राकृतिक आपदा (मिसाल के लिए सूखा या बाढ़) के वक़्त सरकार ने क्या सलूक किया । किसानी मोर्चे पर सरकार के कामकाज और सोच को परखने के लिए किताब में इन तीन कसौटियों का इस्तेमाल किया गया है और किताब के लेखक तथ्यसंगत-तर्कसंगत विश्लेषण के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार आज़ादी के बाद देश की सबसे किसान विरोधी सरकार है ।

लेखक के मुताबिक़, देश में आज तक किसान हितैषी सरकार का राज तो कभी नहीं आया, लेकिन मोदी सरकार का किसान विरोध पिछली सब सरकारों को मात करता है । यह देश की पहली सरकार है जो मानसिक, व्यावहारिक और भावनात्मक तीनों स्तर पर किसान विरोधी साबित हुई है । लेखक ने भरपूर तथ्यों के सहारे स्थापना दी है कि केंद्र की मौजूदा सरकार अपने सोच में किसान विरोधी है । इसकी नीतियां किसान विरोधी हैं और इसकी नीयत किसान विरोधी है । प्रमाणिक तथ्यों और आंकड़ों के साथ यह पुस्तक मोदी सरकार के किसान संबंधी चुनावी वादों, सरकारी दावों और डबल आय के नारे का सच उजागर करती है । पाठकों की सुविधा के लिए पुस्तक के कुछ तथ्य नीचे लिखे जा रहे हैं–

❖ लागत का डेढ़ गुना दाम देने के चुनावी दावे से सरकार पहले तो मुकरी, फिर लागत की परिभाषा बदल कर किसानों के साथ धोखा किया ।

❖ दावा न्यूनतम समर्थन मूल्य में ऐतिहासिक वृद्धि का था, लेकिन वास्तव में यह 2008 की वृद्धि से भी कम था ।

❖ जो न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया वह भी किसान को कभी नहीं मिला । 'पी॰एम॰ आशा' योजना फ्लॉप हो गयी है ।

❖ कृषि में दोगुना ख़र्च करने का दावा सफ़ेद झूठ है । पिछली सरकार की तरह मोदी सरकार ने भी बजट का सिर्फ़ 2 फ़ीसदी कृषि पर ख़र्च किया ।

❖ फ़सल बीमा योजना से सरकारी ख़र्च 450 फ़ीसदी

Niyaz Ahmed

STAR

Hosiery Centre

Wholesaler

Raydemade & Handloom

B/43 Uttar Gangotri, Bhilai,
Phone : 9826129877

बढ़ा लेकिन लाभांवित होने वाले किसान 10 फ़ीसदी भी नहीं बढ़े । योजना लागू होने पर किसानों को बीमा का क्लेम 21,608 करोड़ से घटकर 15,502 करोड़ हो गया ।

❖ किसानों की आय डबल करने का नारा महज़ एक जुमला है, क्योंकि इसके लिए अब तक न तो कोई योजना है, न बजट, न ही प्रगति की कोई समीक्षा । पिछले चार साल में किसान की आय सिर्फ़ 2.2 फ़ीसदी की सालाना दर से बढ़ी है, जबकि डबल करने के लिए 10.4 फ़ीसदी की ज़रूरत थी ।

❖ किसान का भला करना तो दूर की बात है इस सरकार ने किसानों की आपदा में भी उनकी मदद नहीं की, बल्कि अपनी नीतियों से किसानों को नुक़सान पहुंचाया ।

❖ लगातार दो साल राष्ट्रव्यापी सूखे में मोदी सरकार ने बेरुख़ी दिखायी, राहत देने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश की भी अवहेलना की ।

❖ बाज़ार भाव गिरने पर सरकार ने किसान की मदद करने की बजाय विदेश से आयात कर से उसे नुक़सान पहुंचाया ।

❖ सूखे और मंदी से उभरते किसान पर नोटबंदी का तुग़लकी फ़ैसला कर सरकार ने किसान की कमर ही तोड़ दी ।

❖ कृषि निर्यात पहले से कम हो गया, निर्यात आयात का सरप्लस 159 हज़ार करोड़ रुपये से घटकर 82 हज़ार करोड़ रुपये हो गया ।

❖ पिछले साल भर में डीज़ल, खाद, कीटनाशक और बीज के दाम में 20 फ़ीसदी से 30 फ़ीसदी तक बढ़ोत्तरी हुई है ।

❖ गो-हत्या रोकने के नाम पर देश भर में पशु व्यापार ठप पड़ गया है, पशुओं के दाम गिर रहे हैं और किसान आवारा पशुओं की समस्या से त्रस्त है । मोदी सरकार ने भूमि अधिग्रहण क़ानून को ख़त्म करने की बार-बार कोशिश की और वनाधिकार क़ानून में आदिवासी किसानों के अधिकारों को भी कमज़ोर किया ।

अगर आप किसान-आंदोलन से जुड़े हैं, खेती-किसानी की समस्याओं पर काम करने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता या फिर स्वतंत्र पत्रकार हैं तो पुस्तक की प्रति निशुल्क प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क करें–contact@swarajindia-org पुस्तक का नाम–मोदी राज में किसान : डबल आमद या डबल आफ़त ? लेखक : योगेंद्र यादव । स्वराज अभियान प्रकाशन । पुस्तक के वितरक-वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 । (विविध फ़ीचर्स)



लड़खड़ाता लोकतंत्र और बेबस जनता

■ डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी

लोकतंत्र एक ऐसी शब्दावली है, जिसमें अनगिनत ख़ूबियां जमा कर दी गयी हैं । इस मानव प्रतिष्ठा का पहला पत्थर कहा जाता है । इसे स्वेच्छाचार और तानाशाही का विरोधी कहा जाता है । अब्राहम लिंकन की लोकतंत्र की परिभाषा को बहुत याद किया जाता है । उन्होंने घोषणा की थी कि जिस प्रकार मैं दास बनना नहीं चाहूंगा उसी प्रकार मैं स्वामी बनना भी नहीं चाहूंगा । एक ज़ार की जगह सैकड़ों ज़ार हों और एक हिटलर की जगह सैकड़ों हिटलर हों तो लोकतंत्र का क्या लाभ ।

वाल्ट व्हाइट मैन ने कहा था, ऐ दोस्त लोकतंत्र मात्र चुनावी राजनीति और सामूहिक व्यवस्था का नाम नहीं । लोकतंत्र तभी सफल है जब यह गतिशील रहे, मानव-व्यवहार में फले-फूले और मनुष्य के पारस्परिक मामलों में सहयोगी हो । जान टी रेड के अनुसार लोकतंत्र में नैतिक मूल्य आत्मा जैसा होता है । लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तंभ समानता है, अर्थात सबको समान अवसर प्राप्त हों और क़ानून की नज़र में सब बराबर हों । लोकतंत्र प्रत्येक व्यक्ति को धर्म और विचार की आज़ादी देता है । वह मनुष्य को आलोचना करने की भी स्वतंत्रता देता है, लेकिन यह स्वतंत्रता वहां जाकर समाप्त हो जाती है जहां दूसरे की स्वतंत्रता प्रभावित हो ।

पिछले अनुभवों से यह दुखद सच्चाई सामने आती है कि लोकतंत्र बहुसंख्यक के लिए अल्पसंख्यक के अधिकार हनन करने का तंत्र बन जाता है और बड़ी सादगी से यह कह दिया जाता है कि लोकतंत्र में बहुसंख्यक की राय से हर फ़ैसला किया जाता है । लोकतंत्र शक्तिशाली वर्ग का पोषक बन जाता है । लोकतंत्र में एक परिवार बड़ी आसानी से सत्ता पर अधिकार जमाए रहता है और जनता उसी को अपना स्वामी एवं अगुआ मानती है । टैड राबर्ट गोर अपनी पुस्तक 'माइनॉरिटी एट रिस्क' में 233 अल्पसंख्यक वर्गों का उल्लेख करता है जो लोकतंत्र के अधीन बहुसंख्यक वर्गों के पंजे में जकड़े हुए हैं । लोकतंत्र भाषा और वंश के आधार पर बने वर्गों में संघर्ष को रोकने में असफल रहता है ।

साम्यवादी चिंतक लोकतंत्र को पूंजीपतियों के साम्राज्यवाद में बदलता हुए देखते हैं । यही सच्चाई है क्योंकि सभी पश्चिमी देशों में जहां लोकतंत्र का झंडा लहरा रहा है, जनसंख्या का एक छोटा भाग पूरे देश का धन समेट रहा है और पूरी आज़ादी के साथ देश की जनता का शोषण कर रहा है । पूंजीवादी व्यवस्था बड़ी आज़ादी से लोकतंत्र की गोद में फलती-फूलती है और ग़रीब जनता को और अधिक ग़रीब बनाती है ।

लोकतंत्र के अंतर्गत भ्रष्टाचार किस प्रकार विकसित होता है इसको हम अपने देश के लोकतंत्र में देख सकते हैं । इसने देश की पूरी व्यवस्था को इतना नीचे तक पहुंचा दिया है कि गौतम अधिकारी के अनुसार कि पूरे देश को अब यह नज़र आने लगा है कि इस देश में लोकतंत्र जल्दी ही लड़खड़ा कर ध्वस्त होने वाला है । सारे नैतिक मूल्यों और भलाई-बुराई के अन्तर को जनप्रतिनिधियों ने त्याग दिया है ।

हद तो यह है कि अब जनप्रतिनिधियों की खुलेआम ख़रीद-बिक्री होने लगी है । जनता परेशान है लुटेरे बन चुके जनप्रतिनिधियों से कैसे छुटकारा प्राप्त किया जाए । यही कारण है कि जनलोकपाल की बहाली की मांग चारों ओर से आने लगी है और यह मांग ज़ोर पकड़ती जा रही है ।

अब लोग कहने लगे हैं कि लोकतंत्र अपनी सभी ख़ूबियों के बावजूद जवाबदेही के एहसास से ख़ाली जनप्रतिनिधियों को हैवान बना देता है । गौतम अधिकारी "टाइम्स ऑफ़ इंडिया" 25 अगस्त 2011 ई॰ में लिखते हैं– "लोकतंत्र के पतन का यह संकेत है कि इसमें भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा को पहुंच जाता है और भ्रष्टाचार के कीटाणु किसी समाज में उस समय फैलते हैं जब उसके व्यक्तियों के अन्दर से, विशेष रूप से सरकारी अधिकारियों और राजनीतिज्ञों के अन्दर से जवाबदेही का डर समाप्त हो जाता है । यह जवाबदेही का डर उस समय और ग़ायब हो जाता है जब किसी देश की न्यायपालिका बोझल, मन्दगति और लापरवाह होकर रह जाए और नागरिकों को उसकी

न्याय करने की योग्यता पर भरोसा न रहे ।

स्पष्ट है कि एक ऐसे समाज में जहां किसी परम शक्ति और कठोर हिसाब लेने वाली शक्ति पर आस्था न हो और चारों ओर सेकुलरिज़्म ने लोगों को धार्मिक आस्था से वंचित कर दिया है, केवल न्यायपालिका ही एक ऐसी संस्था बचती है, जिसका कुछ डर लोगों को ग़लत काम करने से रोक सकता है । अब अगर यह संस्था भी मात्र दिखावटी होकर रह जाए तो अपनी बेक़ाबू मनेच्छाओं के ग़ुलाम लोगों को हर प्रकार के अपराध से कौन रोक सकता है । गौतम अधिकारी का यह विचार सच्चाई पर आधारित है कि जवाबदेही का एहसास और पारदर्शिता दो स्तंभ हैं, जिन पर एक अच्छी शासन प्रणाली निर्भर होती है ।

लोकतंत्र में आज़ाद प्रेस और सूचना का अधिकार व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करता है, मगर कठिनाई यह है कि भ्रष्टाचार और लालच प्रेस को भी बीमार बना देता है और सूचना का अधिकार भी क्या लाभदायक होगा जब बड़े-बड़े घोटाले के अपराधियों को सज़ा न मिले । शायद यह भी लोकतंत्र की मजबूरी है कि राजनीतिज्ञ बड़े-बड़े अपराधियों और भ्रष्ट लोगों का पोषण अपना दायित्व समझते हैं और उनके कारण किसी अपराधी को इबरतनाक सज़ा नहीं मिल पाती ।

लोकतंत्र जीवन मूल्यों से वंचित समाज में हर प्रकार के अपराध का लाइसेंस देने वाली एक संस्था बन जाती है । यह बोलने और आलोचना करने का अधिकार तो देता है, मगर मनुष्य के भीतर की पशुता को नियंत्रित करने का इसके पास कोई यंत्र नहीं होता । पश्चिम ने नैतिकता और आस्था को ठोकर मारकर यह समझा कि उन्होंने मनुष्य को हर तरह से आज़ाद बना दिया है और मानवाधिकारों की सुरक्षा बड़ी ठोस व्यवस्था कर ली है । लेकिन महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को इस पश्चिमी सोच ने जिस प्रकार अकेला कर दिया है और पारिवारिक व्यवस्था को पूरी तरह बिखेर कर रख दिया है और पूर्ण स्वतंत्रता के नाम पर जो अत्याचार किया है उसका अनुमान हम पश्चिम के समाज को क़रीब से देखकर लगा सकते हैं ।

हमारे देश में लोकतंत्र देखने में सफल नज़र आता है और हम ख़ुश हैं कि यह व्यवस्था यहां के अल्पसंख्यकों और कमज़ोर वर्गों के लिए बड़ा उपयोगी है, नहीं तो अगर यहां की बहुसंख्यक वर्ग इसे हिन्दू राष्ट्र बना देता तो शायद दूसरे धर्म के लोगों के लिए जीवन बहुत कठिन हो जाता । हालांकि हिन्दू राष्ट्र बना देने के बाद बहुसंख्यक वर्ग भी यहां चैन से नहीं बैठ सकता और उसे लगातार गृह युद्ध का सामना करना पड़ता । लेकिन लोकतंत्र ने यहां बहुसंख्यक वर्ग को इतने अधिकार दे दिये कि उसने हिन्दू राष्ट्र बनाने के सपने को अल्पसंख्यक के अधिकारों का हनन करके बड़ी हद तक पूरा कर लिया ।

वह समुदाय जो अल्पसंख्या में होने के बावजूद आज़ादी से पहले अपनी जनसंख्या के अनुपात में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक चौथाई संसाधनों से लाभांवित हो रहा था, आज़ादी के बाद उसका अधिकार संसाधनों के केवल 2-2. 5 प्रतिशत तक ही रह गया । राजनैतिक दल तरह-तरह के दिलासे देते रहे, सरकारें बदलती रहीं, देश में स्वतंत्र प्रेस और आज़ाद न्यायपालिका भी काम करती रही । नागरिकों के समान अधिकारों की बातें भी होती रहीं, लेकिन इन सबके बावजूद आबादी के एक बड़े भाग को बहुत नीचे तक ले जाने का काम भी देश की सभी संस्थाएं इसी लोकतंत्र के अंतर्गत करती रहीं । हिन्दू राष्ट्र भी इससे अधिक और क्या करता ।

अब प्रश्न यह है कि इस बेकार लोकतंत्र का इलाज क्या हो ? जनलोकपाल से निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर कुछ लगाम लगेगी, लेकिन निचले स्तर पर रिश्वतख़ोरी जिस प्रकार सरकारी कर्मचारियों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है, कुछ दिनों बाद लोकपाल भी उपयोगी नहीं रह जाएगा । वह समाज को अल्लाह के डर और उसके सामने जवाबदेही और उसकी पकड़ की कल्पना से बेगाना है, अपने अन्दर जवाबदेही का एहसास कैसे ला सकेगा । इस देश के मुसलमानों में भी अल्लाह की पकड़ का एहसास ख़त्म होता जा रहा है ।

हमारे देशबंधु भी अपनी परंपरा को भुलाकर पश्चिम को ही अपना आदर्श मान लिया है । वही पश्चिम जिसने बहुत पहले अपनी आस्था को निजी जीवन तक सीमित कर लिया था और पूरी तरह धन की प्राप्ति और अन्य क़ौमों को दबोचने व लूटने का चलन अपना लिया था । लोकतंत्र को स्वस्थ बनाने के लिए जो इलाज ज़रूरी है उसकी ओर हमारा प्रबुद्ध वर्ग ध्यान नहीं दे रहा है और तरह-तरह की उल्टी-सीधी हरकतें की जा रही हैं । आवश्यकता है कि इस बीमार लोकतंत्र के इलाज की गंभीर कोशिशें की जाएं ।

स्वास्थ्य-सुविधाओं का सवाल

■ निरंकार सिंह

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के ज़रिए दस करोड़ परिवारों अर्थात लगभग पचास करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये तक इलाज कराने की सुविधा मिलेगी । राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत आने वाले हर परिवार का स्वास्थ्य बीमा होगा । उसे एक हेल्थ कार्ड मिलेगा । इस बीमे का प्रीमियम केंद्र एवं राज्य सरकार देगी । यह योजना 25 सितम्बर, 2018 से लागू होगी । इसकी घोषणा लाल क़िले से प्रधानमंत्री ने की है । इस इलाज की सुविधा सरकारी और कुछ चुने हुए निजी अस्पतालों में प्राप्त होगी । ग़रीबों के लिए यह योजना बहुत बड़ा सहारा बन सकती है । किसी भी समाज का आकलन लोगों को व्यापक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने की उसकी क्षमता से आंका जाता है । स्वास्थ्य सुविधा के तहत सिर्फ़ बीमारियों का इलाज ही नहीं किया जाता, बल्कि उसमें उसकी रोकथाम के लिए ज़रूरी क़दम उठाना भी शामिल है । स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति, साफ़-सफ़ाई और समुचित पोषण के अभाव में लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और वे जल्दी बीमार हो जाते हैं ।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों और कुछ सर्वे रिपोर्टों के अनुसार देश में आने वाले वर्षों में वे रोग तो फैलेंगे ही जो विकासशील देशों में फैले हैं । इनमें कुछ संक्रामक और प्रसरणशील हैं । लेकिन साथ ही, वे रोग भी फैलेंगे जो विकसित देशों में फैले हैं । कैंसर, मधुमेह (डायबिटीज), हृदय रोग या आनुवांशिक बीमारियों जैसे रोग अब असाध्य नहीं रह गये हैं । शायद अच्छी आदतों का विकास और लोगों को जागरूक करने के अलावा रोकथाम का कोई और उपाय नहीं है । क्षय रोग (टी०बी०), एड्स और डायरिया प्रमुख संक्रामक बीमारियां हैं जो भारत की उच्च मृत्यु दर का कारण है । पहले पोलियो सबसे बड़ी समस्या थी, लेकिन लगातार चलाए जा रहे सरकारी अभियानों की वजह से इस बीमारी पर नियंत्रण पा लिया गया है ।

विशेषज्ञों का कहना है कि क्षय रोग के कारण मरने



वाले लोगों के बारे में जो जानकारी हमारे पास है, वह अतिन्यून है । इस तथ्य के बावजूद कि इस रोग के बारे में बहुत अधिक अध्ययन किये जा चुके हैं, उसके बारे में आंकड़ों और जानकारियों को विकसित करने की आवश्यकता है । क्षय रोग का निदान छाती की जांच द्वारा की जाती है । इसके लिए रोगी के थूक और बलगम के 'एसिड-फास्ट' जीवाणु की पहचान के लिए 'स्पूट्रम माइक्रोस्कोपी' की जाती है । यह जांच निर्धारित अस्पतालों व संस्थाओं द्वारा ही की जाती है ।

निदान करने वाले 'एंडोस्कोपी' और 'ब्रॉकोग्राफ़' उपकरण सिर्फ़ विशेष अस्पतालों में उपलब्ध होते हैं । क्षय रोग के निदान व इलाज के लिए भविष्य में उपकरणों, उपायों व प्रक्रियाओं की आवश्यकता होगी । इसके लिए इस रोग के निदान और इलाज के लिए काम आने वाले 'एलिसा किट' के विकास में पूंजी लगाने और शोध व विकास की आवश्यकता है । पर एड्स जैसी जानलेवा बीमारी पर सामने से हमला करने की ज़रूरत है । सौभाग्य से इस बीमारी के बारे में, क्षय रोग की अपेक्षा आम लोगों में ज़्यादा जागरूकता है । अभी तक, एच०आई०वी० के संक्रमण के ख़िलाफ़ किसी टीके की खोज नहीं हो पायी है, हालांकि इस दिशा में नैदानिक परीक्षण किये जा चुके हैं । अभी तक, 'ए०जेड०टी०'

नाम की अकेली दवा 'एच॰आई॰वी॰' को रोकने के प्रयोग में आ रही है । लेकिन अगले बारह से सोलह महीनों के बाद 'वायरल म्यूटेशंस' दवा का प्रतिरोध करने लगते हैं । ऐसा तब होता है, जब 'ए॰जेड॰टी॰' का इस्तेमाल दूसरी दवाओं के साथ कराया जाता है ।

देश में एड्स की महामारी तेज़ी से बढ़ी है । इसे रोकने के लिए भारत के पास जो विकल्प मौजूद है, वह यह कि हम इसके लिए रोग-निरोधी उपाय अपनाएं । इसके लिए हमें सर्वाधिक जोखिम वाले रोगियों की पहचान करनी होगी। ऐसा संदिग्ध व्यक्तियों की जांच करके और ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को 'एड्स' के जानलेवा ख़तरों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करके किया जा सकता है ।

अपनी पारंपरिक चिकित्सा विधियों में इस रोग से बचने और रोग ग्रस्त हो जाने पर अपनी प्राण रक्षा के उपायों की जानकारी प्राप्त करके, समुचित शोध करना होगा । भारत के लोग जिस अन्य महारोग से तिहाई से ज़्यादा मरते हैं वह है- जठरांत्र संबंधी गड़बड़ियां (गेस्ट्रो-एंट्राइटिस)। इस महारोग को समूल नष्ट किया जा सकता है, लोगों के लिए अच्छा, शुद्ध, पीने का पानी और उनके रहने और काम करने के स्थानों को साफ़-सुथरा और प्रदूषण रहित बनाकर । इन उपायों के अलावा, इस महारोग के हो जाने पर उसे दूर करने के लिए सरल, सुरक्षित और कम ख़र्च वाली निदान विधि की खोज करनी होगी ।

असंक्रामक रोगों को प्राय: 'विकसित देशों के रोग' या उत्तर-संक्रामी रोग कहा जाता है । चूंकि ये रोग इन देशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए उनके बारे में काफ़ी जानकारी उपलब्ध है । नगरीकरण और बदली हुई जीवन शैली कुछ लोगों के लिए हृदय रोगों और उससे संबंधित रोगों का कारण बन जाते हैं या उन पर इन रोगों से ग्रस्त होने का ख़तरा बना रहता है ।

हृदय रोगों के बारे में माना जाता है कि वे आगामी कई वर्षों तक सबका ध्यान खींचते रहेंगे । असंक्रामक रोगों को एक नया साथी गठिया का रोग, जो मूलत: ग़रीबों का रोग है, भी मिल गया है । इन दोनों के साथ हृदय धमनी रोग (कॉरोनरी हार्ट डिजिज) और अतिरिक्त दाब (हाइपर टेंशन) जैसे रोग भी शामिल हैं ।

भारत में प्रतिवर्ष लगभग पैंतीस लाख मौतें हृदय रोगों से होती हैं । एक अन्य रोग, मधुमेह भी चिंता का विषय है । देश की आबादी का पांच से दस प्रतिशत मधुमेह रोग से पीड़ित है । इसके रोकथाम के उपायों में है आनुवांशिकी दोषों पर नियंत्रण पाना और आहार व पोषण संबंधी तथा जीवन शैली में समुचित परिवर्तन के परामर्शों को प्राप्त कर, उनके अनुरूप परिवर्तन करना । रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को जानने-पहचानने की युक्तियों और निदानात्मक उपकरण, औजार आदि भी इस रोग को क़ाबू में रखने में काफ़ी मददगार हो सकते हैं । इसके लिए 2020 में इंसुलिन की आवश्यकता का अनुमान क़रीब ढाई सौ अरब यूनिट प्रतिवर्ष लगाया गया है ।

कैंसर एक ऐसा रोग है जिसके बारे में विशेष ध्यान दिये जाने की ज़रूरत है । भारत में कैंसर की घटनाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि तंबाकू का प्रयोग चालीस प्रतिशत पुरुष रोगियों और बीस प्रतिशत महिलाओं के कैंसर के लिए सीधा ज़िम्मेदार है । इनमें से कैंसर के अधिकांश मामले प्रकाश में तब आते हैं, जब रोग बहुत पुराना हो जाता है । प्रारंभिक चरण में ऐसे मामले बहुत कम प्रकाश में आते हैं । कैंसर के कारण होने वाली मौतों में लगातार वृद्धि का यही कारण है । दक्षिण भारत में आमाशय के कैंसर की घटनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती हैं, जबकि उत्तर भारत में पित्ताशय के कैंसर की घटनाएं अधिक देखने-सुनने में आती हैं । कैंसर के निदान हेतु विज्ञान और महामारी विज्ञान के विवेचन से यह निष्कर्ष तो निकाला ही जा सकता है कि भारत में इस रोग का विस्तृत अध्ययन अत्यावश्यक है ।

कैंसर की आधारभूत सूचनाओं को एकत्रित करके ज्ञात हो सकता है कि देश के किस भाग में किस रूप का कैंसर पाया जाता है । बाद में उसके आधार पर देश के उन विभिन्न इलाक़ों के बारे में प्राप्त जानकारी के आधार पर वहां के जोखिम वाले व्यक्तियों की पहचान की जा सकती है और उन्हें कैंसर से होने वाले ख़तरों के प्रति सावधान किया जा सकता है । प्रभावशाली निदान और रोग निवारक सुविधाओं की देश भर के कैंसर रोगियों के लिए आवश्यकता है ।

मिसाल के तौर पर कैंसर की निदानात्मक सेवाओं के लिए एंडोस्कोपों का प्रयोग आवश्यक है । वे सिर्फ़ विशिष्ट संस्थानों में उपलब्ध हैं । इस दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए, ताकि रोगियों को सस्ते उपचार की सुविधा मिल सके । हमें कम ख़र्च वाले उपचार यंत्रों, औषधियों और टीकों की खोज करते रहने की ज़रूरत है जिससे स्वास्थ्य सुविधा सबके लिए उपलब्ध हो सके ।

आंखों से आंसू आना भी लाभप्रद

■ डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव

केवल हंसना ही नहीं, बल्कि अनेक स्थितियों में रोना भी मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी और आरामदायक माना गया है । मिनीसोटा स्थित सेंट पॉल रामसे मेडिकल सेंटर के बायोकेमिस्टों तथा चिकित्सा वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगसिद्ध अध्ययन के आधार पर रोने के अनेक फ़ायदों की खोज की है । उनके कथनानुसार मानव जीवन में सामान्यत: तीन प्रमुख कारणों से आंख से आंसू निकलते हैं ।

पहला भावनात्मक उद्वेग के कारण नयनों से आंसू निकलते हैं । दूसरा बैक्टीरियल अटैक से बचाव के लिए आंखों से अपने आप आंसू निकलने लगता है तथा तीसरा तिनका या कुटकी जैसी किसी बाह्य वस्तु के आंख में चली जाने की प्रतिक्रियास्वरूप नेत्रों से आंसू निकलने लगते हैं । आंख में आंसू आने पर होने वाले मनोदैहिक लाभों के संबंध में प्रस्तुत है जानकारी की कुछ बातें ।

आंसुओं में लोसोंजोम नामक तत्व पाया जाता है जो बाहरी बैक्टीरिया को समाप्त करने में 90 से 95 प्रतिशत तक सफल होता है तथा इस प्रकार हमारा नेत्र सुरक्षित रहता है । आंखों के मेमब्रेन के शुष्क हो जाने पर नेत्र दृष्टि कमज़ोर हो जाती है । आंसू इसे सूखने नहीं देते जिससे हमारी आंखों की रोशनी सदैव बनी रहती है । बाह्य हानिकारक केमिकल से सुरक्षा में भी आंसू हमारे सहायक होते हैं ।

इसीलिए कच्चे प्याज से निकलने वाले केमिकल अथवा धूल कण के संपर्क में आने पर नेत्र पलकों से अश्रुपात होने लगता है जिससे हमारी आंखें सुरक्षित तथा नीरोग रहती हैं । तनावपूर्ण अवस्था में रो लेने से आंखों से आंसुओं के साथ एड्रेनोकार्टिकोट्रोयिक और ल्यूसीन एनासिफलिन नामक हार्मोंस निकलते हैं जिससे तनाव का शिथिलीकरण होने से मन हलकापन महसूस करता है । इसी प्रकार भावनात्मक कारणों से निकलने वाले आंसुओं में एल्बुमिन प्रोटीन की मात्रा 24 प्रतिशत अधिक पायी जाती है जिससे मेटाबोलिज़्म प्रभावित होता है तथा यह स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी भी है ।

अधिक परेशानी के दौरान दुख तथा मुसीबत की परिस्थिति में रो लेने से दिलो-दिमाग़ और लिम्बिक सिस्टम का काम स्मूथ हो जाता है जिससे आराम का अनुभव होता है । मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ग़म में रो लेने से आंसुओं के माध्यम से मानसिक तनाव तथा भारीपन दिल से निकल जाता है जिससे मन हलकापन तथा आराम महसूस करता है ।

रोचक जानकारियां

1. दुनिया में 11 प्रतिशत लोग बाएं हाथ का इस्तेमाल करते हैं ।
2. अगस्त में सबसे ज़्यादा लोग पैदा होते हैं ।
3. खाने का स्वाद उसमें सलाइवा (लार) मिलने के बाद ही आता है ।
4. औसतन लोग बिस्तर में जाने के 7 मिनिट में सो जाते हैं ।
5. भालू के 42 दांत होते हैं ।
6. शुतुरमुर्ग़ की आंख उसके दिमाग़ से बड़ी होती है ।
7. नींबू में स्ट्राबेरी के मुक़ाबले अधिक शक्कर होती है ।
8. आठ प्रतिशत लोगों में एक आंतरिक्त पसली होती है ।
9. दुनिया के 85 प्रतिशत पौधे समुद्र के अंदर होते हैं ।
10. हवायन अल्फाबेट सिर्फ़ 13 होते हैं ।
11. मिक्की माउस का इटली में नाम टोपोलिनो है ।
12. एक केकड़े का ख़ून रंगहीन होता है । ऑक्सीजन मिलने के बाद यह नीला हो जाता है ।
13. पक्षियों को निगलने के लिए ग्रेविटी की ज़रूरत होती है ।
14. अंग्रेज़ी अल्फाबेट का सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला लेटर E है ।
15. विश्व की दो सबसे अधिक कामन इस्तेमाल होने वाली भाषाएं मैंड्रियन चायनीज, स्पैनिश और अंग्रेज़ी है ।
16. बिल्ली के हर कान में 32 मसल्स होते हैं ।
17. पर्थ ऑस्ट्रेलिया का ऐसा शहर है जहां सबसे तेज़ हवा बहती है ।

18. इन्सान की सबसे छोटी हड्डी कान में होती है ।
19. बिल्लियां अपनी ज़िन्दगी का 66 प्रतिशत हिस्सा सोते हुए गुज़ारती हैं ।
20. स्विट्ज़रलैंड में दुनिया में सबसे अधिक चाकलेट खाई जाती है । यहां हर व्यक्ति एक साल में 10 किलो के औसत से चाकलेट खाता है ।
21. पैसा ऐसी पहले नम्बर की चीज़ है जिसके बारे में जोड़े सबसे अधिक बहस करते हैं ।
22. जब आसमान की बिजली गिरती है तब तापमान 30,000 डिग्री तक हो सकता है ।
23. हर बार जब भी आप पूरा चांद देखते हैं हर बार इसकी एक ही साइड ही दिखती है ।
24. शहद अकेला ऐसा प्राकृतिक पदार्थ है जो कभी ख़राब नहीं होता ।
25. आस्ट्रेलिया अकेला ऐसा महाद्वीप है जहां कोई भी एक्टिव ज्वालामुखी नहीं है ।
26. दुनिया की सबसे लंबी स्ट्रीट टोरंटो की योंगे स्ट्रीट है। कनाडा स्थित यह स्ट्रीट 1,896 किमी लंबी है ।
27. कोकाकोला में शुरुआत में कोकीन मिला होता था ।
28. सभी कीड़ों की 6 टांगे होती हैं ।
29. जिराफ़ अपनी 21 इंच लंबी जीभ से कान साफ़ करता है ।
30. ऑस्ट्रेलिया को शुरुआत में न्यूहोलेंड के नाम से जाना जाता था ।
31. एक दिन में आप इतनी बार पलके झपकाते हैं कि वह आधे घंटे की आंखें बंद होने के बराबर होता है ।
32. आपके पैर के पंजे में 26 हड्डियां हैं ।
33. औसतन इन्सान के दिमाग़ में 78 प्रतिशत पानी होता है।
34. अगर 1 से लेकर 100 तक संख्याओं को लगातार जोड़ा जाए तो जोड़ 5020 होता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।



With Best Compliment From

Sermad Traders

Agriculture Input Dealer

B.H. Road, Tarikere, Chikkamagalore Distric



जिसको अल्लाह हिदायत देने का
फ़ैसला करता है, उसके सीने को
इस्लाम के लिए खोल देता है।
(मिश्कात)



Posted on 20-21 January 2019
February 2019
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.01.2019
Total pages 52 with Cover

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

RASHTRIYA TECHNICAL INSTITUTE
MANGO, JAMSHEDPUR

RASHTRIYA TECHNICAL INSTITUTE

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED INSTITUT

ملک اور بیرون ملک میں نوکری اور تعلیم کے لئے

E-mail:rtijsr@gmail.com



JCB.Operator



Mobile Crane



Auto Cad Draftsman



Councelling



Pipe Fitters



NDT Level.11



Speciality



SPECIALITY

.1-We have divided our course into three parts, theoretical, practical, and then knowledge sharing par
.2-The student can avail the benefit of different fee structure.
.3-The lab of the different courses is well equipped with the latest equipments.
.4-Regular / Alternate Classes 100% Theory and Practical classes.
.5-There is a provision of Plant Visit and on site job practical.Preparation to face interview.
.6-Teaching language and note (Hindi/English) Well-researched course material for all the courses.
.7-Hostel facility.
.8-Optional classes for the support of all category of trade.
.9-Special attention for non-matric student.

- Are 6G Welding
- Tig (Argon) 6G Welding
- Store Keeper
- Material Management
- Civil Fore man
- Plant Air Condition
- Piping QC
- English Spoken

Near Hanuman Mandir,Opp. Gandhi Maidan, Azadnagar,Jamshedpu
Jharkhand, Phone:0652-2364067,9334858068,9334617411,www.rtijsr.com